THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 297 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) पौष शु.3/4 2080 रविवार, 14 जनवरी-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये

'श्री सोनल माता का जीवन जनकल्याण के लिए समर्पित रहा'

जन्म शताब्दी पर बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। आई श्री सोनल मां की जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने वीडियो संदेश जारी कर उन्हें याद किया। वीडियो संदेश में पीएम मोदी ने कहा कि श्री सोनल मां का जीवन जनकल्याण, देश सेवा और धर्म के लिए समर्पित रहा। जूनागढ़ में लोगों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि सोनल मां का पूरा जीवन जनकल्याण, देश सेवा और धर्म के लिए समर्पित रहा। उन्होंने कई महान लोगों जैसे भगत बापू, विनोबा भावे, रविशंकर महाराज, कानभाई लाहरी, कल्याण शेठ के साथ काम किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आई श्री सोनल मां की जन्म शताब्दी पौष के पवित्र महीने में पड़ रही है और यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं इस पवित्र कार्यक्रम से जुड़ा। प्रधानमंत्री ने पूरे चारण समाज को इस अवसर पर बधाई दी और कहा कि मढड़ा धाम चारण समाज के लिए शक्ति, परंपराओं और विधान का केंद्र है। मैं श्री सोनल मां के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। पीएम ने कहा, चारण समाज के विद्वानों के बीच उनका एक विशेष स्थान हुआ करता था। उन्होंने कितने ही युवाओं को दिशा दिखाकर उनका जीवन बदला। उन्होंने समाज में शिक्षा के प्रसार के लिए अद्भुत काम किया।

सोनल मां ने व्यसन और नशे के अंधकार से समाज को निकालकर नई रोशनी दी। कच्छ के वोवार गांव से उन्होंने बहुत बड़ा प्रतिज्ञा अभियान शुरू किया था। पशुधन के प्रति भी उनका उतना ही बल था। पशुधन की रक्षा करने पर वह हर क्षेत्र में हर समय आग्रह करती थीं। >14

भारत-चीन संबंध सामान्य नहीं : जयशंकर

नागपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। विदेश मंत्री डॉ.एस जयशंकर ने महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में दावा किया कि दुनिया में कोई भी बड़ा मुद्दा भारत के साथ परामर्श के बिना तय नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि अब हम बदल गए हैं और हमारे प्रति दुनिया का नजरिया भी बदल गया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) से जुड़े बिंदु पर विदेश मंत्री ने कहा, संयुक्त राष्ट्र की इस इकाई में भारत की जरूरत पूरी दुनिया महसूस कर रही है।

जयशंकर ने भारत और चीन के संबंधों पर भी जवाब दिया। नौवीं कक्षा के बच्चे भार्गव देशपांडे के सवाल पर कहा, उन्होंने अपने चीनी समकक्ष को समझाया है कि जब तक आप सीमा से जुड़े मुद्दे का कोई समाधान नहीं निकाल लेते, अगर सेनाएं आमने-सामने रहेंगी और तनाव रहेगा, तो आपको यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि बाकी रिश्ते, मसलन बिजनेस और दूसरी चीजें सामान्य तरीके से चलेंगी। उन्होंने गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प का भी जिक्र किया। विदेश मंत्री ने कहा कि पिछले तीन साल से दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं हैं। तनाव बना हुआ है। इस बात को स्वीकार करने में उन्हे कोई हिचक नहीं है। उन्होंने कहा कि दोनों देश इस बात को जानते हैं कि सीमावर्ती इलाकों में शांति और सामान्य हालात बनाए रखने में पड़ोसी देश की भूमिका अहम होती है। उन्होंने कहा कि सालों से बेहद स्पष्ट समझौतों का पालन किया जाता रहा है। हालांकि, 1962 के युद्ध के बाद कई वर्षों तक तनाव बना रहा।

खड़गे को इंडिया का चेयरपर्सन बनाया गया

> अभी आधिकारिक घोषणा बाकी

> पवार बोले-संयोजक की जरूरत नहीं

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। विपक्षी गठबंधन इंडिया की वर्चुअल बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को चेयरपर्सन बनाया गया है। अभी आधिकारिक घोषणा बाकी है। वहीं संयोजक की नियुक्ति न करने पर सहमति बनी है।

मीटिंग खत्म करने के बाद पुणे में शरद पवार ने कहा, इंडिया ब्लॉक के सदस्यों के बीच संयोजक की नियुक्ति को लेकर कोई विवाद नहीं है। मीटिंग में नीतीश कुमार का नाम संयोजक के लिए सुझाया गया था। बाद में सहमति बनी कि, पार्टी प्रमुखों की एक टीम बनाई जानी चाहिए। संयोजक नियुक्त करने की जरूरत नहीं है। सूत्रों के मुताबिक, नीतीश कुमार को संयोजक बनाने का प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन बिहार के सीएम ने मना कर दिया।

इसकी पुष्टि बिहार के मंत्री संजय झा ने भी की। करीब दो घंटे तक चली इस बैठक में सीटों के बंटवारे पर भी चर्चा हुई। लोकसभा चुनाव को लेकर पवार ने कहा, गठबंधन को वोट मांगने के लिए किसी एक चेहरे को पेश करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि नेता कोई भी हो सकता है। यह इलेक्शन रिजल्ट घोषित होने के बाद चुना जाएगा। 28 दलों के इस गठबंधन में सिर्फ 9 पार्टियां ही वर्चुअल बैठक में शामिल हुईं। मीटिंग में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, लालू यादव और तेजस्वी यादव (आरजेडी), बिहार के सीएम नीतीश कुमार (जेडीयू), दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (आप), उमर अब्दुल्ला (नेशनल कॉन्फ्रेंस), सीताराम येचुरी (सीपीआई-एम), डी राजा (सीपीआई), शरद पवार (एनसीपी-शरद पवार) और डीएमके की तरफ से तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन जुड़े। >14

जयराम रमेश : क्यों चीन, भारतीय सेना को लद्दाख में 2000 वर्ग किमी क्षेत्र में जाने से रोक रहा है?

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव एवं संसद सदस्य जयराम रमेश ने लद्दाख में भारत और चीन सीमा पर तनाव को लेकर 13 जनवरी को एक महत्वपूर्ण बयान दिया है। उन्होंने कहा, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे 11 जनवरी को अपनी वार्षिक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हमारा प्रयास 2020 के बीच से पहले जैसी स्थिति पर वापस जाने के लिए बातचीत (चीन के साथ) जारी रखने का है। बतौर जयराम, उनकी यह टिप्पणी याद दिलाती है कि घुसपैठ के लगभग चार साल बाद भी चीन के सैनिकों को लद्दाख में 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र तक जाने से रोक रहे हैं। उन्होंने कहा, राजौरी पुंछ में आतंकी गतिविधियों में बढ़ोतरी देखी गई है। सीमा पार से राजौरी पुंछ सेक्टर में आतंकवादी ढांचे को समर्थन जारी है। जयराम रमेश ने कहा, इससे साफ होता है कि सीमा पार से आतंकवाद का खतरा बरकरार है। नोटबंदी या जम्मू कश्मीर का राज्य का दर्जा खत्म कर आतंकवाद को खत्म करने का दावा, पूरी तरह से गलत साबित हुआ है। पांच अगस्त 2019 के बाद से जम्मू कश्मीर में हुए आतंकवादी हमलों में 160 से अधिक जवान मारे गए हैं।

सीईसी-ईसी की नियुक्ति वाले नए कानून पर रोक नहीं : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ ने मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और अन्य चुनाव आयुक्तों (ईसी) की नियुक्ति वाले नए कानूनों पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। हालांकि, पीठ ने एक्ट के प्रावधानों की वैधता की जांच करने पर सहमति जताई है।

सुप्रीम कोर्ट नए कानूनों को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था। ये याचिका कांग्रेस कार्यकर्ता जया ठाकुर ने दाखिल की थी। पीठ ने इन याचिकाओं पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा।

दरअसल, नए कानून के मुताबिक आयुक्तों की नियुक्ति तीन सदस्यों का पैनल करेगा। इसमें प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष का नेता और एक कैबिनेट मंत्री शामिल होंगे। इस बिल को राज्यसभा में पेश किए जाने के समय विपक्षी दलों ने आपत्ति जताई थी।

दिल्ली शराब घोटाले में केजरीवाल को चौथा समन

> ईडी ने 18 जनवरी को पूछताछ के लिए बुलाया

> आप बोली-ये गिरफ्तारी की साजिश

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। दिल्ली शराब घोटाले में ईडी ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को फिर से समन भेजा है। जांच एजेंसी ने उन्हें 18 जनवरी को पूछताछ के लिए बुलाया है। सीएम केजरीवाल को ईडी का यह चौथा समन भेजा है। इससे पहले उन्हें 3 जनवरी और पिछले साल 2 नवंबर और 21 दिसंबर को पूछताछ के लिए बुलाया था। तीनों बार केजरीवाल जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं हुए थे।

सीएम केजरीवाल की ओर से 3 जनवरी को ईडी से कहा गया था कि वे राज्यसभा चुनाव और गणतंत्र दिवस की तैयारियों में व्यस्त हैं। उनसे जो भी पूछना हो लिखित में भेज दें। इसके पहले 2 नवंबर को केजरीवाल ने ईडी के समन को गैरकानूनी और राजनीति से प्रेरित बताया था। 21 दिसंबर का समन मिलने के बाद केजरीवाल 10 दिन के विपश्यना के लिए पंजाब के होशियारपुर चले गए थे। आम आदमी पार्टी ने 3 जनवरी को कहा, हम ईडी की जांच में सहयोग करने के लिए तैयार हैं, लेकिन ईडी का समन गैरकानूनी है। ये केजरीवाल को गिरफ्तार करने की साजिश है, ताकि लोकसभा चुनाव में केजरीवाल प्रचार न कर सकें। कांग्रेस नेता उदित राज ने कहा, ईडी ने झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन के करीबियों के ठिकानों पर छापा मारा। छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल को चुनाव से पहले नोटिस भेजे थे और उन पर झूठे आरोप लगाए थे। >14

डब्ल्यूएचओ ने कोविड से खतरा बरकरार रहने की दी चेतावनी!

जिनेवा, 13 जनवरी (एजेंसियां)। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक वरिष्ठ विशेषज्ञ ने कहा कि कोविड-19 वायरस के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम वैश्विक स्तर पर बना हुआ है, यह वायरस सभी देशों में फैल रहा है।

महामारी रोकथाम के लिए जिम्मेदार डब्ल्यूएचओ की अंतरिम निदेशक मारिया वैन केरखोव ने एक विशेष ब्रीफिंग में जिनेवा में कहा कि अपशिष्ट जल विश्लेषण पर आधारित अनुमान के अनुसार, कोविड-19 का वास्तविक प्रसार रिपोर्ट किए गए मामलों की संख्या से दो से 19 गुना अधिक है। उन्होंने कई अंगों को प्रभावित करने वाली पोस्ट-कोविड स्थितियों (जिसे "लॉन्ग कोविड" भी कहा जाता है) के उद्भव के बारे में भी चिंता व्यक्त की। जबकि चरम के बाद से कोविड से संबंधित मौतों में भारी कमी आई है, फिर भी 50 देशों में प्रति माह लगभग 10 हजार मौतें हो रही हैं।

अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा में आने वाले विशिष्ट मेहमानों को उपहार में मिलेगी रामरज

अयोध्या, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या में नव निर्मित राम मंदिर में श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। 22 जनवरी को होने वाले कार्यक्रम के लिए राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से हजारों वीआईपी गेस्ट्स को इनवाइट किया गया है। इस ऐतिहासिक अवसर पर सभी आमंत्रित अतिथियों के स्वागत की भी तैयारी की गई है और समारोह में सम्मिलित होने वाले सभी मेहमानों को ट्रस्ट की ओर से उपहार भी दिए जाएंगे।

तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से सभी मेहमानों को 'रामरज' उपहार स्वरूप दी जाएगी। साथ ही उन्हें प्रसाद के रूप में देसी घी से बने विशेष मोतीचूर के लड्डू भी दिए जाएंगे। ट्रस्ट की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने वाले मेहमानों को मंदिर की बुनियाद की खुदाई में निकाली गई मिट्टी (रामरज) भेंट की जाएगी।

जानकारी के अनुसार राम मंदिर नींव की खुदाई के दौरान निकाली गई राम जन्मभूमि की मिट्टी को बक्सों में पैक किया जाएगा और 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों को भेंट किया जाएगा। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट से जुड़े एक सदस्य ने बताया कि कार्यक्रम के लिए यहां आने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जूट के थैले में पैक की गई राम मंदिर की 15 मीटर की तस्वीर भेंट की जाएगी।

ट्रस्ट के सदस्य ने बताया कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह में ट्रस्ट की ओर से देशभर से 11,000 से अधिक मेहमानों को आमंत्रित किया गया है। इन सभी लोगों को यादगार उपहार देने की व्यवस्था की जा रही है।

मुझे बहुत पीड़ा होती है जब कोई अज्ञानी इतिहास से अनभिज्ञ : उपराष्ट्रपति

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। भारत के उपराष्ट्रपति, जगदीप धनखड़ ने आज कहा कि मुझे बहुत पीड़ा होती है जब कोई अज्ञानी, इतिहास से अनभिज्ञ, हलफनामा दे देते हैं कि राम काल्पनिक है। जयपुर में आयोजित नेशनल इलेक्ट्रो होम्योपैथी सेमिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि राम और राम-राज्य का आदर्श भारत के संविधान में निहित है और संविधान के निर्माताओं ने इसको पराकाष्ठा पर रखा है। धनखड़ ने बताया कि हमारे संविधान में बीस से ज्यादा चित्र हैं, और उनमें मौलिक अधिकारों के ऊपर जो चित्र है उसमें राम-लक्ष्मण-सीता हैं। जो लोग भगवान राम का निरादर कर रहे हैं, वास्तव में वह हमारे संविधान निर्माताओं का अनादर कर रहे हैं, जिन्होंने बहुत सोच समझकर विवेकपूर्ण तरीके से प्रभु राम के उन चित्रों को वहां रखा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि समाज तभी स्वस्थ रहेगा जब समाज के सभी अंग एक साथ रहेंगे।

यूपी के साधुओं की पिटाई, टीएमसी पर आरोप

ममता की मंत्री बोलीं-इन पर बच्चे अगवा करने का आरोप, भाजपा ने कहा-ममता जी शर्म करो

कोलकाता, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया में तीन साधुओं की पिटाई का मामला सामने आया है। भीड़ ने उनकी गाड़ी में तोड़फोड़ की और उसे पलट दिया। तीनों साधु उत्तर प्रदेश के हैं और मकर संक्राति के लिए गंगासागर जा रहे थे।

घटना गुरुवार 11 जनवरी की बताई जा रही है। भाजपा ने हमले का आरोप तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के कार्यकर्ताओं पर लगाया है। पार्टी ने घटना का वीडियो शेयर करते हुए लिखा- क्या बंगाल में हिन्दू होना गुनाह है। ममता बनर्जी घटना पर चुप क्यों हैं? उन्हें शर्म आनी चाहिए। इसके लिए आप जिम्मेदार हैं। पश्चिम बंगाल की मंत्री ने कहा कि इन लोगों पर बच्चे अगवा करने का आरोप था। इसलिए लोगों ने पीटा।

पुरुलिया के एसपी अविजीत बनर्जी ने बताया कि तीन साधु किराए की एक बोलेरो से जा रहे थे। गौरांगडीह के पास तीन लड़कियां पास के काली मंदिर में पूजा करने के लिए जा रही थीं। साधुओं की गाड़ी इनके पास जाकर रुकी और उनसे कुछ पूछा। भाषा की वजह से कुछ गलतफहमी हुई और लड़कियों को लगा कि साधु उनका पीछा कर रहे हैं। वे वहां से चिल्लाते हुए भागीं।

बनर्जी ने आगे बताया- इसके बाद स्थानीय लोग साधुओं के पास पहुंचे और उन्हें पास के एक मंदिर ले गए। इस दौरान भीड़ ने उनसे पूछताछ की और मारपीट शुरू कर दी। कुछ लोगों ने उनकी गाड़ी में तोड़फोड़ की और उसे पलट दिया। पुलिस ने साधुओं को भीड़ से बचाया और उनकी शिकायत पर एफआईआर दर्ज की

है। 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

लोगों ने रोका, मारपीट की- पीड़ित साधु

एक साधु मधुर गोस्वामी ने कहा, 'हम लोग गंगासागर जा रहे थे। रास्ते में अचानक गाड़ी को रोका। लोगों ने हम लोगों के साथ धक्का-मुक्की और मारपीट की। गाड़ी में तोड़फोड़ भी की। 200 लोग थे या 300, हमें नहीं पता। हम तो बेहोश हो गए थे। पुलिस-प्रशासन हमें थाने लेकर आ गया। दो लड़कियां भी आई थीं। उन्होंने माफी मांगी। हमने उनसे कहा कि हमारे ही कोई पाप रहे होंगे, जो ये सजा मिली। हम लोग कुछ नहीं चाहते। गाड़ी में टूट-फूट हो गई है तो गंगासागर नहीं जाएंगे। हम लोग अब घर लौट जाएंगे।' साधु गोस्वामी के साथ पुरुलिया से भाजपा सांसद ज्योतिर्मय सिंह महतो भी थे।

टीएमसी बोली-भाजपा मामले को गलत तरीके से पेश कर रही है

पश्चिम बंगाल की मंत्री शशि पांजा ने कहा, भाजपा जरूरी सवालों के जवाब नहीं देती। इसके बजाय वे कुछ और पूछने लगते हैं। स्थानीय लोगों ने साधुओं को इसलिए पीटा, क्योंकि उन पर 3 लड़कियों को अगवा करने का आरोप था। स्थानीय लोगों ने लड़कियों को छुड़ाया। जांच जारी है, लेकिन पुरुलिया के भाजपा नेता घटना को गलत तरीके से पेश कर रहे हैं।

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने घटना को पालघर पार्ट-2 बताया

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने घटना को पालघर पार्ट-2 करार दिया। उन्होंने कहा कि टीएमसी के गुंडों ने साधुओं को बुरी तरह पीटा। पालघर की घटना महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के कार्यकाल में सामने आई थी।

ममता सरकार में शाहजहां जैसे आतंकी को सुरक्षा और साधुओं की पिटाई

भाजपा सोशल मीडिया सेल के अमित मालवीय ने कहा- पुरुलिया में पालघर जैसी लिंचिंग हुई है। साधु मकर संक्रांति पर्व के लिए गंगासागर जा रहे थे। अपराधियों ने उनके कपड़े फाड़े और पीटा। पीटने वाले सत्ताधारी टीएमसी से जुड़े हैं। ममता बनर्जी की सरकार में शाहजहां शेख जैसे आतंकी को सुरक्षा और साधुओं को पीटा जा रहा है। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं के साथ अत्याचार किए जा रहे हैं।

हिंसा के बीच सीएम बीरेन सिंह का फैसला

आईआरबी में भर्ती नए जवानों को सड़क मार्ग से नहीं भेजा जाएगा असम

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने भारतीय रिजर्व बटालियन (आईआरबी) में नए भर्ती जवानों को लेकर एक घोषणा की है। उन्होंने बताया कि आईआरबी में नए भर्ती जवानों के प्रशिक्षण के लिए सड़क मार्ग से असम भेजने की योजना रद्द कर दी गई है। फेसबुक पर पोस्ट करते हुए बीरेन सिंह ने कहा, '10वें और 11वें आईआरबी के नए भर्ती जवानों के प्रशिक्षण के लिए सड़क मार्ग के जरिए असम भेजने की योजना को फिलहाल रद्द किया गया है। जल्द ही कोई वैकल्पिक व्यवस्था की जाएगी।'

क्यों लिया गया फैसला

यह फैसला नए भर्ती जवानों के परिजनों द्वारा किए गए विरोध के बाद ही राज्य सरकार ने लिया है। परिजनों ने बताया कि कुकी आबादी वाले इलाके से यात्रा करने के दौरान नए भर्ती जवानों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। इसलिए उन्होंने पूर्वी इंफाल में प्रशिक्षण कराने की मांग की है। शुक्रवार को जवानों के परिजन मणिपुर के पंगेई के पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज के मुख्य द्वार के बाहर एकत्रित हुए। उन्होंने इस दौरान नए भर्तियों को प्रशिक्षण के लिए सड़क मार्ग से असम भेजने की योजना का विरोध किया।

'प्राण प्रतिष्ठा करने से पीएम मोदी को ही नुकसान होगा'

कोझिकोड, 13 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर ने अपने एक बयान में कहा है कि राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा खुद करने से पीएम मोदी को ही नुकसान होगा। दरअसल शंकराचार्यों की कथित नाराजगी को लेकर मणिशंकर अय्यर ने यह बात कही। मणिशंकर अय्यर केरल लिटरेचर फेस्टिवल के सातवें संस्करण में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने कहा कि मोदी द्वारा खुद राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने और धार्मिक अनुष्ठान करने पर चार शंकराचार्यों ने नाराजगी जताई है। मणिशंकर अय्यर ने कहा कि यह सब पीएम मोदी को ही नुकसान पहुंचाएगा। अधिकतर हिंदुओं ने कभी भी हिंदुत्व के लिए वोट नहीं किया है। यह हमारा चुनाव कराने का तरीका है जो बीते 10 सालों से हिंदुत्ववादी सत्ता में हैं।

गैंगस्टर की गर्लफ्रेंड रही मॉडल की लाश नहर में मिली

हरियाणा पुलिस ने टैटू से पहचाना, 11 दिन पहले गुरुग्राम के होटल में मर्डर हुआ था

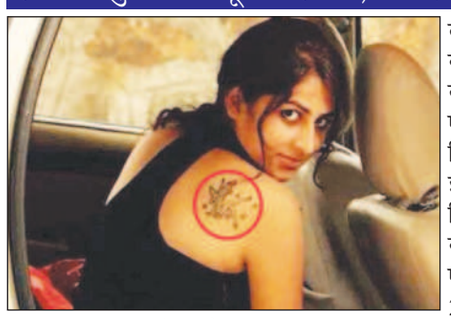

गुरुग्राम, 13 जनवरी (एजेंसियां)। हरियाणा के गैंगस्टर संदीप गाडौली की गर्लफ्रेंड रह चुकी मॉडल दिव्या पाहुजा की डेडबॉडी मर्डर के 12वें दिन मिली है। हरियाणा पुलिस ने फतेहाबाद के जाखल में भाखड़ा नहर से शव बरामद किया है। दिव्या की पहचान शरीर पर बने टैटू से की गई है। पुलिस ने बताया कि दिव्या की लाश को ठिकाने लगाने वाले बलराज गिल की को ल का ता एयरपोर्ट से गिरफ्तारी के बाद इसका सुराग मिला था। इसके बा द एनडीआरएफ की 25 टीमों की मदद से पटियाला से खनौरी तक लाश की तलाश की गई।

बॉडी मिलने के बाद पुलिस ने दिव्या के परिवार को फोटो भेजकर पहचान करवाई। गुरुग्राम के एसीपी क्राइम वरूण दहिया ने इसकी पुष्टि की।

गुरुग्राम के बलदेव नगर की रहने वाली दिव्या पाहुजा (27) की 2 जनवरी को होटल सिटी पॉइंट में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। हत्या होटल मालिक अभिजीत सिंह ने की थी। दिव्या उसके साथ 3 माह से लिव-इन-रिलेशन में थी। हत्याकांड से एक दिन पहले 1 जनवरी को अभिजीत सिंह, दिव्या पाहुजा और बलराज गिल तीनों होटल सिटी पॉइंट पहुंचे थे। होटल के रिस्पेशन पर लगे सीसीटीवी कैमरे में तीनों नजर आए थे। वारदात के बाद मुख्य आरोपी अभिजीत सिंह ने ही अपने दोस्त बलराज गिल और रवि बंगा को लाश को ठिकाने लगाने के लिए 10 लाख रुपए देकर अपनी बीएमडब्ल्यू कार में भेजा था। बलराज गिल ने कहा था कि उसने रवि बंगा के साथ दिव्या की लाश को पंजाब में पटियाला के पास भाखड़ा नहर में फेंका था।

महिला सीईओ ने बेंगलुरु-गोवा की एकतरफा एयर टिकट कराई थी

पुलिस बोली-खुद बताया बेटे की बॉडी सूटकेस में कैसे रखी; पति ने बयान दर्ज कराया

पणजी, 13 जनवरी (एजेंसियां)। बेंगलुरु की महिला सीईओ ने अपने चार साल के बेटे के मर्डर से जुड़ी कुछ बातें पुलिस के साथ शेयर की हैं। उसने खुद ही पुलिस को बताया कि गोवा के होटल के कमरे में उसका बेटा कहां सोया था, उसका सूटकेस कहां रखा था और उसने सूटकेस में अपने बेटे की लाश कैसे रखी थी। गोवा पुलिस के मुताबिक, सूचना सेठ के स्टेटमेंट के आधार पर शुक्रवार (12 जनवरी) को डेढ़ घंटे तक क्राइम सीन रिक्रिएट किया गया। पुलिस सूचना को होटल के उस कमरे में गई, जहां वह अपने बेटे के साथ ठहरी थी।

क्राइम सीन रिक्रिएशन के वक्त सूचना ने बताया कि कैसे उसने एक चाकू लेकर अपनी कलाई काटी और सुसाइड करने की कोशिश की। पुलिस ने बताया कि सूचना ने बेंगलुरु से गोवा के लिए एकतरफा फ्लाइट टिकट बुक

कराया था, क्योंकि शायद पहले से ही उसका इरादा सड़के के रास्ते वापस आने का था। वहीं, आज सूचना के पति वेंकट रमन अपना बयान दर्ज कराने के लिए अपने वकील के साथ कैलंगुट पुलिस स्टेशन पहुंचे हैं। बेटे के मर्डर के वक्त वे इंडोनेशिया में थे। पुलिस की तरफ से जानकारी मिलने के बाद 9 जनवरी को वे वापस पहुंचे और 10 जनवरी को बेंगलुरु में बेटे का अंतिम संस्कार किया। पुलिस को सूचना के बैग से टिश्यू पेपर पर लिखा एक नोट भी मिला है। इसमें लिखा है - मेरे बच्चे की कस्टडी को लेकर कोर्ट और मेरे हसबैंड दबाव बना रहे हैं। मेरा हसबैंड हिंसक है। मैं उसे एक दिन के लिए भी अपना बच्चा नहीं दे सकती। पुलिस ने बताया कि टिश्यू पेपर पर आईलाइनर या काजल पेंसिल से नोट लिखा गया है। सूचना ने नोट लिखकर उसे फाड़ दिया था। पुलिस ने टिश्यू पेपर के टुकड़े को जोड़कर उसमें लिखा मैसेज पढ़ा। पुलिस का मानना है कि यह एक सुसाइड नोट हो सकता है, क्योंकि सूचना ने बेटे की हत्या के बाद अपने हाथ की नस काटने की कोशिश की थी। पुलिस ने होटल के कमरे से चाकू, तौलिया, तकिया और एक लाल बैग जब्त किया है।

6 जनवरी को सूचना ने पति को मैसेज कर बेटे से मिलने को कहा था

सूचना अपने पति वेंकट रमन से अलग रह रही थी। दोनों के तलाक की प्रक्रिया चल रही थी। बच्चे की कस्टडी सूचना के पास थी और कोर्ट ने वेंकट को हर रविवार अपने बच्चे से मिलने की इजाजत दी थी। पुलिस की जांच में सामने आया है कि सूचना ने 6 जनवरी को अपने पति को मैसेज किया था कि वह अगले दिन बेटे से मिल सकता है। हालांकि 7 जनवरी को जब वह बेटे से मिलने पहुंचा तो पता चला कि मां-बेटे बेंगलुरु में नहीं हैं। इसके बाद वेंकट रमन उसी दिन इंडोनेशिया के लिए रवाना हो गया।

क्लासिकल सिंगर प्रभा अत्रे का निधन

दिल का दौरा पड़ने से 92 साल की सिंगर की मौत

नई दिल्ली, 13 ज न व री (एजेंसियां)। मशहूर क्लासिकल सिंगर प्रभा अत्रे का 92 साल की उम्र में निधन हो गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्हें शनिवार सुबह पुणे में हार्ट अटैक आया। घरवाले तुरंत उन्हें दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल ले गए लेकिन रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया। कुछ दिनों बाद ही वो मुंबई में परफॉर्म करने वाली थीं, जिसकी सारी तैयारियां भी थीं,लेकिन इससे पहले ही उनका निधन हो गया।

कई बड़े सम्मानों और अवॉर्ड से नवाजी गई थीं प्रभा अत्रे

पुणे से ताल्लुक रखने वालीं सिंगर प्रभा अत्रे को 1990 में पद्मश्री से और 2002 में पद्मभूषण सम्मानित किया गया था, वहीं दो साल पहले 2022 में उन्हें पद्मविभूषण से भी सम्मानित किया गया है।

किराना घराने की सबसे सीनियर सिंगर थीं प्रभा

13 सितंबर 1932 को पुणे में जन्मीं प्रभा अत्रे किराना घराने से ताल्लुक रखती हैं। ये इस घराने की सबसे सीनियर सिंगर थीं। प्रभा अत्रे कई म्यूजिक जॉनर ख्याल, ठुमरी, दादरा, गजल, गीत, नाट्यसंगीत और भजन में महारत हासिल थी। अपूर्वा कल्याण, दादरी कौंस, पटदीप मल्हार, तिलंग भैरवी, रवि भैरवी और मधुर कौन जैसे कई राग को उन्होंने ही बनाया है। म्यूजिक कंपोजिशन पर लिखी गईं उनकी तीन बुक स्वरागिनी, स्वरारांगी और स्वरंजनी काफी पॉपुलर हैं। अल्का जोगलेकर, चेतन बनावत जैसे कई सिंगर इनके शिष्य रह चुके हैं। प्रभा अत्रे ऑल इंडिया रेडियो की फॉर्मर असिस्टेंड प्रोड्यूसर और ए-ग्रेड ड्रामा आर्टिस्ट भी रह चुकी हैं।

हिमाचल में लड़कियों की शादी की उम्र 21 साल होगी

सुक्खू कैबिनेट की मंजूरी, 3 साल बढ़ाने के लिए केंद्र से सिफारिश करेगी सरकार

शिमला, 13 जनवरी (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश में लड़कियों की शादी की उम्र 18 से 21 साल करने की तैयारी है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई कैबिनेट मीटिंग में सरकार ने लड़कियों की शादी की उम्र 3 साल बढ़ाने के लिए संबंधित नियमों और अधिनियम में संशोधन की सहमति दी। सोशल जस्टिस एंड एम्पावरमेंट सेक्रेटरी एम सुधा देवी ने बताया कि कैबिनेट की मंजूरी मिल गई है। अब राज्य सरकार केंद्र को अपने सुझाव देगी। इसमें लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाने की सिफारिश की जाएगी

लड़कियों को मिलेंगे आगे बढ़ने के अवसर

सोशल जस्टिस मिनिस्टर धनीराम शांडिल ने बताया कि शादी की उम्र बढ़ने से लड़कियों को जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। अभी कुछ लोग लड़कियों की छोटी उम्र में शादी कर देते है। इससे बच्चियां पढ़ाई नहीं कर पाती और जीवन में आगे नहीं बढ़ पाती। राज्य सरकार ने उनके सर्वांगीण विकास के लिए शादी की उम्र बढ़ाने को अपनी कंसेंट दी है।

केंद्र सरकार लोकसभा में विधेयक पेश कर चुकी

वहीं केंद्र सरकार भी लड़कियों की शादी की न्यूनतम आयु 18 से

बढ़ाकर 21 साल करने का निर्णय ले चुकी है। इसे लेकर दिसंबर 2021 में लोकसभा में विधेयक पेश किया जा चुका है। अभी यह संसदीय समिति के सामने विचाराधीन है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से 15 अगस्त 2020 को बेटियों की शादी की उम्र 21 साल करने की बात कही थी।

केंद्रीय कैबिनेट प्रस्ताव को दे चुका मंजूरी

केंद्रीय कैबिनेट से भी लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिल चुकी है।

सरकार चाहती है कि शादी की उम्र बढ़ाकर उन्हें कुपोषण से बचाया जाए, क्योंकि जल्दी शादी के कारण मां बनने से उनके स्वास्थ्य पर कई बार बुरा असर पड़ता है। जल्दी शादी के कारण कई महिलाएं अपने करियर में भी आगे नहीं बढ़ पाती है।

एक्ट में अभी शादी की उम्र 18 साल

भारत में अभी लड़कों की शादी की उम्र 21 साल है, जबकि लड़कियों की 18 वर्ष है। इससे पहले हिंदू मैरिज एक्ट 1955 में विवाह की उम्र लड़कों के लिए 18 साल और लड़कियों के लिए 15 साल थी। साल 1978 में लड़कियों की शादी की उम्र 18 साल और लड़कों की 21 साल की गई। अब लड़कियों की उम्र बढ़ाकर 21 साल करने की तैयारी है।

रोचक खबरें

दुनिया का सबसे रहस्यमयी टैंक

अजीबोगरीब डिजाइन देखकर चौंक जाएंगे आप कोई नहीं जानता किससे है बना!

दुनिया का सबसे रहस्यमयी टैंक है. यह बॉल टैंक का एकमात्र ज्ञात उदाहरण है, जो अभी भी अस्तित्व में है. ऐसा माना जाता है कि कुगेलपेंजर को जर्मनी में नाजियों ने बनाया था, जिसकी डिजाइन बहुत ही अजीबोगरीब है, जिसे देख कर आप चौंक जाएंगे. हालांकि, इतने सालों के बाद भी यह कोई नहीं जानता है कि ये गोलाकार टैंक किस चीज से बना हुआ है. रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में ये टैंक मॉक्सो ओब्लास्ट के कुबिन्का में कुबिन्का टैंक म्यूजियम में रखा हुआ है. 1945 में हिरोशिमा पर परमाणु बमबारी के बाद सोवियत संघ ने मंचूरिया पर आक्रमण किया, तो रेड आर्मी ने जापानियों के कब्जे से इस अजीब वाहन को बरामद किया था. यह गोलाकार ड्रम के आकार का एक छोटा बख्तरबंद वाहन था, जिसमें केवल एक व्यक्ति के बैठने के लिए पर्याप्त जगह थी.

जापानियों के पास कैसे पहुंचा?

नाजियों द्वारा टैंक को बनाए जाने के कुछ समय बाद, उन्होंने जर्मनी की प्रौघोगिकी साझाकरण योजना के तहत इसे जापान को सौंप दिया था. जापानी सेना आक्रमण के दौरान इसे अपने साथ मंचूरिया ले गई और बाद में रूसियों ने इस पर कब्जा कर लिया. हालांकि, कुगेलपेंजर के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है, जिससे ये पता चल सके कि इसका इस्तेमाल किसलिए किया गया था. कुगेलपेंजर (बॉल टैंक) की डिजाइन बहुत ही अजीबोगरीब है. यह गोलाकार ड्रम के आकार का एक छोटा बख्तरबंद वाहन था, जिसमें केवल एक शख्स के बैठने के लिए पर्याप्त जगह थी. यह 1.5 मीटर लंबा है और वाहन की ऊंचाई के समान व्यास वाले विशाल रोलर्स पर चलता है. इसे अंदर से मोटरसाइकिल-शैली की गद्दी पर बैठे एक शख्स द्वारा ही ऑपरेट किया जाता था. वाहन के सामने एक छोटी आयताकार जगह छोड़ी गई है, जिसमें से अंदर बैठा शख्स बाहर देख सकता था और मशीन गन से फायर कर सकता था. वाहन का खोल केवल 5 मिलीमीटर मोटा है, जो केवल छोटे हथियारों की गोलियों से सुरक्षा प्रदान कर सकता है.

मिल गया 2000 साल पुराना प्राचीन शहर

'गायब' हो गए थे यहां के लोग, अब जाकर उठेगा रहस्य से पर्दा!

अ मे ज न रेनफॉरेस्ट में पहाड़ों के पास एक प्राचीन शहर को 2 हजार साल बाद खोजा गया है. यह रहस्यमय शहर एंडीज की तलहटी के नीचे उपानो घाटी की गहराई में दबा हुआ पाया गया है. यह स्थल कम से कम 10 हजार लोगों का घर था, जो बाद में रहस्यमय तरीके से 'गायब' हो गए थे. आखिर यहां के लोगों के साथ क्या हुआ था, अब जाकर इस रहस्य पर से पर्दा उठेगा, क्योंकि एक्सपर्ट्स इस जगह से जुड़े सभी सवालों का जवाब तलाशने में जुट गए हैं. ऐसे हुई इस शहर की खोजः द सन की रिपोर्ट के अनुसार, इक्वाडोर में पाई गई इस जगह पर कभी करीब 10 हजार लोग रहा करते थे. इस प्राचीन शहर में प्लेटफॉर्म, प्लाजा, सड़कें, खेत और नहरों की व्यवस्था थी. लेजर-सेंसर टेक्नोलॉजी ने एंडीज की तलहटी के नीचे सदियों से छिपे उपानो घाटी में मिट्टी के टीलों और दबी हुई सड़कों के नेटवर्क का खुलासा किया. कई सड़कें बिल्कुल सीधी थीं. लगभग 6,000 मिट्टी के टीलों पर रेजिडेंशियल और सेरेमोनियल स्ट्रक्चर्स बनाए गए, जो जल निकासी नालियों वाले कृषि क्षेत्रों से घिरी हुई थीं. सबसे चौड़ी सड़कें 33 फीट चौड़ी थीं और 6 से 12 मील तक लंबी थी. फ्रांस के नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च के शोध सह-लेखक और आर्कियोलॉजिस्ट एंटोनी डोरिसन के अनुसार, यह साइट कम से कम 10,000 लोगों का घर थी, और शायद 15,000 या 30,000 लोग भी रहे हों. उपानो लोग, जिनकी संख्या अनुमानित रूप से 30,000 है. 300 और 600 CE के बीच रहस्यमय तरीके से 'गायब' हो गए.

अजब प्रेम की गजब कहानी...एक महिला के 2 पति!

पत्नी की तलाश में पहुंचा हसबैंड तो खुली पोल, कहा- ये मेरी बीवी श शि कां त ओ झा / प ला मू . प्यार की कई कहानियां आपने बेशक सुनी और देखी होंगी, मगर एक ऐसी कहानी जो फिल्मों की तरह सामने आई है. झारखंड की राजधानी रांची से 165 किलोमीटर दूर पलामू जिला मुख्यालय मेदिनीनगर शहर के शहर थाना टाउन थाना एक अजीबो-गरीब मामला सामने आया है. जहां दो अलग-अलग लोग एक महिला का पति होने का दावा कर रहे हैं. एक पति पर दो पत्नियों के दावे वाली फिल्में आपने जरूर देखी होंगी. मगर यहां रियल लाइफ में ट्विस्ट तब आ गया जब दूसरा पति 1300 किलोमीटर से आ पहुंचा. पलामू जिले में एक पत्नी पर दो पतियों के दावा होने का मामला चर्चा का विषय बना हुआ है. जिसमें लड़की बिहार की रहने वाली है, मगर ससुराल झारखंड और हरियाणा है. ये मामला सामने तब आया जब हरियाणा से पति अपनी पत्नी की तलाश में पलामू पहुंचा.

दरअसल, हरियाणा में रहने वाले पति ने अपनी पत्नी की गुमशुदगी का मामला दर्ज करवाया था, वहीं बिहार के नवीनगर की रहने वाली युवती का प्रेम प्रसंग मेदिनीनगर के नावाटोली निवासी नेपाली से था. जिसके कुछ वर्ष बाद दोनों ने विवाह कर लिया. वहीं युवती शादी के कुछ महीने बाद हरियाणा चली गई. बाद में उसने महेंद्रगढ़ अंतर्गत निजामपुर थाना क्षेत्र निवासी सुरेंद्र से विवाह कर लिया. जिसके बाद उसके बच्चे भी हुए और वो अपने परिवार के साथ सकुशल जिंदगी गुजारने लगी. इस दौरान मेदिनीनगर निवासी नेपाली की मां की अचानक तबियत खराब हो गई. जिसे देखने वो हरियाणा से पलामू चली आई. अचानक गायब होने से सुरेंद्र ने हरियाणा में एफ आई आर दर्ज करवाई. बाद में सुरेंद्र स्वयं अपनी पत्नी को ढूंढते ढूंढते पलामू पहुंचा. यहां आते ही सुरेंद्र को उसकी पत्नी की पहली शादी के बारे में पता चला. जिसके बाद वो पत्नी को लेकर शहर थाना पहुंचा. जहां दोनों युवक अपनी पत्नी होने का दावा कर रहे हैं. वहीं लड़की ने बताया कि हरियाणा में उसे सुरेंद्र से प्यार हो गया और शादी कर ली.

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

रविवार, 14 जनवरी, 2024 3

सुविचार

जब विश्वास जुड़ता है तो पराये भी अपने हो जाते है और जब विश्वास टूटता है तब अपने भी पराये हो जाते है।

सरकार साल के अंत तक 5 लाख एकड़ नया अयाकट बनाएगी : उत्तम

मंत्री ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। सिंचाई और नागरिक आपूर्ति मंत्री कैप्टन एन उत्तम कुमार रेड्डी ने कहा कि तेलंगाना में कांग्रेस सरकार सिंचाई परियोजनाओं पर खर्च को अनुकूलित करने के लिए तैयार है, जिसका लक्ष्य साल के अंत तक लगभग 5 लाख एकड़ का नया अयाकट बनाना है। उत्तम कुमार रेड्डी ने शनिवार को जलसौधा में सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक के बाद मीडिया ब्रीफिंग के दौरान ये टिप्पणी की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि समीक्षा बैठक ने पिछली बीआरएस सरकार के दौरान महत्वपूर्ण फिजूलखर्ची और अनुत्पादक व्यय को उजागर किया। नतीजतन, उत्तम ने वर्तमान सरकार को सिंचाई के तहत नए अयाकट को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए इष्टतम व्यय को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि तेजी से नए अयाकट पैदा करने में सक्षम परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। हमने बैठक के दौरान परियोजनाओं और व्यय पर चर्चा की, उन परियोजनाओं की पहचान की जहां 6 महीने के भीतर और एक वर्ष के भीतर नए अयाकट तैयार किए जा सकते हैं। हमने छह महीने के भीतर इस लक्ष्य को प्राप्त करने वाली परियोजनाओं पर व्यय को अधिकतम करने के निर्णय के साथ नए अयाकट निर्माण के लिए समय सीमा को वर्गीकृत किया। एक वर्ष तक। इस कैलेंडर वर्ष के लिए हमारा लक्ष्य, दिसंबर 2024 तक, 4.5 से 5 लाख एकड़ तक फैले नए अयाकट बनाना है। मंत्री ने मेडीगड्डा बैराज दुर्घटना की सतर्कता जांच शुरू करने का उल्लेख किया और आश्वासन दिया कि जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा। उन्होंने मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी के तेलंगाना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को लिखे पत्र का भी खुलासा किया, जिसमें कालेश्वरम परियोजना की न्यायिक जांच के लिए एक मौजूदा न्यायाधीश की नियुक्ति का आग्रह किया गया था। जल अधिकार के मुद्दे को संबोधित करते हुए, सिंचाई मंत्री ने तेलंगाना के जल अधिकारों की रक्षा के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि की और पड़ोसी राज्यों और केंद्र सरकार के साथ सार्थक चर्चा के लिए खुलापन व्यक्त किया। हाल ही में, मुख्यमंत्री और मैंने केंद्रीय जल संसाधन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से मुलाकात की और पलामूरू रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना को राष्ट्रीय परियोजना का दर्जा देने की मांग की। हालांकि केंद्रीय मंत्री ने राष्ट्रीय परियोजना के दर्जे के लिए किसी विशिष्ट योजना की अनुपस्थिति को स्पष्ट किया, लेकिन उन्होंने इसके लिए वित्त पोषण का आश्वासन दिया। विभिन्न केंद्र सरकार की योजनाओं के तहत पलामुरू रंगारेड्डी, उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के आश्वासन के अनुसार परियोजना के वित्तपोषण के लिए इस सप्ताह केंद्र को एक प्रस्ताव भेजा जाएगा। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उत्तम कुमार रेड्डी ने अंबेडकर प्राणहिता चेवेल्ला परियोजना को कालेश्वरम परियोजना में बदलने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव की आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि मूल परियोजना ने कालेश्वरम की एक-चौथाई लागत पर 16 लाख एकड़ का नया अयाकट बनाया होगा और सिंचाई परियोजनाओं में केसीआर की कथित भूलों पर अफसोस जताया और कहा कि तेलंगाना के लोगों को पीढ़ियों तक प्रतिकूल परिणाम भुगतने होंगे

उन्होंने इष्टतम व्यय पर शीघ्रता से नए अयाकट बनाने की कांग्रेस सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उत्तम कुमार रेड्डी ने गर्मियों के दौरान तेलंगाना राज्य के सभी पानी के टैंकों से गाद निकालने की सरकार की योजना की भी घोषणा की। मौजूदा पानी की कमी के मद्देनजर, उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल आगामी पेयजल जरूरतों को पूरा करने के लिए 10 टीएमसी कृष्णा जल की तलाश में कर्नाटक का दौरा करेगा।

नगर में बढने लगी है गर्मी, मौसम हुआ विपरीत

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के निवासी इस साल अधिक गर्म मकर संक्रांति की तैयारी कर रहे हैं, जो आमतौर पर त्योहारी सीजन के साथ आने वाली ठंडे तापमान की वार्षिक परंपरा को तोड़ रहा है। जबकि त्योहार ऐतिहासिक रूप से अलाव और सर्दियों की ठंड का पर्याय रहा है, इस वर्ष का मौसम पूर्वानुमान एक विपरीत प्रस्तुत करता है।

मानक के विपरीत, पिछले कुछ दिनों में शहर में अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक देखा गया है और मौसम विज्ञानियों का अनुमान है कि आने वाले दिनों में भी यह प्रवृत्ति जारी रहने की संभावना है।

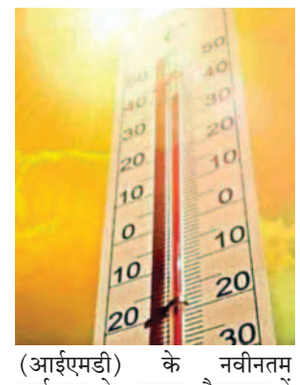

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के नवीनतम पूर्वानुमान के अनुसार, हैदराबाद में अगले पांच दिनों में औसत न्यूनतम तापमान लगभग 19 डिग्री सेल्सियस रहने की उम्मीद है, जबकि औसत अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से ऊपर हो सकता है। पूर्वानुमान सामान्य सर्दियों की ठंड से मुक्ति का संकेत देता है, मकर संक्रांति के उत्सव के दौरान केवल धुंध की भविष्यवाणी की गई है।

शनिवार को, हैदराबाद में औसत न्यूनतम तापमान 19.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य 16.2 डिग्री सेल्सियस से अधिक था। दिन भर उमस बनी रही और अधिकतम तापमान 30.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, साथ ही सापेक्षिक आर्द्रता 75 प्रतिशत रही। पड़ोसी जिलों में भी इसी तरह की स्थिति की आशंका है, जहां अगले पांच दिनों तक न्यूनतम और अधिकतम तापमान सामान्य स्तर से ऊपर रहने का अनुमान है।

एनसीसी कैडेटों ने राष्ट्रीय युवा दिवस 2024 मनाया

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। एपी और तेलंगाना निदेशालय के एनसीसी कैडेटों ने 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं को आत्मसात करने के संदेश के साथ, अवंती कॉलेज, भारतीय प्रबंधन और वाणिज्य संस्थान और 3 तेलंगाना एनसीसी बटालियन (हैदराबाद समूह) के सिस्टर निवेदिता स्कूल के कैडेटों ने राष्ट्रीय युवा दिवस 2024 को उत्साह और उमंग के साथ मनाया। स्वामीजी की ऊर्जा और आदर्शवाद ने पीढ़ियों को राष्ट्र की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित किया है।

एक युवा शक्ति होने के नाते, एनसीसी गंभीर सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सामुदायिक सहभागिता, स्वयंसेवा और सामाजिक सक्रियता के माध्यम से, संगठन देश में आशा का अग्रदूत साबित हो रहा है।

जमीनी स्तर पर चीजों को बेहतर बनाने के लिए कैडेट सक्रिय कार्यक्रमों में आक्रामक रूप से भाग ले रहे हैं। इस पवित्र दिन पर इसी संकल्प के साथ, कैडेटों ने 5 किलोमीटर की जागरूकता मार्च निकाला, जिसका समापन टैंक बंड में स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ।

शातिर चोर 24 घंटे के अंदर गिरफ्तार 18 लाख की संपत्ति बरामद

हैदराबाद , 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राचकोंडा की कुशाईगुडा पुलिस ने एक आदतन घर में चोरी करने वाले अपराधी को गिरफ्तार किया। यह सेंधमारी का गंभीर मामला है, जिसका 24 घंटे के अंदर पता चल गया। अपराध 11जनवरी को कुशाईगुड़ा पुलिस स्टेशन की सीमा के भीतर हुआ। कल बीती 12 को कुशाईगुड़ा पुलिस ने आरोपी को कुशाईगुड़ा बाजार के पीछे उसके घर के पास से पकड़ लिया। आरोपी के पास से 30 तोला सोने के आभूषणों की बरामदगी हुई। मामले को सुलझाने के लिए सभी पूर्व दोषियों, जेल से रिहा हुए व्यक्तियों, संदिग्धों की जांच और सीसीटीवी निगरानी और कुशाईगुड़ा अपराध दल के मेहनती प्रयासों के माध्यम से प्रयास किए गए। इससे 24 घंटे के भीतर मामले का पता चल गया और चोरी की गई पूरी संपत्ति बरामद हो गई। इस मामले की जानकारी देते सीपी राचकोंडा सुधीर बाबू ने बताया कि कुशाईगुडा का रहने वाला गिरफ्तार अभियुक्त कोंतम साई किरण रेड्डी उर्फ चिटू प्राइवेट नौकरी करता है। वज्ह प्रारंभ में नाचाराम पीएस की सीमा के अंतर्गत मल्लपुर में रहते था। बाद में वह कुशाईगुडा बाजार के पीछे बस गए। साईं किरण रेड्डी इंटरमीडिएट की शिक्षा पूरी की, माता-पिता की उपेक्षा के कारण उनमें धूम्रपान और शराब के सेवन सहित कई बुराइयाँ विकसित हो गईं।

इसके चलते उसने अपनी विलासितापूर्ण जीवनशैली का समर्थन करने के लिए चोरी की वारदातों को अंजाम दिया। वह पहले नाचराम, कीसरा, मेडिपल्ली, मल्काजगिरी और कुशाईगुडा में 2% घरों में चोरी में शामिल था। 2021 में, उसे कुशाईगुड़ा पुलिस ने चोरी के एक मामले में गिरफ्तार किया था और दो साल की सजा सुनाई गई थी। अपनी सजा की अवधि पूरी करने के बाद, उन्हें चेरलापल्ली सेंट्रल जेल से रिहा कर दिया गया और चेरलापल्ली जेल के पास औद्योगिक क्षेत्र में एक सी-टेप कंपनी में एक मजदूर के रूप में काम किया।

हालाँकि, इस नौकरी से होने वाली आय उसके भव्य खर्चों के लिए अपर्याप्त थी, जिसके कारण उसने फिर से चोरी करना शुरू कर दिया।आरोपी अक्सर दिन में शराब और ताड़ी का सेवन करते था और देर रात विभिन्न इलाकों में घूमते था।

उसने नवनिर्मित और अलग-थलग घरों को निशाना बनाया, खिड़कियों के माध्यम से तोड़कर कीमती सामान चुरा लेता था। सीपी ने बताया कि उसके पास से सोने के आभूषण (कुल 30 तोला), ड्यूक बाइक, रेडमी स्मार्टफोन, नोकिया कीपैड फोन मिला है। कुल बरामद संपत्ति का मूल्य 18,50,000 रुपए बताया जा रहा है।

दिल्ली से दिशा-निर्देश लेकर सरकार चला रहे हैं रेवंत : एनवीएसएस प्रभाकर

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना राज्य भाजपा के उपाध्यक्ष और पूर्व विधायक एनवीएसएस प्रभाकर ने आज आरोप लगाया कि कांग्रेस के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी स्वतंत्र रूप से काम करने में असमर्थ हैं, क्योंकि उन्हें राज्य में अपनी सरकार चलाने के लिए कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व से निर्देश लेने पड़ते हैं।

यहां प्रदेश भाजपा कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रभाकर ने कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद रेवंत रेड्डी एक महीने के भीतर छह बार दिल्ली का दौरा कर चुके हैं। रेड्डी की लगातार दिल्ली यात्रा पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि पहले पूर्व सीएम के.चंद्रशेखर राव ने अपने फार्महाउस से काम किया और सरकार चलाई, जबकि वर्तमान सीएम दिल्ली से निर्देशों के लिए निर्भर हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बिना उचित योजना के कांग्रेस पार्टी ने लोगों के लिए छह गारंटी योजनाओं की घोषणा की और तेलंगाना में सत्ता हासिल कर ली। प्रभाकर ने कहा कि पहले महीने में ही रेवेंथ रेड्डी सरकार राज्य चलाने के लिए 15000 करोड़ रुपये का ऋण लेने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि नए राशन कार्ड और गारंटी योजनाओं के नाम पर सरकार ने लोगों को अपने आवेदन जमा करने के लिए कई-कई दिनों तक लंबी लाइनों में इंतजार कराया और आरोप लगाया कि इस कवायद से केवल मंत्रियों के कुछ ठेकेदारों, एजेंटों और आपूर्तिकर्ताओं को फायदा हुआ है।

वरिष्ठ भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि नई कांग्रेस सरकार अब पुराने राशन कार्ड रद्द करने पर विचार कर रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर गरीबों का एक भी राशन कार्ड रद्द किया गया तो हमारी पार्टी आंदोलन करेगी। राज्य में महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवाओं का जिक्र करते हुए प्रभाकर ने कहा कि बिना व्यापक योजना के रेवंत रेड्डी सरकार ने इस योजना की घोषणा की है जिससे गांवों में असुविधा और अराजकता फैल गई है। हमारी पार्टी ने गांवों में महिलाओं के साथ बैठक कर जानकारी जुटाई है, जिससे पता चला है कि स्कूल-कॉलेज जाने वाली छात्राओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थिति इतनी खराब है कि अगर कोई महिला मुफ्त बस सेवा का लाभ लेकर किसी गांव में जाती है, तो वापसी में बस नहीं मिलने के कारण इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वह समय पर अपने घर वापस आ जायेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार ने आने वाले संसदीय चुनावों को ध्यान में रखते हुए राज्य भर में कहीं भी आने-जाने के लिए बसों की संख्या बढ़ाए बिना जल्दबाजी में योजनाएं शुरू की हैं।

मुर्गा लड़ाई आयोजित करने पर सख्त कार्रवाई : एसआई

आसिफाबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। सिरपुर टी एसआई डीकोंडा रमेश ने चेतावनी दी है कि यदि संक्रांति पर्व के उपलक्ष्य में मुर्गा लड़ाई और पोकर का आयोजन किया गया तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। शनिवार को सिरपुर टी मंडल के भूपाला पटनम गांव में संक्रांति पर्व के दौरान ग्रामीणों को कुरीतियों के प्रति जागरूक किया। मुर्गों की दौड़ और पोकर के कारण। इस मौके पर बोलते हुए एसआई रमेश ने कहा कि संक्रांति पर्व परंपरागत ढंग से मनाना चाहिए. आसिफाबाद जिले के एसपी के. सुरेश कुमार ने कहा कि चिकन सट्टेबाजी और अन्य जुए को रोकने के लिए कड़ी निगरानी स्थापित की गई है। यदि कोई मुर्गों की लड़ाई, पोकर और असामाजिक गतिविधियों में शामिल होता है तो सख्त कार्रवाई की जाए। जो कोई भी जुआ खेलेगा उसे राजस्व अधिकारियों के सामने बाध्य किया जाएगा। अगर आपको पता चले कि गांव में कोई मुर्गा या जुआ खेल रहा है तो 100 या 8712670544 पर कॉल कर जानकारी दें। सूचना देने वालों का विवरण गोपनीय रखा जाएगा।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सूचना सं. VSKP-ELECTG-23-24-WC-28, दिनांक : 09.01.2024

कार्य का नाम : 2 वर्ष की समयावधि के लिए वाल्टियर मण्डल-इलेक्ट्रिकल जनरल डिपार्टमेंट में रेलवे सामग्री के परिवहन के लिए चालक एवं डीजल तेल, लूब्रिकेंट इत्यादि सहित 3.5 TON PAY लोड LCV ट्रक (छह पहिया) सड़क वाहन किराए पर लेना।

निविदा मूल्य : ₹ 18,03,360/-, बिड सिक्युरिटी : ₹ 36,100/-, पूरा होने की अवधि : 2 वर्ष।

निविदा बंद होने की तिथि व समय : 07.02.2024 को 1330 बजे।

निविदा खुलने की तिथि व समय : 07.02.2024 को 1330 बजे ।

निविदा दस्तावेज से संबंधित संपूर्ण विवरण वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

कोई भी जारी शुद्धिपत्र की जानकारी के लिए निविदाकार उपरोक्त वेबसाइट का अवलोकन करें।

वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियन्ता (सा), वाल्टियर

PR-979/O/23-24

पंजाबी सेवा समिति लोहडी मेला का आयोजन करेगी

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। पंजाबी सेवा समिति, तेलंगाना 14 जनवरी 2024 को एसवीआईटी (महबूब कॉलेज) एसडी रोड सिकंदराबाद में अपना लोहड़ी मेला आयोजित कर रही है। यह वर्ष अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर अपना रजत जयंती वर्ष मना रहा है। फूड स्टॉल में सरसो का साग, मकाई की रोटी, छोले भटूरे आदि जैसे व्यापक पंजाबी व्यंजन शामिल हैं। लोहड़ी मेला शाम 6 बजे से तेलंगा पंजाबियों के लिए खुला है। स्टालों पर खरीदारी की होड़ के लिए तैयार रहें, मनोरंजक खेलों को न चूकें, पंजाबी सेवा समिति परिवार के सदस्यों द्वारा आनंददायक प्रदर्शन, और इंडियाज गॉट टैलेंट फेम रविन और उनके दल द्वारा एक रोमांचक प्रदर्शन, उसके बाद रॉक एंड रोल करने के लिए डीजे जे रितिका दुआ द्वारा एमसी, बीएएएनएस कार्यक्रमों द्वारा सजावट और सचदेवा फोटो हाउस द्वारा फोटोग्राफी आदि होगी। कार्यक्रम में संयोजक सुनील पुरी, तत्काल पूर्व अध्यक्ष विनीत अरोड़ा , संरक्षक डी.एन. गौरी, रवि ओहरी, रमेश पासी, प्रेम कपूर , अध्यक्ष उमेश ठकराल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष नवीन कुमार पासी,महासचिव राज कुमार गनोत्रा, कोषाध्यक्ष दीपक कुमार जयरथ, संयुक्त सचिव गुरविंदर सैनी, उपाध्यक्ष मुकेश अरोड़ा, उपाध्यक्ष रोमी अरोड़ा, महिला विंग अध्यक्ष श्रीमती प्रीता अरोड़ा, उपाध्यक्ष नंदा मल्होत्रा, महासचिव गजल सरपाल, कोषाध्यक्ष शैली कपूर, संयुक्त कोषाध्यक्ष रश्मि खन्ना भागीदारी रहेगी।

श्रद्धांजलि सभा / बैठक

श्री हेतराम सौऊ

(सुपुत्र : स्व. श्री बजरंगरामजी सौऊ)

स्वर्गवास : बुधवार दि.3-1-2024

श्रद्धांजलि सभा/बैठक कल सोमवार दि.15-1-2024 को दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक क्लब हाऊस कल्याण विस्टिलिंग वुड्स, बृंदावन कॉलोनी, हर्षा हास्पिटल लेन, कोमपल्ली पर रखी गई है ।

– शोकाकुल –

भगवती देवी (माता), रामकोरी देवी (ताईजी), सुनिता (धर्मपत्नी), हरिराम-संतोष (भाई-भाभी), ऋषभ (पुत्र), डॉ. आकांक्षा, रिया (पुत्री), डॉ. तुषार, प्रिया (भतीजा-भतीजी), अमर सिंह (ताऊजी), मामचन्द, केदार, सहिराम (चाचा), राजेन्द्र, शिशराम, मनोज, सुरेश, जयदीप, नवीन (भाई) एवं समस्त सौऊ परिवार एवं मित्रगण

Balaji Group of Industries

DULHAPALLY, HYDERABAD

Mobile : 9246158411, 9246363359, 09032198079

तेंदुए का हिरण पर हमला

निर्मल, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। एक तेंदुए द्वारा हिरण का शिकार करने के डर से, वन अधिकारियों ने निर्मल जिले के भैंसा मंडल के तिम्मापुर गांव के बाहरी इलाके में ग्रामीणों से मुलाकात की। शुक्रवार की रात एक तेंदुए ने गांव के बाहरी इलाके में एक हिरण का शिकार किया था। उन्होंने उस जगह का दौरा किया शनिवार सुबह 11 बजे अधिकारी राठौड़ रमेश ने कहा कि चीता की गतिविधि पर नजर रखने के लिए वहां तीन सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। यदि चीता द्वारा हिरण का शिकार किया गया है, तो संभावना है कि चीता शनिवार रात को वहां लौट आएगा।

एटीएम से नकदी चुराने का प्रयास करने वाला मजदूर गिरफ्तार

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। एक एटीएम केंद्र में नकदी निकालने वाली मशीन से नकदी चुराने का प्रयास करने वाले एक मजदूर को पहाड़ीशरीफ पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया। कर्नाटक के मूल निवासी और जलपल्ली के निवासी मोहम्मद अब्दुल मोमीम खान (27) तुक्कुगुडा रोड पर एक निजी बैंक के एटीएम केंद्र में गए और गैस काटने वाले उपकरण से कैश चेस्ट को तोड़ने की कोशिश की। हालाँकि, वह सफल नहीं हो सका और वहाँ से चला गया। अगली सुबह कुछ लोगों की नजर इस पर पड़ी और उन्होंने स्थानीय पुलिस को इसकी जानकारी दी। पुलिस ने क्लोज सर्किट कैमरे की फुटेज एकत्र की और संदिग्ध की पहचान की। उसे गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया।

कुमावत समाज, तेलंगाना प्रदेश के अध्यक्ष बनने पर सोनाराम तिलायचा का सम्मान करते हुए कुमावत समाज गद्दी बावली शाखा के अध्यक्ष लुम्बाराम जालोरा, ओमप्रकाश हांगर, बंशीलाल रेणवाल, ओमप्रकाश दुबलदिया (सिद्दीक नगर), कानाराम मांगर, हीरालाल चान्दोरा, ओमप्रकाश दुबलदिया (अंजय्यानगर), रमेश बाकरेचा, मनोहर मावर, सुनील तिलायचा, रमेश खेडावत, ओमप्रकाश बाकरेचा, अशोक मुलेवा, अशोक गोयल, खिंयाराम, बाबुलाल घोड़ावड़ (डाला), प्रकाश मालिया, अणदाराम मनावत, राजूराम बाकरेचा (गोकुल प्लॉट), प्रकाश, गोविन्द, महेन्द्र एवं अन्य।

कैराना से पाकिस्तान में बसे...फिर आईएसआई सरगना बने

गिरफ्तार एजेंट ने कहा-पान की दुकानों से ऑपरेट करते हैं नेटवर्क, मेरा टास्क अधूरा रह गया

शामली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। "कैराना से गए बड़ी संख्या में लोग पाकिस्तान में बस गए। इनमें से कुछ लोग आईएसआई के सरगना बन गए। वहां पान, ड्राई फ्रूट्स और कपड़ों की दुकानों पर इनके एजेंट बैठते हैं। यहीं से भारत के लिए एजेंट तैयार करते हैं। उन्हें फंडिंग करते हैं और भारत में अपने नेटवर्क को ऑपरेट करते हैं। हम इन ट्रेनर्स को कोड वर्ड में उस्ताद और भाईजान कहकर बुलाते हैं। मुझे जो टास्क दिया गया, वह अधूरा रह गया।

ये शामली में पकड़े गए आईएसआई एजेंट तहसीम उर्फ मोटा ने कबूल किया है। यूपी एसटीएफ ने उसे गुरुवार को गिरफ्तार किया था। इससे पहले तहसीम के 2 भाइयों की गिरफ्तारी हो चुकी है। यह तीनों पाकिस्तान से वापस भारत लौटे थे। इस संबंध में यूपी एसटीएफ ने प्रेस नोट जारी करके पूरा मामला बताया है। आरोपी सदर कोतवाली क्षेत्र में नौकुआं रोड मोहल्ले है। यहां बर्फ खाने वाली गली में गुरुवार सुबह स्थानीय पुलिस के साथ एसटीएफ ने दबिश दी। कुछ देर बाद एसटीएफ एक आदमी को पकड़कर ले गई। इस दौरान आस-पास के इलाके में हड़कंप मच गया। लोगों में चर्चा फैल गई कि यहां आतंकी रह रहा था। इसके बाद पुलिस ने बताया कि तहसीम को पकड़ा गया है। उसकी एक्टिविटी संदिग्ध थी।

5 महीनों से यूज नहीं किया फोन

तहसीम ने बताया, "मैंने 5 महीने से कोई फोन यूज नहीं किया। ट्रेनिंग के दौरान बताया गया था कि पहचान हो जाने की स्थिति में किस तरह के मूवमेंट को कैसे अंजाम देना है। सक्रियता के लिए फोन यूज नहीं करना है। मुझे इंटरनेट कॉलिंग की जानकारी भी दी गई थी।"

पान की दुकानों पर बैठते हैं ट्रेनर

आईएसआई एजेंट तहसीम ने बताया, "पाकिस्तान के लाहौर, कोटा में पान, ड्राई फ्रूट्स और कपड़ों की दुकानों को आईएसआई एजेंट चला रहे हैं। दुकानों की आड़ में ही भारत के लोगों को भड़काते हैं। इसके बाद यहीं से आईएसआई एजेंट बनाकर आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए मोटिवेट करते हैं।

कैराना से बड़ी संख्या में गए लोग बने सरगना

तहसीम के मुताबिक, कैराना से गए दिलशाद मिर्जा, इकबाल काना और हमीदा आईएसआई के सरगना बन गए हैं। मेरी मुलाकात इन्हीं से हुई थी। पाकिस्तान के एजेंट पूछताछ के बाद सभी भारतीयों को पहले इन्हीं के पास लेकर जाते हैं।'

सिखाए जाते हैं कोड वर्ड

तहसीम ने बताया, "पाकिस्तान के लाहौर और अन्य शहरों में बैठे आईएसआई एजेंट और अन्य एक-दूसरे से कोड वर्ड में बात करते हैं। उस्ताद, भाईजान कहकर पुकारा जाता है। इन शब्दों से बात करने वाला समझ जाता है कि जिससे बात कराई जाएगी, वह नया है। उसे पूरी तरह से ट्रेंड किया जाना है। इसके बाद हमें भी कोड वर्ड सिखाए गए।"

मालामाल करने की बात

तहसीम ने बताया कि भारत में सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने, एकता में खलल डालने और नकली नोटों की सप्लाई कराने के लिए झांसे में लेते हैं। एक दो दिन की मुलाकात के बाद ही दुकानों पर बैठे लोग ISI एजेटों से मिलाने के लिए तैयार हो जाते हैं। हर एक एक्टिविटी की सूचना मोबाइल के माध्यम से एजेंटों को दी जाती है। मोटिवेट करने के लिए एजेंट दो से लेकर तीन दिन तक लगातार बात करते हैं। इसके बाद सपना दिखाया जाता है कि उनके साथ जुड़े रहे तो चंद दिनों में मालामाल हो जाएंगे।

गुहार लेकर आई महिला को योगी ने दिया भरोसा

पेंशन, मकान, राशनकार्ड सब दिलाएंगे

गोरखपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन के दौरान सरकारी योजना के तहत मकान की गुहार लेकर आई एक महिला को मकान के साथ पेंशन और राशनकार्ड दिलाने का भी भरोसा दिया। मकान की माँग पर सीएम ने पूछा, क्या आपको पेंशन मिलती है? महिला के इनकार वाले जवाब पर सीएम फौरन बोल पड़े- आपको पेंशन, मकान, राशनकार्ड सब दिलवाएंगे। इसे लेकर उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही शुरू कर महिला की हर समस्या दूर करने का निर्देश दिया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार अपराह्न से गोरखपुर प्रवास पर हैं। शनिवार सुबह हर बार की तरह उनकी दिनचर्या में जनसेवा का विशिष्ट अनुष्ठान 'जनता दर्शन' शामिल रहा। गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सभागार में आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने करीब 200 लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान उन्होंने भरोसा दिया कि जिन्हें आवास की समस्या है उन्हें सरकारी योजना से आवास दिलाया जाएगा। गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए पर्याप्त आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। किसी की जमीन पर अवैध कब्जा नहीं होने दिया जाएगा। भू माफिया के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाएगी। जनता दर्शन में परिजनों के साथ आए बच्चों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खूब दुलारा और आशीर्वाद दिया।

सीएम आवास के बाहर कैंडीडेट्स की पुलिस से झड़प

> नौकरी के लिए 150 कैंडिडेट ने किया घेराव

> शिक्षक भर्ती के लिए 500 दिनों से धरने पर बैठे थे

लखनऊ, 13 जनवरी (एजेंसियां)। नौकरी की मांग कर रहे करीब 150 अभ्यर्थी शनिवार को सीएम आवास का घेराव करने पहुंचे। ये कैंडिडेट यूपी में 69000 शिक्षक भर्ती में पिछड़े और दलितों के कोटे के 6800 पदों की बहाली की डिमांड कर रहे हैं। 500 से ज्यादा दिन हो गए, इन कैंडिडेट्स का धरना लखनऊ में चल रहा है। शनिवार को सीएम आवास के बाहर नारेबाजी करते करीब 150 लोगों को देख पुलिस एक्शन में आ गई। आनन- फानन प्रदर्शन कर रहे लोगों को हटाने का प्रयास किया। लेकिन, कोई पीछे हटने को राजी नहीं था। ये सड़क पर ही धरने पर बैठ गए। सभी अपने हाथों में बैनर-पोस्टर लिए थे। पोस्टर में लिखा था- पिछड़े और दलितों के साथ अन्याय क्यों...6800 शिक्षकों का नियुक्ति दो...। लोगों ने नारेबाजी की- योगी जी नियुक्ति दो...नियुक्ति दो।

कालीदास मार्ग पर पुलिस की कैंडिडेट्स से झड़प

सीएम आवास को जाने वाले 5 कालीदास मार्ग पर कैंडिडेट्स नारेबाजी करते बैठ गए। कई महिलाओं के साथ बच्चे भी थे, जो गोद में बैठे थे। प्रदर्शन कर रहे कैंडिडेट्स जब नहीं हटे तो पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। कैंडिडेट्स के साथ पुलिस की झड़प हुई। पुलिस ने जबरन प्रदर्शन करने वालों को बस में बैठाया, उन्हें इको गार्डेन ले गई। प्रदर्शन करने वालों ने यह आरोप लगाया है कि बेसिक शिक्षा विभाग से इस बारे में कई बार बात की जा चुकी है, लेकिन अभी तक उन्हें नियुक्ति पत्र नहीं दिया गया। यही नहीं 2022 में चुनाव के समय भी योगी सरकार ने नियुक्ति पत्र देने का आश्वासन दिया था।

कैंडिडेट्स बोले-मुख्यमंत्री ने अभी तक वादा नहीं निभाया

69000 शिक्षक भर्ती में आरक्षण घोटाले का आरोप लगा रहे अभ्यर्थियों ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में सरकार ने 6800 अभ्यर्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भी सरकार नियुक्ति नहीं दे रही है। आरोप लगाया कि चुनाव के समय मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया था कि किसी भी अभ्यर्थियों के साथ अन्याय नहीं होने देंगे, लेकिन चुनाव बीते डेढ़ साल से अधिक हो गया है।

2 इंच की पत्तियों पर श्रीराम

विवाह से लेकर युद्ध तक को उकेरा, अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा में ऑनलाइन प्रदर्शित होगी

मेरठ, 13 जनवरी (एजेंसियां)। मेरठ की लीफ आर्टिस्ट ममता गोयल ने 2 इंच की पत्तियों पर भगवान राम के जीवन को उकेरा है। राम-सीता विवाह से लेकर राम दरबार और रावण युद्ध की पेटिंग उन्होंने पत्तियों पर बेहद बारीकी से बनाई है। 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाली प्राण प्रतिष्ठा के दिन ये ऑनलाइन प्रदर्शित की जाएगी। मेरठ में गंगानगर की रहने वाली ममता 10 साल से लीफ आर्ट (पत्ती पर कला) बना रहीं हैं। 2 साल से रामायण से जुड़े प्रसंग को पत्तियों पर उकेर रहीं हैं। वह कहती हैं, "जब से प्रभु श्रीराम के जीवन का चित्रण किया है। मेरे मनोभाव बदल गए। 2 साल से रामायण की कहानी पर लीफ आर्ट बना रही हूं।"

पत्तियों पर कटिंग करके बनाती हैं तस्वीर

ममता कहती हैं, "मैं कलाकृति बनाने के लिए फूल, पौधों की पत्तियां लेती हैं। ये एक से डेढ़ इंच की होती हैं। पत्तियों को कटिंग कर डिजाइन बनाती हूं। इस आर्ट का एक नियम है कि पत्ती का अपना आकार परिवर्तित नहीं होना चाहिए। पत्ती के अंदर पूरे दृश्य की कलाकृति बनाना चुनौतीपूर्ण है। खास बात यह है कि चित्र का भाव भी परिवर्तित नहीं होना चाहिए।"

पत्ती पर चित्र बनाना बहुत मुश्किल

ममता कहती हैं, "मैं अब तक हनुमानजी, राम दरबार, राम-सीता, राम, जयश्री राम, रावण वध, शबरी कथा, राम मंदिर से जुड़े प्रसंगों को पत्तियों पर उकेर चुकी हूं। एक

लीफ पेंटिंग बनाने में 8 से 10 घंटे या कभी-कभी उससे भी ज्यादा वक्त लगता है। नॉर्मल चित्र बनाना आसान है। मगर पत्ती पर चित्र बनाना बहुत मुश्किल। बहुत बारीकी से काम करना होता है।"

राम मंदिर परिसर में डिस्प्ले होगी लीफ आर्ट

ममता कहती हैं, "ओरिजिनल चित्र या विषय को एक पत्ती पर कहना बेहद मुश्किल होता है। मैंने अब तक तुलसी के पत्ते, गुलाब की पत्ती, बरगद, बेल पत्र, मनी प्लांट सहित कई पत्तियों पर पेंटिंग बनाई है। 22 जनवरी को ऑनलाइन रामकथा कला प्रदर्शनी हो रही है। इसमें मेरी बनाई रामायण सीरीज को दिखाया जाएगा। बाद में ये चित्र राम मंदिर ट्रस्ट को जाएंगे, इन्हें वहां डिस्प्ले किया जाएगा।"

एक बच्ची के सामने दूसरी से रेप : दोनों को पत्थर से मारा

आठ साल की बच्ची मर गई; दूसरी को मरा सोच छोड़ भागा

पटना, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पटना में फुलवारीशरीफ के एक गांव की दो बच्चियों से रेप और एक की हत्या का मामला अब सुलझ गया है। पुलिस ने कांड के इकलौते आरोपी को मीडिया के सामने नकाब में पेश किया। एसएसपी राजीव मिश्रा ने बताया कि अपराधी ने इन दो बच्चियों के साथ एक बुजुर्ग से रेप-मर्डर में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। 50 साल के आरोपी देवानंद राय उर्फ भोकलु ने बताया है कि उसने गोयठा (उपले) लेने निकली दोनों बच्चियों को बहलाकर अपने साथ बुलाया। फिर आठ साल की बच्ची के साथ रेप किया और उसकी हत्या कर दी। दूसरी बच्ची से रेप के प्रयास में शोर मचाने या किसी के आ जाने के कारण दो-तीन बार व्यवधान आया, लेकिन वह प्रयास करता रहा। फिर 10 साल की इस बच्ची के भी सिर पर पत्थर से वार किया और मरा समझकर वहां से निकल गया।

पुलिस ने बताई यह कहानी

पटना के फुलवारी शरीफ स्थित एक गांव में 9 जनवरी को दो नाबालिक बच्चियों के साथ हुए दुष्कर्म के बाद हत्या मामले का मुख्य आरोपी आलमपुर गांव के निवासी देवानंद राय उर्फ भोकलू राय (50) बताया गया है। घटना के संबंध में जानकारी देते हुए पटना के वरीय आरक्षी अधीक्षक राजीव मिश्रा का कहना है कि 9 जनवरी को आलमपुर गांव की दो नाबालिक बच्चियों घर से गोइठा लाने के लिए गांव में निकली थी। उन्होंने बताया कि गांव के ही देवानंद राय के घर के नजदीक जब वह बच्चियों पहुंचकर उनसे गोइठा के बारे में पूछी तो उन्होंने बताया कि उनके घर में गोइठा नहीं है खेत में है। देव आनंद राय दोनों बच्चियों को लेकर खेत की तरफ जाने लगे इस बीच सामने से एक महिला आती दिखी, तब उन्होंने दूसरी तरफ बच्ची को ले जा रहे थे। इस बीच वहां भी एक महिला आती दिखी। इसके बाद देवानंद राय ने तीसरी जगह बच्ची को ले गया। वरीय आरक्षी अधीक्षक ने बताया कि देवानंद राय ने पहले 8 वर्ष की बच्ची के साथ जबरदस्ती रेप किया। फिर दूसरी बच्ची के साथ भी गलत करना चाहा। इसके बाद देवानंद राय ने वहीं पर पड़े एक बड़े पत्थर से दोनों बच्चियों के सर पर जोर से प्रहार किया, जिससे 8 वर्ष की बच्ची की मौत मौके पर हो गई। उन्होंने बताया कि दूसरी बच्ची भी घायल हो गई और गिर पड़ी, जिससे देवानंद राय ने मृत समझ कर वहां छोड़कर फरार हो गया।

शादीशुदा हिंदू महिला का कराया धर्मपरिवर्तन

निकाह करने का वीडियो हुआ वायरल, जांच में जुटी पुलिस

हमीरपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। हमीरपुर जिले के बिंवार थाना क्षेत्र में शादीशुदा हिंदू महिला का धर्म परिवर्तन कराने का मामला सामने आया है। किराए के मकान में रहते हुए दोनो में नजदीकी बढ़ी थीं। विवाहिता द्वारा मुस्लिम युवक से निकाह कराने के वायरल फोटो वीडियो से हड़कंप मच गया है।

संवाद न्यूज एजेंसी किसी भी वायरल वीडियो और फोटो की पुष्टि नहीं करती है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। बता दें कि इस महिला के अपहरण की रिपोर्ट बीती छह दिसंबर को पति ने थाना बिवांर में दर्ज कराई थी। तब से पुलिस इसे बरामद नहीं कर सकी है।

छापेमारी करने गई एसटीएफ टीम पर ईंट-पत्थर से हमला

जान बचाकर भागे छापेमार दल, पुलिस से 2 शिकायत पर 2 लाख 44 हजार का जुर्माना वसूला

शेखपुरा, 13 जनवरी (एजेंसियां)। शेखपुरा के बरबीघा नगर क्षेत्र में शनिवार को बिजली विभाग के एसटीएफ की टीम पर हमला किया गया है। कर्मचारियों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटने का मामला सामने आया है। एसटीएफ की टीम की बाइक भी छीन ली गई है। बाद में पुलिस के सहयोग से बाइक को वहां से बरामद किया गया। इस मामले में स्थानीय मिशन ओपी में दो अलग-अलग जानलेवा हमले और विद्युत चोरी की प्राथमिकी दर्ज करने के लिए आवेदन दिया गया है। यह मामला बरबीघा नगर के गौशाला रोड स्थित सामाचक मोहल्ला से जुड़ा हुआ है।

इस मामले में विद्युत विभाग के एसडीओ राहुल कुमार ने बताया कि जमुई से आए एसटीएफ के विद्युत अधीक्षण अभियंता दिलीप चौधरी, एसटीएफ के ही सहायक विद्युत अभियंता निशांत कुमार, बरबीघा के सहायक विद्युत अभियंता राहुल कुमार, कनीय विद्युत अभियंता रवि रंजन कुमार इत्यादि टीम के लोग मोहल्ला में प्रकाश यादव के आटा चक्की मिल में छापेमारी करने गए।

इसमें अवैध रूप से बाईपास करके बिजली की चोरी की जा रही थी। इसी दौरान बिजली की चोरी पकडे.जाने पर प्रकाश यादव का बेटा मुकेश कुमार और नंदकिशोर प्रसाद का बेटा अमित कुमार भड़क गया। सहयोगियों के साथ जानलेवा हमला कर मारपीट और रोड़ेबाजी करने लगा। मौका मिलते ही सभी लोग वहां से जान छुड़ाकर भागे। दौड़ा-दौड़ा कर सबको पीटा गया। सभी की बाइक वहीं रह गई।

पुलिस ने नष्ट की 35.69 एकड़ में लगी अफीम

नक्सल इलाकों में उगाई गई थी नशे की फसल

गया, 13 जनवरी (एजेंसियां)। बिहार के गया जिले में नक्सलियों के इशारे पर इस बार जमकर अफीम की खेती की जा रही है। हालांकि नक्सल प्रभावित क्षत्रों में अफीम की खेती होना कोई नई बात नहीं है, क्योंकि जानकार बताते हैं कि अफीम की खेती नक्सलियों की अर्थव्यवस्था का एक अहम हिस्सा है। नक्सली दुर्गम क्षेत्रों में इसकी खेती कर कमाई करते हैं और उससे उनकी अर्थव्यवस्था चलती है। लेकिन इस बार अफीम की खेती कुछ ज्यादा ही हो रही है। माना जा रहा है कि बिहार में शराबबंदी के बाद अन्य मादक पदार्थों की तस्करी बढ़ी है। अफीम भी उसी रैकेट का एक हिस्सा है।

गया के कई इलाकों में पिछले कई दिनों से पुलिस नक्सलियों और मादक पदार्थ के कारोबारियों के खिलाफ ऑपरेशन क्लीन अभियान चला कर अफीम की खेती को नष्ट कर रही है। इस दौरान पुलिस ने दावा किया है कि इस बार करीब 35.69 एकड़ में लगी अफीम की खेती को नष्ट किया गया है। गया के एसएसपी आशीष भारती ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि शेरघाटी अनुमंडल के डग, खेरा, फतुयादिह, बरहा, चपावर समेत दर्जनों पहाड़ी और जंगली इलाकों में अफीम की खेती हो रही है। इस सूचना के आधार पर नक्सलियों के गढ़ में छापेमारी कर कई एकड़ खेत में लगी अफीम की खेती को नष्ट किया गया है। साथ ही उन्होंने बताया कि पुलिस इस अवैध धंधे में जुड़े लोगों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है।

पीएम मोदी 27 जनवरी को आएंगे बिहार

बेतिया, 13 जनवरी (एजेंसियां)। 27 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक दिवसीय बिहार दौरे पर बेतिया संसदीय क्षेत्र के सुगौली आएंगे। यहां जनसभा को संबोधित करेंगे। साथ ही बिहार में केंद्र प्रायोजित कई योजनाओं का शिलान्यास, लोकार्पण और उद्घाटन करेंगे।

इसी क्रम में सुगौली में इंडियन ऑयल की परियोजना का शुभारंभ भी करेंगे। करीब 6 हजार 500 करोड़ रुपए की लागत से पूरी हुई यह परियोजना बिहार के लिए बड़ा उपहार है।

मायावती को मिला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का निमंत्रण

लखनऊ, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में बसपा सुप्रीमो मायावती को आमंत्रित किया गया है। इसके लिए उन्हें निमंत्रण भेजा गया है। विश्व हिंदू परिषद ने शनिवार को बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री मायावती को कार्यक्रम के लिए निमंत्रण भेजा गया है। विहिप के अनुसार, उन्होंने निमंत्रण स्वीकार कर लिया है लेकिन कार्यक्रम में शामिल नहीं होंगी।

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में फिल्म कलाकारों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों सहित अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी हस्तियों को आमंत्रित किया गया है। वहीं, विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने मीडिया से कहा कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव को भी कुरियर से निमंत्रण भेजा गया था अगर उन्हें निमंत्रण नहीं मिला तो फिर से भेजा जा सकता है। बीते दिनों अखिलेश यादव ने कहा था कि अगर उन्हें आमंत्रित किया गया तो वह अयोध्या जाएंगे। हालांकि, उन्होंने बाद में कहा था कि जब भगवान श्रीराम बुलाएंगे तब वह अयोध्या जाएंगे। निमंत्रण मिलने के सवाल पर उन्होंने कहा था कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति के निमंत्रण पर कैसे जा सकता हूं जिसे मैं नहीं जानता। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में उद्योगपति भी शामिल होंगे।

दक्षिण मध्य रेलवे
हमें @SCRailwayindia पर फॉलो करें
द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

टेंडर नं. एम212-जीसीओ-01 दि.11-01-24

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, चीफ वर्कशाप मैनेजर/आरवायपीएस, दक्षिण मध्य रेलवे, वैगन वर्कशाप, गुन्टुपल्ली-521241 द्वारा ई-निविदा आमंत्रित है।

निविदा सं. : एम212-जीसीओ-01 दि.11-01-24, कार्य विवरण: 36 माह की अवधि के लिए वैगन वर्कशाप, गुन्टुपल्ली, दमरे के प्रति हरित सह-दर प्रणाली का पुन:प्रमाणन अथवा ग्रीन को-रेटिंग सिस्टम की रि-सर्टिफिकेशन करना। मात्रा: 01 एकमुश्त या लम्पसम, निविदा मूल्य: रु.8,43,700/-(आठ लाख, त्रियालिस हजार, सात सौ रूपये मात्र), बोली सुरक्षा/जमा की जानेवाली पूधरा रू.16,900/-(सोलह हजार नौ सौ रूपये मात्र), निविदा दस्तावेज का मूल्य: शून्य, पूरा करने की अवधि: 36 महिने, आफर वैधता: खुलने की तिथि से लेकर 60 दिन, निविदा का प्रकार: आयआरजीसीसी-2022 द्वारा शासित कार्य निविदा, टेन्डरिन्ग प्रणाली: खुली निविदा-सिंगल पैकेट, कार्य की समान प्रकृति - लागू, बोली बंद करने की तिथि व समय: 5-2-2024, 15.00 बजे, बोली खुलने की तिथि व समय: 5-2-2024, 15.15 बजे, निविदा दस्तावेज एवं शुध्दिपत्र: निविदा दस्तावेज व संशोधन या परिवर्तनों/शुध्दिपत्रों हेतु यदि कोई हो तो, वेबसाइट:http://www.ireps.gov.in देखें।

कार्य प्रबंधक, डब्ल्यूडब्ल्यूएस/गुन्टुपल्ली

टेंडर नं.06/2023-24/ एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी,दि.12-01-2024

भारत के राष्ट्रपति की ओर से तथा निर्वहणकर्ता एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी द्वारा तत्संबंधित निविदा सं. 06/2023-24/एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी,दि.12-01-2024,बंद तिथि: 6-2-2024 के 15.00 बजे के प्रति ई-निविदाएं आमंत्रित है। बोलिदाताओं द्वारा अपने मूल/संशोधित बोलियों को केवल उक्त बंद तिथि व समय तक ही प्रस्तुत कर सकते हैं। इस निविदा के प्रति मैन्युएल आफर्स अमान्य है एवं इस मामले में मैन्युएल आफर्स के प्राप्त होने पर उस पर विचार नही किया जायेगा।

क्रम सं.-01, कार्य विवरण: निविदा सं. 06/2023-24/एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी - हैदराबाद डिवीजन-निजामाबाद: एडीशनल प्लाटफार्म्स की व्यवस्था के लिए यार्ड आरेंजमेन्ट्स की रिमोडेलिन्ग एवं वन फुल्ल लेन्थ डेड एन्ड स्पर की व्यवस्था--टीआरडी/ओएचइ व्यवस्था। अनुमानित मूल्य: रु.3,07,27,167.68/-, पूधरा: रू.3,03,600/-, पूरा करने की अवधि: 6 महिने, बंद करने की तिथि: 6-2-2024

वेबसाइट विवरण: www.ireps.gov.in पर देखें।
निविदा के पूर्ण विवरण को निम्न नोटिस बोर्ड लोकेशन -- एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी कार्यालय, हैदराबाद भवन, सिकंदराबाद-500025 पर देख सकते हैं।

वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता (ट्रैक्शन), हैदराबाद

भारतीय रेल
रेल विद्युतीकरण
www.ireps.gov.in

निविदा सूचना सं. आरइएससी/ इएल/टीएन/ 23-24/ 06 दि.11.01.2024

भारत के राष्ट्रपति गणराज्य की ओर से एवं के लिए, मुख्य परियोजना निदेशक, रेल विद्युतीकरण, सिकंदराबाद द्वारा निम्न कार्यो हेतु ई-निविदा(आनलाईन) आमंत्रित हैं।

क्रम सं.1, निविदा सं. आरइएससी/इएल/एसक्यू/जीआर.207/23-24/06, कार्य विवरण: औरंगाबाद, परभणी, नांदेड पर एडीइइ/टीआरडी कार्यालयों का विद्युतीकरण एवं परभणी व सेलु के एसएसइ(सिग्नल) कार्यालयों पर तत्संबंधित कार्य तथा दमरे के नांदेड डिवीजन के तहत रेल विद्युतीकरण परियोजना/सिकंदराबाद के मनमाड-मुदखेड सेक्शन(जीआर.207) के विभिन्न स्टेशनों पर टाईप -II के 27 युनिट्स, टाइप-III के 14 युनिट्स तथा टाईप-IV के स्टाफ क्वार्टर्स का विद्युतीकरण कार्य। अनुमानित मूल्य: रू.54,67,786/-, आनलाइन में जमा की जानेवाली पूधरा: रू.1,09,400/-, वेबसाइट द्वारा डाउनलोड किये जानेवाले निविदा प्रपत्र का मूल्य: रू. शून्य, पूरा करने की अवधि: 4 महिने(चार महिने), निविदा खुलने की जगह: सिकंदराबाद

ई-टेंडर (आनलाईन) द्वारा निविदा की बंद करने की तिथि व समय: 12-02-2024, 15.00 बजे
ई-टेंडर (आनलाईन) द्वारा निविदा खुलने की तिथि व समय: 12-02-2024, 15.30 बजे
निविदा शर्तों/अधिक जानकारी एवं निविदाओं की प्रस्तुति हेतु कृपया वेबसाइट- www.ireps.gov.in देखें।
निविदा दस्तावेजों/ के किसी भी संशोधनों/शुध्दिपत्रों/परिशिष्ट जोड होने पर, आवश्यक होने पर उपरोक्त वेबसाइट पर प्रदर्शित किया जायेगा।

-मुख्य परियोजना निदेशक, आरई, सिकंदराबाद

निविदा सूचना सं. आरइएससी/ इएल/टीएन/ 23-24/07 दि.11.01.2024

भारत के राष्ट्रपति गणराज्य की ओर से एवं के लिए, मुख्य परियोजना निदेशक, रेल विद्युतीकरण, सिकंदराबाद द्वारा निम्न कार्यो हेतु ई-निविदा(आनलाईन) आमंत्रित हैं।

क्रम सं.1, निविदा सं. आरइएससी/इएल/आरटी/टीआरएल/अम्बारी/07, कार्य विवरण: अम्बारी(जिला -नांदेड) पर132 केवी ट्रैक्शन सब स्टेशन स्वीचयार्ड का डिजाइन, आपूर्ति, निर्माण, टेस्टींग व कमीशनींग कार्य एवं अम्बारी पर अनुमानित रूट लेन्थ 15 किमी तक, प्रस्तावित 132/27 केवी रेलवे ट्रैक्शन सब-स्टेशन के ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण कार्य तथा इसके साथ दमरे के नांदेड डिवीजन के पिम्पलकुट्टी- मुदखेड सेक्शन(जीआर.267) का टर्नकी आधार पर एससीएडीए व्यवस्था। अनुमानित मूल्य: रू.6,88,69.204.66, आनलाइन में जमा की जानेवाली पूधरा: रू.4,94,400/-, वेबसाइट द्वारा डाउनलोड किये जानेवाले निविदा प्रपत्र का मूल्य: रू. शून्य, पूरा करने की अवधि: 6 महिने (छह महिने), निविदा खुलने की जगह: सिकंदराबाद

ई-टेंडर (आनलाईन) द्वारा निविदा की बंद करने की तिथि व समय: 12-02-2024, 15.00 बजे
ई-टेंडर (आनलाईन) द्वारा निविदा खुलने की तिथि व समय: 12-02-2024, 15.30 बजे
निविदा शर्तों/अधिक जानकारी एवं निविदाओं की प्रस्तुति हेतु कृपया वेबसाइट: www.ireps.gov.in देखें।
निविदा दस्तावेजों/ के किसी भी संशोधनों/शुध्दिपत्रों/परिशिष्ट जोड होने पर, आवश्यक होने पर उपरोक्त वेबसाइट पर प्रदर्शित किया जायेगा।

मुख्य परियोजना निदेशक, आरई, सिकंदराबाद
A0048

निविदा शर्तों/अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग के लिए कृपया http://www.ireps.gov.in या www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

हिट एंड रन : मुआवजा बढ़ाने पर विचार करे केंद्र

मुआवजे के नगण्य दावों से सुप्रीम कोर्ट चिंतित

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने हिट एंड रन मामलों में मुआवजे के लिए किए गए दावों की कम संख्या पर गंभीर चिंता जताई है। शीर्ष अदालत ने पाया कि हिट एंड रन के मामलों के मुकाबले मुआवजे का दावा करने वालों की संख्या नगण्य है। यह स्थिति तब है जबकि मुआवजा योजना को लागू हुए डेढ़ साल से अधिक हो चुका है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि पीड़ित को योजना से अवगत ही नहीं कराया गया हो।

योजना एक अप्रैल, 2022 से लागू है। सुप्रीम कोर्ट ने इस योजना के तहत मौत के मामले में दो लाख और घायलों के लिए 50 हजार मुआवजे की राशि में सालाना वृद्धि करने पर भी विचार करने के लिए केंद्र सरकार को निर्देश जारी किया। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस पंकज मिथल की पीठ ने शुक्रवार को कहा, यदि पुलिस यह निष्कर्ष निकालती है कि यह हिट एंड रन दुर्घटना का मामला है तो उन्हें पीड़ित या उसके कानूनी प्रतिनिधियों को योजना की उपलब्धता के बारे में भी बताना चाहिए। पीठ ने कहा, केंद्र को इस प्रमुख चिंता का समाधान करना चाहिए कि योजना की उपलब्धता के बावजूद बहुत कम पात्र दावेदार योजना का लाभ उठा रहे हैं।

यह है कानूनी प्रावधान

मोटर वाहन अधिनियम की धारा 161 की उपधारा (2) के तहत यह प्रावधान है कि हिट एंड रन मोटर दुर्घटना के परिणामस्वरूप किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के मामले में परिजनों को दो लाख रुपये का मुआवजा या ऐसी उच्च राशि जो केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित की जाए, का भुगतान करना चाहिए। गंभीर चोट की स्थिति में मुआवजा राशि 50 हजार रुपये है। समय के साथ घटता है पैसे का मूल्य...शीर्ष कोर्ट ने कहा, समय के साथ पैसे का मूल्य कम होता जाता है। हम केंद्र सरकार को इस बात पर विचार करने का निर्देश देते हैं कि क्या मुआवजे की राशि को सालाना बढ़ाया जा सकता है।

राम मंदिर निर्माण पर आडवाणी ने लिखा

एक दिव्य स्वप्न की पूर्ति-यह नियति ने तय किया, इसके लिए पीएम मोदी को चुना

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। नियति ने तय किया था कि अयोध्या में भगवान राम का भव्य मंदिर बनाया जाएगा और उसने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चुना। राम मंदिर आंदोलन में सबसे आगे रहे भाजपा के दिग्गज भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने राष्ट्र धर्म पत्रिका के विशेष संस्करण में लिखे अपने लेख में ये बातें कहीं। लेख 16 जनवरी को प्रकाशित होगा। पत्रिका के विशेष संस्करण की कॉपी उन सभी लोगों को दी जाएगी जो अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होंगे। आडवाणी ने इस क्षण को लाने, रामलला का भव्य मंदिर बनाने और अपने संकल्प को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई भी दी है।

यात्रा ने खुद को समझने का मौका दिया

आडवाणी के लिखे लेख का शीर्षक है - राम मंदिर निर्माण, एक दिव्य स्वप्न की पूर्ति। लेख में आडवाणी ने राम मंदिर निर्माण के लिए 33 साल पहले निकाली गई रथ यात्रा का जिक्र किया। उन्होंने लिखा कि उनका मानना है कि अयोध्या आंदोलन उनकी राजनीतिक यात्रा में सबसे निर्णायक और परिवर्तनकारी घटना थी। इस यात्रा ने उन्हें भारत को फिर से खोजने और इस प्रक्रिया में, खुद को फिर से समझने का मौका दिया।

आडवाणी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को भी याद किया। उन्होंने कहा कि वह अयोध्या में राम मंदिर के भव्य प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले अटलजी की अनुपस्थिति महसूस कर रहे हैं। लेख में आडवाणी ने लिखा- आज रथयात्रा को 33 साल पूरे हो गए। जब हमने 25 सितंबर, 1990 की सुबह रथ यात्रा शुरू की, तो हमें नहीं पता था कि भगवान राम के प्रति जिस आस्था के साथ हम यह यात्रा शुरू कर रहे हैं, वह देश में एक आंदोलन का रूप ले लेगी।

मोदी पूरी रथ यात्रा के दौरान साथ रहे

आडवाणी ने कहा है कि वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरी रथ यात्रा के दौरान उनके साथ थे। तब वह बहुत प्रसिद्ध नहीं थे, लेकिन उसी समय भगवान राम ने अपने मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए अपने भक्त (मोदी) को चुना था। जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर में (भगवान राम की मूर्ति) का अभिषेक करेंगे, तो वह हमारे भारत के प्रत्येक नागरिक का प्रतिनिधित्व करेंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि यह मंदिर सभी भारतीयों को श्री राम के गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करे। उस समय मुझे लगा कि नियति ने तय कर लिया है कि एक दिन अयोध्या में श्री राम का भव्य मंदिर जरूर बनेगा। अब यह केवल समय की बात है। अयोध्या में राम मंदिर का प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी को आयोजित किया जाना है।

रथयात्रा ने मेरे जीवन को प्रभावित किया

रथयात्रा के दौरान कई ऐसे अनुभव हुए जिन्होंने मेरे जीवन को प्रभावित किया। दूर-दराज के गांवों से अनजान लोग रथ को देखकर भाव-विभोर होकर मेरे पास आते थे। वे प्रणाम करते, भगवान राम का नाम जपते और चले जाते। ये संदेश था कि राम मंदिर का सपना देखने वाले बहुत से लोग हैं। 22 जनवरी को मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ उन ग्रामीणों की दबी हुई इच्छाएं भी पूरी हो जाएंगी।

इंडिगो की मुंबई-गुवाहाटी फ्लाइट घने कोहरे में फंसी

बांग्लादेश के ढाका में कराई गई इमरजेंसी लैंडिंग

गुवाहाटी, 13 जनवरी (एजेंसियां)। इंडिगो की मुंबई से गुवाहाटी जा रही एक फ्लाइट को शनिवार को घने कोहरे के चलते बांग्लादेश के ढाका की ओर डायवर्ट किया गया। बताया गया है कि गुवाहाटी एयरपोर्ट के आसपास कोहरा इतना घना था कि पायलट को आसपास लैंडिंग के लिए पट्टी भी नहीं दिखी। ऐसे में इंडिगो के विमान को ढाका में लैंड कराया गया। बताया गया है कि पहले घने कोहरे की वजह से पायलट विमान को कोलकाता ले जाने वाले थे। लेकिन वहां भी खराब मौसम की वजह से इसे भुवनेश्वर के लिए डायवर्ट कर दिया गया। लेकिन भुवनेश्वर एयरपोर्ट पर रनवे बंद था। बाद में कैप्टन ने ढाका एयरपोर्ट से संपर्क किया और फ्लाइट को लैंड कराया।

मुंबई यूथ कांग्रेस के नेता ने किया पोस्ट

एक्स पर एक पोस्ट में मुंबई यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रमुख सूरज सिंह ठाकुर ने इस घटना को लेकर पोस्ट किया। उन्होंने कहा, मैंने इंडिगो की मुंबई से गुवाहाटी जाने वाली फ्लाइट 6ई 5319 में सफर किया। लेकिन घने कोहरे की वजह से फ्लाइट गुवाहाटी में लैंड नहीं कर सकी, बल्कि इसे ढाका डायवर्ट किया गया। ठाकुर ने कहा कि फिलहाल फ्लाइट के सभी पैसेंजर बिना पासपोर्ट के अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार हैं। उन्होंने बताया कि यात्रियों को फ्लाइट के अंदर ही बिठाया गया है। मैं नौ घंटे से विमान में ही हूं। मैं भारत जोड़ो न्याय यात्रा के लिए मणिपुर के इंफाल जाने वाला था। अब देखते हैं कि कब गुवाहाटी पहुंचते हैं और फिर वहां से इंफाल की फ्लाइट मिलती है।

इंडिगो ने जारी किया बयान

इंडिगो की ओर से जारी बयान के मुताबिक, परिचालन कार्यों के चलते फ्लाइट को ढाका से गुवाहाटी वापस लाने के लिए नए क्रू को तैनात किया गया। इस दौरान यात्रियों को समय-समय पर अपडेट दिए गए और उन्हें खाने-पीने की सुविधा मुहैया कराई गई।

प्राण प्रतिष्ठा के दिन गोदावरी के तट पर आरती करेंगे उद्धव ठाकरे

बोले-देशभक्त हूं, अंधभक्त नहीं

मुंबई, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या राम मंदिर को लेकर शिवसेना (यूबीटी) के नेता उद्धव ठाकरे ने कहा कि 'राम मंदिर बन रहा है और इससे सभी खुश हैं, लेकिन मैं देशभक्त हूं अंधभक्त नहीं। राम मंदिर बने ये मेरे पिता का भी सपना था और यह हम सभी के लिए खुशी की बात है कि अब मंदिर बन रहा है, लेकिन प्राण प्रतिष्ठा को लेकर शंकराचार्यों से चर्चा की जानी चाहिए थी।' उद्धव ठाकरे ने बताया कि 'वह 22 जनवरी की शाम को गोदावरी नदी के तट पर आरती करेंगे।'

उद्धव ठाकरे से राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा और उसमें कथित तौर पर शंकराचार्यों के शामिल न होने को लेकर सवाल किया गया था। दरअसल विपक्ष का दावा है कि शंकराचार्यों ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का बहिष्कार किया है। विपक्ष का कहना है कि कथित तौर पर अधूरे राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होने और प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रों अनुसार ना होने से शंकराचार्य नाराज हैं। हालांकि श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य ने किसी विवाद से इनकार किया है।

शिवसेना ने राष्ट्रपति को भेजा आमंत्रण

उद्धव ठाकरे की शिवसेना ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखकर 22 जनवरी को नासिक में पार्टी कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है। दरअसल शिवसेना (यूबीटी) ने 22 जनवरी को नासिक के कालाराम मंदिर में धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया है।

इस दौरान महापूजन और महाआरती की जाएगी। पत्र में लिखा गया है कि भगवान राम का जन्म क्षेत्र अयोध्या है, लेकिन नासिक-पंचवटी दंडकारण्य उनका कर्म क्षेत्र है। वनवास के दौरान उनके यहां के आदिवासियों और वनवासियों से आत्मीय संबंध रहे हैं। भगवान राम की लीलाओं के प्रमाण आज भी यहां मौजूद हैं। उन्हीं प्रमाणों में नासिक का कालाराम मंदिर भी है। शिवसेना ने नासिक के कार्यक्रम में राष्ट्रपति को आमंत्रण भेजा है।

लाइव टीवी शो में प्रोफेसर की मौत

तिरुवनन्तपुरम, 13 जनवरी (एजेंसियां)। केरल के दूरदर्शन चैनल में एक लाइव शो के दौरान एग्रीकल्चर एक्सपर्ट की मौत हो गई। मृतक की पहचान डॉ. अनी एस दास (59 साल) के रूप में हुई है। घटना शुक्रवार यानी 12 जनवरी की है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बताया गया कि डॉ अनी शुक्रवार शाम करीब साढ़े छह बजे दूरदर्शन के कृषि दर्शन प्रोग्राम में भाग लेने आए थे। शो के एंकर ने उनसे सवाल पूछा। जवाब देने के दौरान डॉ अनी अचानक चुप हो गए और कुर्सी पर पीछे की तरफ झुक गए। इसके बाद एंकर ने तुरंत ब्रॉडकास्ट बंद करने को कहा। चैनल के कर्मचारियों की मदद से एक्सपर्ट को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। अभी तक उनकी मौत की वजह पता नहीं चली है। इस बारे में भी जानकारी नहीं है कि क्या वे किसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे।

राम नाम के जयकारे के साथ 'मौनी बाबा' तोड़ेंगे अपना 40 साल का मौन व्रत

बिना चप्पल के करते हैं यात्रा; निमंत्रण का कर रहे इंतजार

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या में 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया गया है। इस बीच मौनी बाबा ने अपना मौन व्रत तोड़ने का फैसला किया है। 10 साल की उम्र में न बोलने का संकल्प लेने वाले और राम मंदिर निर्माण के संकल्प के साथ वर्षों से नंगे पैर चलने वाले मौनी बाबा 22 जनवरी को भगवान राम के नाम का जाप करके अपना मौन तोड़ेंगे। मध्य प्रदेश के मौनी बाबा ने संकल्प लिया था कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण और रामलला की स्थापना तक वह चप्पल नहीं पहनेंगे।

मौनी बाबा 10 साल की उम्र से मौन धारण किया हुआ है

जैसे ही रामलला मंदिर में विराजमान होंगे, मौनी बाबा चप्पल न पहनने और न बोलने का संकल्प छोड़ देंगे। मौनी बाबा 10 साल की उम्र से मौन हैं, इसलिए लोग उन्हें 'मौनी बाबा' कहने लगे हैं।

मौनी बाबा ने नाम से मशहूर बाबा का नाम मोहन गोपाल दास है। 1992 वह अयोध्या में बाबरी मस्जिद का ढांचा हटाने वाले कार्य सेवकों के साथ मैदान में थे। उन्हें आशा और विश्वास है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें निमंत्रण भेजा होगा। निमंत्रण की आशा में वह प्रतिदिन पुलिस अधीक्षक कार्यालय और कलेक्टर कार्यालय जाते हैं। इसको लेकर उन्होंने जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को भी आवेदन भेजा है। मौनी बाबा सभी सवालों के जवाब स्लेट पर लिखकर देते हैं। मौनी बाबा का मूल स्थान सूर्य नगर पुलाव बालाजी है लेकिन वर्तमान में वह मध्य प्रदेश के दतिया के मंदिरों में रहते हैं। बता दें कि अयोध्या विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है। भारत से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी यात्री अयोध्या आ रहे हैं।

22 जनवरी को भव्य राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की मेजबानी की तैयारी के बीच मेक माई ट्रिप के प्रवक्ता कहा कि उद्घाटन के बाद से भारत से अयोध्या की सर्च में में 1,806 फीसदी की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा, "हमने पिछले दो वर्षों में अपने प्लेटफार्म पर आध्यात्मिक स्थलों की खोज में 97 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। उद्घाटन की घोषणा के बाद से भारत से अयोध्या के लिए ऑन-प्लेटफ़ॉर्म खोज में 1806 फीसदी की वृद्धि हुई है।"

कांग्रेस नेता मिलिंद देवड़ा शिंदे गुट में शामिल होंगे

मुंबई, 13 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता मिलिंद देवड़ा अपने समर्थकों के साथ महाराष्ट्र सीएम एकनाथ शिंदे गुट की शिवसेना में शामिल होने जा रहे हैं। उन्होंने शनिवार (13 जनवरी) को यह घोषणा की है। हालांकि, विधायक अमीन पटेल ने कांग्रेस छोड़ने से साफ इनकार कर दिया है।

कुछ दिन पहले ही देवड़ा ने शिंदे गुट में शामिल होने की अटकलों को खारिज किया था। उन्होंने कहा था कि वे कांग्रेस छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे। देवड़ा के साथ कुछ पूर्व नगरसेवक शिंदे गुट में शामिल होंगे। समें मौजूदा विधायक अमीन पटेल का भी जिक्र था, लेकिन उन्होंने साफ कर दिया है कि वह कांग्रेस नहीं छोड़ेंगे।

मिलिंद देवड़ा दिवंगत कांग्रेस नेता मुरली देवड़ा के बेटे हैं। मुंबई दक्षिण सीट से हमेशा से ही कांग्रेस जीतती आई है और देवड़ा परिवार कई साल से इस संसदीय क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। लेकिन इस सीट से सांसद उद्धव गुट के नेता अरविंद सावंत हैं। सावंत इस सीट से दो बार चुने जा चुके हैं। लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए में सीट शेयरिंग को लेकर चर्चा हो रही है। इस गठबंधन में उद्धव गुट की पार्टी शिवसेना (यूबीटी) भी शामिल है।

'वे भगवान राम से नहीं, बाबर से प्यार करते हैं', कांग्रेस पर फिर बरसे असम सीएम

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एजेंसियां)। राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में कांग्रेस नेताओं के जाने से इनकार के बाद पार्टी आलोचकों के निशाने पर है। अब असम सीएम हिमंता बिस्व सरमा ने कांग्रेस पर इसे लेकर तगड़ा निशाना साधा है।

असम सीएम ने कहा कि 'वे बाबर से प्यार करते हैं ना कि भगवान राम से। ऐसे में उन्हें निमंत्रण देने का फैसला ही गलत था। जिनकी भगवान राम में आस्था है, उन्हें ही कार्यक्रम के लिए निमंत्रण दिया जाना चाहिए। भगवान राम और बाबर में गांधी परिवार पहले बाबर को ही प्रणाम करेगा।'

कांग्रेस नेताओं ने राम मंदिर कार्यक्रम में शामिल होने से कर दिया था इनकार

बीते दिनों कांग्रेस ने आधिकारिक बयान जारी अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में नहीं शामिल होने की जानकारी दी थी। राम मंदिर ट्रस्ट की तरफ से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी और लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी को निमंत्रण भेजा गया था। हालांकि कांग्रेस पार्टी ने भाजपा पर राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाकर कार्यक्रम में शामिल होने से इनकार कर दिया।

केजरीवाल को ईडी के समन पर ये बोले

हिमंता बिस्व सरमा से जब ईडी द्वारा दिल्ली सीएम केजरीवाल को चौथी बार समन भेजने को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 'अगर आपको चौथी बार समन भेजा जा रहा है और आप नहीं जा रहे हैं तो इसका मतलब है कि आप अल्पकालिक तौर पर नहीं बल्कि स्थायी तौर पर जाना चाहते हैं।' ईडी ने दिल्ली शराब घोटाले में पूछताछ के लिए दिल्ली सीएम को यह समन भेजा है। इससे पहले ईडी केजरीवाल को 2 नवंबर, 21 दिसंबर और 3 जनवरी को भी समन भेज चुकी है, लेकिन किसी ना किसी कारण से केजरीवाल अभी तक ईडी के सामने पेश नहीं हुए हैं। आप का आरोप है कि ईडी केजरीवाल को समन के बहाने बुलाकर गिरफ्तार करना चाहती है। आप ने ईडी से अपने सवाल लिखकर देने की मांग की है। कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि 'असम में उनकी भारत जोड़ो न्याय यात्रा को दो जगह रात्रि विश्राम की इजाजत नहीं दी गई। कांग्रेस के इस आरोप पर हिमंता बिस्व सरमा ने कहा हमने सभी जरूरी इजाजत दी है। इसमें कोई समस्या नहीं है। हमें विपक्षी गठबंधन की बैठक से कोई समस्या नहीं है। वह सीटों का बंटवारा करते हैं या नहीं, यह उन पर है। हम चुनाव लड़ेंगे और जीतेंगे।'

सीएम मोहन यादव की सुरक्षा में बड़ी चूक

शहडोल, 13 जनवरी (एजेंसियां)। सीएम डॉक्टर मोहन यादव के शहडोल पहुंचने से पहले उनकी सुरक्षा में एक बड़ी चूक का मामला सामने आया है। एक अज्ञात व्यक्ति शराब पीकर नशे की हालत में पुलिस की वर्दी पहने सुरक्षा जवानों के बीच घुस गया और उनके बीच ही खड़ा था। वह दोपहर 12 बजे के आसपास उस प्वाइंट के पास जा पहुंचा, जहां से सीएम मोहन यादव को पॉलिटेक्निक मैदान में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रवेश करना था।

लड़कियों के बीच घुस गया फर्जी पुलिस

मध्य प्रदेश पुलिस की वर्दी पहनकर युवक पुलिस के सामने ही खड़ा होकर रौब दिखा रहा था। जिस गेट से सीएम यादव को प्रवेश करना था, उसी गेट से सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देने वाली लड़कियां प्रवेश कर रही थीं। उसी दौरान वह नशे की हालत में उनके बीच घुस गया और बात करने लगा। जब मीडियाकर्मियों ने पूछा की उक्त अज्ञात पुलिसकर्मी नशे की हालत में कैसे लड़कियों से बात कर रहा है, तभी वह भागने लगा। बड़ी बात ये थी कि अधिकारियों और पुलिसकर्मियों की मौजूदगी में वह निकलकर भागने लगा, लेकिन किसी भी पुलिसकर्मी ने उसे नहीं पकड़ा।

भोपाल में कुत्तों ने मचाया आतंक, सात महीने के बच्चे का हाथ खा गए

भोपाल, 13 जनवरी (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में कुत्तों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है. चार दिन पहले ही यहां एक कुत्ते ने एमपी नगर क्षेत्र में 21 लोगों को जख्मी किया था. वहीं अब कुत्ते एक सात महीने के बच्चे का हाथ खा गए. बच्चे का शव खून से लथपथ हालत में मिला है. ये घटना अयोध्या बायपास स्थित मीनाल रेसीडेंसी के गेट नंबर पांच के पास की बताई जा रही है. घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया है। दरअसल, आदमपुर छावनी निवासी महेन्द्र बाल्मीकी और उनकी पत्नी मीना रेसीडेंसी में साफ सफाई का काम करते हैं. वो बुधवार दोपहर में छत्री पार्क के पास काम कर रहे थे. इस दौरान उनकी बड़ी बेटी और सात महीने का बच्चा पार्क में था. बड़ी बेटी खेलते-खेलते दूर चली गई थी, जब वह लौटी तो बच्चा गायब था. बेटी ने मां-बाप को इसकी जानकारी दी. इसके बाद बच्चे की खोजबीन शुरू हुई.

'प्रभु राम तो सबके हैं, भाजपा का कॉपी राइट तो नहीं' : कीर्ति आजाद ने कसा तंज

दरभंगा, 13 जनवरी (एजेंसियां)। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेता व पूर्व सांसद कीर्ति झा आजाद ने दरभंगा स्थित आवास पर कहा कि राम मंदिर और भगवान राम किसी एक व्यक्ति के तो नहीं है, वे सबके लिए हैं। यह कोई जरूरी नहीं कि सभी आदमी 22 जनवरी को ही अयोध्या जाएं। यह लोगों कहना गलत है कि अगर 22 जनवरी को जो लोग अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में नहीं जाएंगे, वे सनातन धर्म के विरोधी हो जाएंगे।

'सुप्रीम कोर्ट के आदेश से हुई थी बड़ी प्रसन्नता'

पूर्व सांसद कीर्ति झा आजाद ने कहा कि जिस दिन सुप्रीम कोर्ट का आदेश मंदिर के पक्ष में आया था, तब बड़ी प्रसन्नता हुई थी। सभी जानते हैं कि हम लोग मिथिला से आते हैं, यह माता सीता की जन्म स्थली है और प्रभु श्री राम का ससुराल है। इससे बढ़कर हमारे लिए और प्रसन्नता की बात क्या होगी कि भगवान राम का भव्य मंदिर बनकर तैयार हुआ है। उसमें भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा की जा रही है। तृणमूल नेता ने कहा कि जरूरी नहीं कि हम 22 तारीख को ही वहां जाएं। अगर हम 22 जनवरी को अयोध्या नहीं जाएंगे तो सनातन धर्म के हम विरोधी कहलाएंगे, ये तो लोगों का कहना गलत है। अभी तो दो शंकराचार्य ने भी कहा कि अभी मंदिर पूरा बना नहीं है, अधूरा है। उन लोगों ने भी आने से इनकार कर दिया है तो क्या वे सभी सनातन विरोधी हैं, ऐसा नहीं है। इसे राजनीतिक रंग नहीं देना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब राम मंदिर पूरी तरह से तैयार हो जाएगा, मां सीता की तरफ से यहां से हम लोग लाखों की संख्या में अयोध्या जाएंगे और प्रभु श्री राम के दर्शन करेंगे। कीर्ति झा आजाद ने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि ये तो शुरू से पता है कि ये भाजपा के लोग धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाते हैं। लेकिन प्रभु राम तो सबके हैं। भाजपा का कॉपी राइट तो नहीं है। रामनवमी के दिन अवश्य जब तक मंदिर तैयार हो गया था, उस दिन करना चाहिए था क्योंकि उस दिन रामलला के छोटे बचपन की मूर्ति लग रही है। उसकी प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। आजाद ने कहा कि मैंने ऐसा नहीं कहा कि भगवान राम त्रेता काल से हैं। अगर मां सीता नहीं होतीं तो भगवान राम को भी ये प्रताप नहीं मिलता जो उन्हें मिला है। मुझे बड़ा अजीब लगता है कि जब लोग श्री राम बोलते हैं। लोग बोलते हैं गौरी शंकर, राधा कृष्ण, लक्ष्मी नारायण तो सिया राम क्यों नहीं। सिया के बिना तो राम अधूरे हैं।

आरोग्य ,ज्ञान और शक्ति के प्रतीक : भगवान सूर्य

(मकर संक्रांति के अवसर पर)

अतुल कुमार

सूर्य जीवन का अभिन्न भाग है दिनारंभ से सायं अस्त होने तक उनके प्रकाश में जीवन के अधिकतर काम संपन्न होते हैं .सूर्य जीवन को प्रकाशमान ,प्रगतिशील और प्रोन्नत बनाते है . उनके बिना जीवन की कल्पना असंभव है . उनके महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि शास्त्रों ने रात्रि प्रहर और सूर्योदय से ठीक पहले के समय को सबसे उत्तम मान उसका नाम ब्रह्ममुहूर्त रखा मन्यतानुसार इसी दौरान सभी देवी देवता पृथ्वी पर भ्रमण के लिये निकलते हैं अतः इस मुहूर्त में जागने वाले लोगों पर देवताओं की विशेष कृपा बरसती है वातावरण की सबसे अधिक पासिटिव एनर्जी इसी में होती है जो स्वास्थ्य , सौंदर्य और सोच को ऊर्जावान बनाती है , आयुर्वेद के अनुसार प्रातः काल की सैर करने से संजीवन शक्ति युक्त ,शुद्ध प्राण वायु का सेवन और स्पर्श नई शक्ति का संचार करते हैं जिससे बल बुद्धि और विद्या प्राप्त होती है सूर्य की पहली किरणों को सेहत के लिये अच्छा माना गया अतः सूर्य को जल चढाने का विधान प्रचलित है .

नैचुरोपैथी के अनुसार इसका वैज्ञानिक महत्व है कि सूर्य देव को जल चढाते समय सूर्य की ओर देखते हैं तो उससे निकलने वाली 7 तरह की किरणें आंखों पर पडती हैं जिससे आंखों की रौशनी बडती है सूर्य को अर्ध्य देते समय सीना सूर्य की ओर होता है जिसकी रौशनी सीधे ह्रदय पर पडती है जो गंभीर बीमारियों से बचाने में मदद्गार होती हैं .पुराणों में सूर्य का उल्लेख विश्व की आत्मा और ईश्वर की आंखों के रूप में किया गया. सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के प्रत्यक्ष दीखने वाले देवता हैं .वेदों की ऋचाओं में अनेक स्थानों पर सूर्योपासना के संदर्भ मिलते हैं . ज्योतिष शास्त्र के नवग्रहों में सूर्य को राजा का पद प्राप्त है .

सूर्य ज्ञान और स्वास्थ्य के देवता हैं शास्त्रानुसार हनुमान जी जब थोडे बडे हुए तो उनके माता पिता अंजनी और केसरी ने उन्हें सूर्य देव के पास भेजा ताकि वे सभी वेदों का ज्ञान प्राप्त कर सकें माता पिता की बात मान हनुमान जी सूर्य देव के पास पहुंच गये और सूर्य देवता से उनका गुरु बनने की विनती की इसे सुन सूर्य ने कहा मैं एक पल भी कहीं नहीं ठहरता हूं मेरा रथ भी लगातार चलता रहता है ऐसे में तुम्हें कैसे ज्ञान दे सकता हूं ! हनुमान जी ने कहा आप बिना रुके ही मुझे शिक्षा दीजीए आपके साथ चलते चलते ही मैं ज्ञान हासिल करूंगा सूर्य देव ने हनुमान जी की बात मानी और उन्हें सभी वेदों का ज्ञान और रहस्य बताए हनुमान जी ने सूर्य देव के दिये ज्ञान को ग्रहण किया . इस प्रसंग से यह सीख मिलती है कि जो व्यक्ति योग्य है उसे ही गुरु बनाएं .दूसरे ज्ञान जैसे भी मिले उसे पाना चाहिये और तीसरा सूर्य ज्ञान के देवता हैं अतः उनकी पूजा से ज्ञान और हुनर में सफल होने की शक्ति मिलती है .

एक और पौराणिक कथानुसार असुरों के व्यवहार से तंग आ कर देव माता अदिति ने सूर्य देव की तपस्या की और उनको अपने गर्भ से जन्म लेने की विनती की सूर्य देव ने वैसा ही किया और देवताओं के साथ असुरों का नाश किया . अदिति की कोख से जन्म लेने के कारण उन्हें आदित्य कहा गया . इसके अतिरिक्त भी उनके अन्य नाम हैं दिनकर , रश्मि . भुवनेश्वर , भानू , दिवाकर ,रवि ,आदि देव और प्रभाकर इत्यादि . सूर्य धनु राशि से निकल मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब मकर संक्रांति मनायी जाती है .सूर्य के मकर रेखा से उत्तरी कर्क रेखा की ओर जाने को उत्तरायण और कर्क रेखा से दक्षिणी मकर रेखा की ओर जाने को दक्षिणायन कहते हैं .शास्त्रों के अनुसार मकर संक्रांति के अवसर पर भगवान राम ने पहली बार पतंग उडायी उसी परंपरा को लोग आज भी श्रद्धा भाव से मनाते हैं .

सूर्य के रथ में सात घोडे होते हैं जिन्हें शक्ति ,स्फूर्ती और आरोग्य का प्रतीक माना गया . दिन के तीन प्रहर की सूर्योपासना को विशेष माना गया प्रातः काल की साधना से आरोग्य की प्राप्ति , दोपहर की साधना से मान सम्मान में वृद्धि और व्यवसाय की बढोतरी तथा संध्या से सौभाग्य तथा संपन्नता की प्राप्ति होती है . स्वयं प्रभु राम ने भी उनकी साधना की . रविवार का दिन भगवान सूर्य को समर्पित है इस दिन उनकी विशेष पूजा आराधना की

जाती है . न सिर्फ उदय होते हुए बल्कि अस्त होते समय भी सूर्य की उपासना की जाती है यह पूजा सूर्य षष्ठी पर्व पर होती है जिसे छठ पूजा के रूप में मनाया जाता है . पश्चिमी देशों में सूर्य की धूप में शरीर को सेंकने का प्रचलन अधिक है जिसे सन बाथ कहा गया . जिसमें सूर्य की किरणें नाडी तंत्र या स्नायुमंडल के संचालन को ऊर्जा प्रदान करती है वैज्ञानिकों के अनुसार यह कैल्शियम का बडा स्रोत है जो हड्डियों को मज़बूती देता है चर्म रोग तथा ग़ठिया में इसे लाभकारी माना गया .

सूर्य पूर्व में उगता है और पश्चिम में अस्त होता है . वास्तुकार सूर्योदय की दिशा को शुभ मानते हैं .सूर्य का व्यास पृथ्वी से 110 गुणा बडा है तथा इसका प्रकाश 8 मिनट 17 सेकंड में पृथ्वी पर पहुंचता है .मनुष्य ,पौधे , जानवर आदि सूर्य की किरणों के बिना विकसित नहीं हो सकते . पर्यावरण के संपूर्ण विकास के लिये यह आवश्यक है . सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं . इसकी गर्मी को इतना आंका गया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती . वह इतना विशाल है कि उसके अंदर 13 लाख से भी अधिक पृथ्वियां समा सकती हैं पूरे ब्रह्मांड में केवल पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव हो पाया जिसमें सूर्य का सबसे बडा योगदान है .पृथ्वी से 150 मिलियन कि मी दूर होने के बावजूद भी यह दुनिया को प्रकाश देता है .

यदि सूर्य की किरणें धरती पर न पहुंचे तो जीवन का वजूद खतरे में पड जाएगा पृथ्वी सूर्य के चारों ओर 24 घंटे में एक चक्कर लग़ाती है और इसी चक्र के चलते ऋतुओं का निर्माण होता है . आज इससे सोलर एनर्जी की बिजली को प्राप्त किया जा रहा है .सूर्य को प्राकृतिक चिकित्सालय कहा गया .मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिये जितनी शुद्ध हवा ज़रूरी है उतना ही प्रकाश भी आवश्यक है .सूर्य के प्रकाश में मानव शरीर के कमज़ोर अंगों को पुनः सशक्त और सक्रय बनाने की चमत्कारिक क्षमता है .शास्त्रानुसार " पिता की मौजूदगी सूरज की तरह होती है जो गर्म ज़रूर होता है अगर न हो तो अंधेरा छा जाता है " सूर्य मंत्र " ओम नमः सूर्याय शांताय सर्वरोग निवारिणे / आयु रारोग्य मैस्वर्य देहि देव; जगत्पते // है.

सूर्य आराधना के लिये इन 12 नामों को अति शुभ माना गया ऊं सूर्याय नमः . ऊं मित्राय नमः ,ऊं रवये नमः ,उं भानवे नमः , ऊं खगाय नमः ऊं पूष्णे नम : , ऊं हिरण्य गर्भाय नमः, ऊं मारीचाय नमः ,ऊं आदित्याय नमः , ऊं सावित्रे नमः , ऊं अर्काय नमः ,ऊं भास्कराय नमः रविवार को सूर्य व्रत की पौराणिक कथानुसार प्राचीन काल में एक बुढिया रहती थी जो सूर्य की अनन्य भक्त थी प्रति रविवार वह व्रत कर सूर्य भगवान को भोग लगाती उसका घर सदा धन धान्य से भरा होता . बुढिया को सुखी देख उसकी पडोसन उससे ईर्ष्या करने लगी बुढिया के पास कोई गाय नहीं थी इसलिये घर लीपने के लिये पडोसन से गोबर लाती थी . कुछ सोच पडोसन ने गाय को घर के अंदर बांध दिया रविवार को गोबर न मिलने के कारण बुढिया अपना घर नहीं लीप पायी और सूर्य भगवान को भोग नहीं लगा पायी और सूर्यास्त होने पर बुढिया भूखी प्यासी रह गयी .

रात्रि में सूर्य भगवान ने उसे स्वपन में दर्शन दिये और व्रत न करने का कारण पूछा बुढिया की परेशानी की वजह जान भगवान सूर्य ने उसे ऐसी गाय प्रदान की जिसने घर को धन धान्य से भर दिया पडोसन ने बुढिया के आंगन में गाय और बछडे को देखा तो और अधिक जलने लगी . तभी गाय ने सोने का गोबर किया जिसे देख वह और जलने लगी .पडोसन ने बुढिया को आसपास न देख वह गोबर उठा अपने घर ले गयी और अपनी गाय का गोबर वहां रख गयी सोने के गोबर से पडोसन कुछ ही दिनों में धनवान बन गयी .बुढिया को सोने के गोबर के बारे में कुछ भी पता नहीं चला सदा की भांति वह भगवान सूर्य देव का व्रत करती रही लेकिन जब सूर्य भगवान को पडोसन की चालाकी का पता चला तो उन्होंने तेज़ आंधी चलायी आंधी का प्रकोप देख बुढिया ने गाय को घर के अंदर बांध दिया सोने के गोबर से बुढिया कुछ ही दिनों में बहुत धनी हो गयी जिसे देख पडोसन जल भुन गयी उसने समझा बुझा कर अपने पति को राजा के पास भेजा राजा ने सैनिकों को भेज बुढिया की गाय लाने का आदेश दिया उन्होंने गाय बछडे को खोला और महल की ओर चल दिये बुढिया सैनिकों से गाय बछडे को न ले जाने के लिये अनुरोध किया , रोई चिल्लायी और उनसे प्रार्थना करती रही .सुंदर गाय को देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ जब राजा ने सोने का गोबर देखा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा .

उधर सूर्य भगवान को भूखी प्यासी बुढिया को इस तरह प्रार्थना करता देख उस पर बहुत करुणा आयी उसी रात भगवान सूर्य ने राजा को स्वप्न में कहा राजन ,बुढिया की गाय और बछडा तुरंत लौटा दो नहीं तो तुम पर विपत्तियों का पहाड टूट पडेगा तुम्हारा महल नष्ट हो जाएगा सूर्य भगवान के स्वपन से बुरी तरह भयभीत हो राजा ने प्रात; उठते ही गाय और बछडा बुढिया को लौटा दिया और उसको बहुत सा धन दे क्षमा मांगी राजा ने पडोसन और उसके पति को उनकी इस दुष्टता के लिये दंड दिया .फिर राजा ने पूरे राज्य में घोषणा कराई कि सभी लोग रविवार का व्रत किया करें रविवार का व्रत करने से सभी लोगों के घर धन धान्य से भर गये . और चारों ओर खुशहाली छा गयी . सूर्य आराधना से सभी निरोगी भी हो गये

पुरानी फिल्म "हरिश्चंद्र तारामती " के गीत की पंक्तियां है ' जगत भर की रौशनी के लिये करोडों की ज़िंदगी के लिये सूरज रे जलते रहना... " भगवान सूर्य उसी का साकार रूप हैं .

काव्य कुंज

टी तारासिंह
हैदराबाद

संक्रांति

हर ऋतु में भारत में होते त्योहारे
भारतीय हर त्यौहारों का आनंद लेते
औरते जमीन पर रंग बिरंगी रंगोली डालते
बच्चे बडे आसमां पर रंग बिरंगी पतंगें उडाते
इस माह में फसले काटी जाती
गाय बैलों को सजाया सवारा जाता
ठण्ड इस माह में बड़े जोरो की रहती
संक्रांति तीन दिनों का त्योहार मनाते
पहले दिन होता भोगी का, लोहरी का होता
दुसरा दिन संक्रांति का जिसे तिल संक्रांति भी कहते
अंतिम दिन पोंगल का, कनुमु का होता
ये है पुष्य मास के निराले त्योहार ।।

पर्व संक्रांति

आशा व विश्वास से सिंचित है पर्व संक्रांति
हर्ष व उल्लास से आमोदित है पर्व संक्रांति
ऐश्वर्य व अभ्युदय से आह्लादित है पर्व संक्रांति
वैभव व संपन्नता से उल्लासित है पर्व संक्रांति
आभा से आलोकित है पर्व संक्रांति
अद्भुत गुरूता से अनुग्रहित है पर्व संक्रांति
इंसानियत से प्रफुल्लित है पर्व संक्रांति
हैवानियत से विस्मृत है पर्व संक्रांति
रंगोली से पुलकित है पर्व संक्रांति
इंद्रधनुषी पतंगों से प्रहर्षित है पर्व संक्रांति
रंग बिरंगे परिधानों से आभूषित है पर्व संक्रांति
विविध व्यंजनों से सुस्जित है पर्व संक्रांति
रमणीय व अद्वितीय है पर्व संक्रांति
विस्मित व प्रशंसनीय है पर्व संक्रांति
प्रेरणीय व उल्लेखनीय है पर्व संक्रांति
संस्मरणीय व अविस्मरणीय है पर्व संक्रांति

दर्शन सिंह
हैदराबाद

रंगमंच

प्रतिमा सिंह
हैदराबाद

कितना अंतर है इस संगीत की धुन में,
ढोल बजते हैं दोनों ही उत्सवों में,
एक आने के वक्त, एक जाने के वक्त
ढोल वही होता है,
बजाने वाले हाथ भी वही होते हैं।
अंतर होता है तो बस धुन का,
जब आए थे इस दुनिया में,
तो चार हाथ लपक गए थे उठाने को,
नौ महीने के इंतजार के बाद जो आया था।
बेसब्र निगाहें लपकते हाथ
अपनी बारी के इंतजार में खड़े,
कब गोद में लूं , चुमूं , दुलारूं
वक्त गुजरे लम्हा बीता,
वो हाथों-हाथ घूमने वाला नन्हा बालक,
आज फिर से चार हाथों में है
अंतर है इन हाथों में,
उठाने को लपकते नहीं,लरजते हैं।
उत्सुकता नहीं बेसब्री है आंखों में बेबसी है,
आंसू है बिछड़ने का दर्द है ।
उत्साह नहीं, आगमन की खुशी नहीं,
कर्म से बंध कर उस पार पहुंचाने को विवश ये चार हाथ ।
जब मैं आया था, तो सजे सजाए कमरे
खिलौनों से भरे कमरे।
हंसकर स्वागत में खड़े थे,
आज गमगीन फूलों से सजी,
एक गाड़ी खड़ी है ले जाने को वहीं,
जहां से आया था रंगमंच पर अपना किरदार निभाया, पर्दा गिरा,
अब वापसी की तैयारी ढोलकी की एक जानी पहचानी धुन
जो इहलोक से विदा के वक्त बजाई जाती है।
और कुछ जोड़ी गमगीन आँखें।

राम नाम...

ओमकार सर्डिवाल

एक है नाम,
एक है धाम,
एक ही है राम,
भजले रे तू राम, राम, राम...
भजले रे तू राम, राम, राम...
जीवन तेरा,
यह जग सारा,
अब कहां है बसेरा,
भजले रे तू राम, राम, राम...
भजले रे तू राम, राम, राम...
ये है काया,
तुझ में बसी है माया,
देख तेरे हाथ,
क्या है आया,
भजले रे तू राम, राम, राम...
भजले रे तू राम, राम, राम...
किसके लिए है जीना,
बस राम के नाम को पाना,
तेरे लिए ही आए,
तुझ में ही मिल जाना,
भजले रे तू राम, राम, राम...
भजले रे तू राम, राम, राम...

विश्व भाषा हिंदी

केएल प्रभाकर प्राण

पंच सहस्त्र वर्ष की भाषा
प्राचीन निधि हिंदी भाषा
भारत की यह भव्य भाषा
नवरस साहित्य भाषा
सुधा स्वाद,नाद-सुराग भाषा
सुवर्ण,सुविशाल इतिहास की भाषा
आदिकाल की अमृत भाषा
वीरगाथाओं की विपुल भाषा
चंदबरदाई कीर्ति की चंदन भाषा
जगनिक की जनपद भाषा
विद्यापति के लोकगीत की भाषा
रीतिकाल की ख्याति भाषा
कविवर वृंद की नीति भाषा
भूषण का आभूषण भाषा
चिंतामणि का चिंतन मन की भाषा
बिहारी के गागर में सागर की भाषा
भक्तिकाल की मनभावन भाषा
भजन कीर्तन के पल्लव भाषा
संत कबीर के मानवीय मूल्यों की भाषा
सूर के कंठ में कृष्ण लीलाओं की भाषा
तुलसी के रामचरित की रमणीय भाषा
मीरा के हिय में घनश्याम के गान की भाषा
रैदास के पद में अमूल्य रत्न की भाषा
रहीम के नीति और प्रेम संदेश की भाषा
आधुनिक काल का यह आधार भाषा
भारतेंदु के निज उन्नति विचार के उन्नत भाषा
हरिऔध केरप्रिय प्रवास की प्रीति भाषा
प्रेमचंद का सम समाज के समर भाषा
यशपाल के यश गाने वाली क्रांति की भाषा
पंत के वर्णन में, प्रकृति की सरगम भाषा
आज्ञेय की यात्रा में नावों की भाषा
हिंदीतर भाषी, रंगेयराघव के संगी भाषा
दिनकर के कुरुक्षेत्र में धर्मोपदेश की भाषा
जयशंकर की ‘कामायनी’की कमनीय भाषा
लक्ष्मीबाई की शौर्यगाथा, सुभद्रा की रौद्र भाषा
विश्व पटल पर अटल बिहारी की भाषा
विजय ध्वज फहराने वाली भाषा
अनंत कलमों के आत्मीय भाषा
ज्ञानपीठ सम्मान की भाषा
छात्रों के पाठ ज्ञान की भाषा
है यह नवनीत की भाषा
आजादी की अमर कहानी की समर भाषा
स्वेच्छा त्रिवर्ण केतन की भाषा
राष्ट्र विकास चेतन की भाषा
राज-काज की राजभाषा
है जग के मन में हिंदी सीखने की दृढ़ अभिलाषा
विदेशी विश्वविद्यालयों में विराजमान है हिंदी भाषा
विश्व के कंठ में उच्चरित है हर-पल हिंदी भाषा
प्रपंच को प्राण पवन है हिंदी भाषा
आज जग भर जय जयकार सुन रही है हिंदी भाषा-

हैं संकल्पित

मन संकल्पित तन संकल्पित
जीवन का छण छण संकल्पित
देश धर्म के लिए जरूरी कतरा कतरा लहू समर्पित ।।
इस बलिदानी देश के जन-जन का बलिदान समर्पित
संकल्प ह्रदय में लिए हुए
देश के लिए प्राण समर्पित ।।
संकल्प का इतिहास पुराना
आर्यावर्त की धरा गवाह
बड़े-बड़े और धीर पुरुष के
संकल्प का कथा गवाह ।।
संकल्प लिया उस ध्रुव ने
प्रभु चरण ही था आधार
फिर ध्रुव तारा बन नील
गगन से दिखा रहे हैं जग को राह ।।
शबरी का संकल्प प्रभु के लिए संजोए मीठे बेर
और प्रभु भी निहाल हुए खाकर उनके जूठे बेर ।।
संकल्प लिया उस वीर लक्ष्मण ने भाई सेवा ही आधार
तीन लोक में नाम अमर कर भ्रातृ सेवा का बनाया मिसाल ।।
संकल्प लिया वीर हनुमंत ने स्वामी सेवा ही रहा प्रधान
नाम आधार बनाकर हीं हल किए हर असंभव काम ।।
संकल्प सीता उर्मिला का पति संग धरी सन्यासीनी वेश
चाहे सुख या दुख हो पति सेवा का किया मिसाल पेश ।।
दृढ़ संकल्पित थे गंगा पुत्र जिसने लिया कठिन संकल्प
जीवन के अंतिम क्षण तक राष्ट्रहित का रहा संकल्प ।।
अब इस युग में ना कोई शबरी ना कोई लखनलाल है
सीता उर्मिला सी ना कोई नारी ना भीष्म सा त्याग है ।।
फिर भी हम जैसे भी हैं भारत माता के हैं लाल
भारत की अस्मिता का रक्षा हमारा ही है प्रथम अधिकार ।।
चंद लोग इस पवित्र भूमि पर जो मिट्टी को है लजा रहे
सारी सुख सुविधा लेकर भारत से धोखा कर रहे ।।
अलख जगे अब पूरे भारत जन-जन हो जाएं सावधान
इन दुष्ट दंभी और प्रपंचीयों को
पहचानना ही हो अपना प्रथम काम ।।
अब इसका पहचान कर इसको दे इसका उचित इनाम
ताकि इसके आने वाली
नस्लें कर न सके भारत का नुकसान ।।

कमलेश झा

सुंदर

अमित पाठक

इतनी सुंदर भाव भंगिमा
अद्भुत रुप संवारा है,
प्रकृति ने कोमल हाथों से
तेरा रुप निखारा है,
है दीप्त किया रवि ने
तेरे नैनो की ज्योति,
उतरती गर कोई अप्सरा तो तेरे जैसी ही होती।
बातों में अलग सरलता है,मन तेरी ओर मचलता है,
तू मात कर रही शशि की शोभा, तूझे देख देख ये जलता है
है चांदनी धवल रात में अपनी आखिर यूं आभा खोती
उतरती गर कोई अप्सरा तो तेरे जैसी ही होती।
कंधो पर कुटुंब का भार लिया,तो जन जन को ही तार दिया,
हंसते हंसाते ही परिजन को ,
तूने पुष्पित पल्लवित किया मन को,
है श्वेत वर्ण और श्रृंगार
प्रबल रत्नों में तुम कोई बेशकीमती मोती,
उतरती गर कोई अप्सरा तो तेरे जैसी ही होती।
बच्चो के लालन पालन में , कई खुशियां लाई आंगन में
परिवार को यूं उपहार दिया , नया नवीन संसार दिया
तू खुद में सौम्य और श्रेष्ठ सदा,
हमसे तेरी उपमा भी नहीं होती
उतरती गर कोई अप्सरा तो तेरे जैसी ही होती।

मकर संक्रांति

गीता अग्रवाल
हैदराबाद

पृथ्वी पर सूर्य महिमा से ही जीवन संचार।
न होते सूर्य देव तो होता पृथ्वी ग्रह बेकार।।
सूर्य का मकर राशि में प्रवेश, देवे कई सन्देश
उत्तर की ओर उजाला चला,
सिमटा सब अंधकार।
लोहड़ी,पोंगल,माघी,
पोष संक्रांति,बिहू हैं नाम
नाम अनेक काम एक, हिन्दू धर्म,पवित्र ज्ञान भंडार।।
सुबह गंगा में डुबकी लगायें,मिले पापों से छुटकारा ।
जीवन सफल बनाने को, हैं ये अद्भुत उपचार।।
गुड़, तिल ,मूंगफली,गुड़ पकवान व खिचड़ी दान,
क्योंकि खेत खलियान पक कर बरसा रहे जो प्यार।
संतुलन ऐसा हर वर्ष का ख़ास यह निश्चित दिन।
खास दिन की खास बातें सौर चक्रा अनुसार।।
आसमां पर नजर मिलाने का दिन भी आया।
पतंग डोर ने हवा के साथ जोड़े अनोखे तार।।
पतंग डोर सहारे ,अपने सपनों को पंख लगाएं ।
आसमान में झूमती पतंगों में हौसलों की बहार।।
सौहार्द व भाई चारे से ओत प्रोत मकर संक्रॉंति ,
'गीता' विश्व शांति की रखे हर कोई कामना बेशुमार।

राम

रेणुका अग्रवाल

अवध पधारे राम राम
दशरथ दुलारे राम राम
कौशल्या सहारे राम राम
सीता के प्यारे राम राम
गुरुकुल जाते राम राम।
राक्षस संहारे राम राम।
शिवधनुष तोड़े राम राम।
है सीता पति राम राम।
पिता वचन निभाये राम राम। वनवास को जाते राम राम।
लखन भी संग जाते राम राम। गंगा पार कराते राम राम।
केवट को तारे राम राम। उतराई देते राम राम।
केवट नही लेते राम राम। भवसागर से तारो राम राम।
मृग को मारे राम राम। मरीची था वो मारे राम राम।
हरि अनंत कथा राम राम। मन्दिर बनाते राम राम।
राम आये हमारे घर अँगना। अक्षत भिजाये देखो घर मा।
कण कण में बिराजे राम राम। पत्थर छूते राम राम।
पत्थर से निकली अहिल्या। सब कारज करते राम राम।
मन भी हर्षाते राम राम। हवा संग बहते राम राम।
दीन दुःखियों के प्राणों में बसते।बालक की सूरत में हँसते।
मर्यादा के प्रतीक राम राम। सतयुग लाये राम राम।
चलो अयोध्या, संग सबको लेकर।
सब हाथ मे टैटू बनवाते, भक्ति प्रेम प्रीत दिखाते।
जन जन को सुहाते। रोम रोम में बसते राम राम।
मोदी ने सनातन परंपरा निभाई, फ़िर से धरती माँ हरषाई।
जनक नन्दिनी राम प्यारी। राम मंदिर में पधारी।
संग लखन भ्राता। बजरंग भी कहे राम राम।

चली कैसी हवा,दिल धड़कते नहीं

संजीव ठाकुर,
रायपुर

चली कैसी हवा,दिल धड़कते नहीं,
राख हो गए क्या, दहकते नहीं।
पंछी मासूम से इन फिजाओं के,
आजकल सजर में चहकते नहीं।
है गुलाबी मिलन, विरह काला,
मौसम की तरह रंग बदलते नहीं।
नाजुकी सिरे से गायब चुकी है,
फूल कागज के कभी महकते नहीं।
न जाने कैसी सदी है यह संजीव,
इश्क में रहकर दिल धड़कते नहीं।

ये कैसे रिश्ते हैं

डॉ. चक्रपाल सिंह
हैदराबाद

ये कैसे रिश्ते हैं
जिन्हें हम चाहते हैं
वो हमें नहीं चाहते
जो हमें चाहते हैं
हम उन्हें नहीं चाहते
आखिर! रिश्तों में हम क्या चाहते हैं ?
सब को सबसे शिकायत
कभी किसी को, कभी किसी से
हर किसी को शिकवा, शिकवा ही शिकवा
कभी किसी का, कभी किसी का
हम रिश्तों में भी रिश्ते खोजते हैं
कोख का, जाति का, धर्म का
पार्टी का, तो कभी वर्ग का
बस ! हम रिश्तों में रिश्ते नहीं खोजते
इसके अलावा सब कुछ खोजते हैं
हम रिश्ते निभाते हैं या फिर ढोते हैं
सच में ! क्या रिश्ते सिर्फ ढोने
या फिर निभाने के होते हैं
रिश्ते छल कपट नहीं विश्वास से होते हैं
रिश्ते तो रिश्ते हैं, रिश्ते तो रिश्तों से हैं
रिश्ते ख़ून के मोहताज़ नहीं होते
रिश्ते तो जीने के लिए होते हैं
आखिर! रिश्तों को हम जीना क्यों नहीं चाहते
कभी इस बहाने, कभी उस बहाने
रिश्ते बहानों से नहीं, जज़्बात से जिए जाते हैं
रिश्तों को रिश्ते रहने दें
इन्हें कोई इल्जाम न दें
तो आएं हम
रिश्तों को रिश्तों की तरह जीते हैं
एक सब के लिए, सब एक के लिए
होकर जीते हैं
रिश्ते तो रिश्ते हैं
रिश्तों को खुलकर जीते हैं ।

संक्राति

डॉ शोभा भंडारी
हैदराबाद

मज़दूर की अंगीठी से निकले धुंए के छल्ले,
जब व्योम पाश से टकराते,
ऊर्जा स्फूर्ति उष्मा से आल्हादित हो मुस्काते।
दूरदराज़ घने जंगल में,
किसान की कुटिया में,
चूल्हा और धौंकनी मिल,
नववर्ष गान गरमाते हैं ।।
देशी ढाबे की भट्ठी से,
जब गरम गुबार निकलते हैं,
आशा से संचारित हो,
मन द्विगुणित ऊर्जा पाते हैं ।।
नये साल का नव उत्सव,
घर घर में प्रचलित प्रसरित हो
पाँच सितारा गगनचुंबी से,
माटी की सौंधी कुटिया तक,
हर मन चंचल चपलित हो,
नवचेतन गान सुनाता है,
प्रकृति का स्नेहाशीष पाकर,
वो जीवन ज्योति जगाता है ।
मकर राशि में प्रवेश कर,
सूर्य देव इठलाता है!!!!

गीत नयां साल है नईं सवेर

-बलविंदर सिंह,
गुरदासपुर

गुलशन में फूलों के ढेर।
नयां साल है नई सवेर।
मुबारिक धरती अम्बर को।
मानवता के मन्दिर को।
अभिवादन से भरी चंगेर।
नयां साल है नई सवेर।
आधुनिकता के रंग नएं।
विज्ञानक के ढंग नए।
आया सूरज गया अंधेर।
नयां साल है नई सवेर। रूठे यार मना ले यार।
गिरते लोग उठा ले यार। अब न कर तू ज्यादा देर।
नयां साल है नई सवेर। ईमानदारी नेकी सलाम।
सच का दुनियां में है नाम। मेहनत से सोने के हेर।
नयां साल है नई सवेर। सरहदों के शुभआशीष।
सबका मालिक है जगदीश।
रक्षा करती है फौज दलेर।नयां साल है नई सवेर।
विद्या घर-घर पैर धरे। झुग्गियों में भी लौ करे।
बालम बुद्धि मीठे बेर। नयां साल है नई सवेर।

पागलपन

हेमंत सुराना

होश में जीने का,
एक पागलपन छाया है
कुछ कर गुजरने का,
एक जुनून दिल में आया है
लक्ष्य को पाने के लिए,
जिद्दी बनना पड़ता है
पागलपन कदर हो,ना कुछ पाना हो,
ना कुछ खोना हो, दिल की धड़कन तेज़ हो,
ना उसकी फ़िक्र हो बचपना कहो या जिद्दीपन,
हट कहो या पागलपन विचलित ना होना तुम
संकट में एकजुट हो जाना,इस भीड में शामिल हो जाना
उम्मीद जगाना, गुस्सा बुझाना
संभल कर चलना, खुद से बातें करना
हर एक में पागलपन है, सिर्फ जगाने की देर है,
सिर्फ जगाने की देर है ।

स्वतंत्र वार्ता
काव्य कुंज ब्लॉग
AGA, Publications, Ltd,
396, Lower Tankbund,
Hyderabad-500080

अयोध्या के ठाकुर 500 साल बाद पहनेंगे पगड़ी

बाबर की सेना से हारने के बाद ली कसम, राममंदिर उद्घाटन से पूरी होगी

अयोध्या से 15 किमी दूर सरायरासी गांव में बड़े उत्सव की तैयारी चल रही है। 22 जनवरी को प्रधानमंत्री मोदी राम लला की प्राण प्रतिष्ठा करेंगे, तब गांव में 1100 सूर्यवंशी ठाकुर जीवन में पहली बार पगड़ी पहनेंगे। महिलाएं घी के दीपक जलाएंगी। सरायरासी गांव में 90% घर सूर्यवंशी ठाकुरों के हैं, जो खुद को श्रीराम का वंशज मानते हैं।

ये खुशी राममंदिर बनने की तो है ही, 500 साल पुरानी एक कसम पूरी होने की भी है। कसम क्या थी, सरायरासी के चंद्रभूषण सिंह इसकी कहानी सुनाते हैं। 90 हजार क्षत्रियों ने मीर बाकी का मुकाबला किया, 80 हजार मारे गए ये बात साल 1528 की है। मुगल बादशाह बाबर का सेनापति मीर बाकी अयोध्या में एक मस्जिद बनवा रहा था। इसके लिए उसने रामकोट, यानी राम के किले को चुना। यहां पहले से भगवान राम का मंदिर था, जिसे मीर बाकी ने तुड़वा दिया। सरायरासी गांव के ठाकुर गजराज सिंह को ये बात खाए जा रही थी।

उन्होंने 90 हजार क्षत्रियों को इकट्ठा किया और मीर बाकी की सेना से लड़ने निकल गए। दोनों सेनाओं में 10 दिन तक युद्ध चला। 80 हजार सूर्यवंशी मारे गए। इस लड़ाई में ठाकुरों की हार हुई।

युद्ध हारकर ठाकुर गजराज सिंह गांव लौटे तो उन्हें महिलाओं ने खूब धिक्कारा। सूर्यवंशियों की शान मानी जाने वाली पगड़ी की ओर इशारा कर कहा- जब तुम लोग मंदिर नहीं बचा पाए, तो ये पगड़ी किसी काम की नहीं है। इसे उतारकर फेंक दो।

तब ठाकुरों ने सौगंध ली कि जब तक राम लला का मंदिर नहीं बन जाता, पगड़ी नहीं पहनेंगे। कभी सिर नहीं ढकेंगे। 500 साल बीत गए, सूर्यवंशी ठाकुरों के 126 गांवों में किसी ने पगड़ी नहीं पहनी।

इस पर एक कवि जयराज ने लिखा, 'जन्मभूमि उद्धार होय ता दिन बड़ी भाग। छाता पग पनही नहीं और न बांधहिं पाग।

8 पीढ़ियां इस कहानी को सुनते हुए, अपने पुरखों की सौगंध को निभाते हुए गुजर गईं। अब 9वीं पीढ़ी राम मंदिर बनते देख रही है।

चंद्रभूषण सिंह ठाकुर गजराज सिंह की 9वीं पीढ़ी हैं। उन्हें खुशी है कि उनके पूर्वजों की कसम पूरी होने का वक्त आ गया है। यही खुशी सूर्यवंशी ठाकुरों के 126 गांवों में है। इन गांवों में 500 साल से बेटियों की शादियों में मंडप नहीं छाया जाता। लड़के दूल्हा बनकर भी पगड़ी नहीं पहनते। न कोई चमड़े के जूते पहनता है और न ही शान दिखाने वाला कोई काम होता है।

बाबर की सेना से लड़ने वाला गांव

सरायरासी गांव अयोध्या से पूरा बाजार ब्लॉक में है

आबादी: 8100	5500 पुरुष, 2500 महिलाएं
सरकारी स्कूल: 3	400 घरों में 350 घर ठाकुरों के
डिग्री कॉलेज: 1	आंगनबाड़ी केंद्र: 3

ब्रिटिश राइटर कनिंघम ने लखनऊ गजेटियर के 66वें अंक के पेज नंबर-3 पर लिखा है कि अयोध्या के मंदिर पर मुगलों के आधिपत्य की जानकारी मिलते ही करीब 6 मील दूर बसे सूर्यवंशीय क्षत्रियों ने बाबर की सेना पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में हजारों हिंदू शहीद हो गए और बाबर की सेना जीत गई। सेनापति मीर बाकी मंदिर ध्वस्त करने के अभियान में कामयाब हो गया।

8 हजार आबादी, राम मंदिर से 14 कोस में फैले गांवों में सबसे बड़ा है सरायरासी

सरायरासी गांव की कुल आबादी 8 हजार है। ये राम मंदिर से 14 कोस में फैले गांवों में सबसे बड़ा गांव है। हमने यहां की माया सिंह से बात की। वे अयोध्या पर रिसर्च कर रही हैं।

माया कहती हैं, 'सूर्यवंशियों को सबसे ज्यादा प्यारा उनका बाहुबल था। अपनी शान दिखाने के लिए वे सिर पर पगड़ी पहनते थे। यही वजह है कि मीर बाकी से हारकर ठाकुर गजराज सिंह की सेना गांव लौटी तो महिलाओं ने उन्हें अपनी पगड़ी उतार फेंकने के लिए कहा।'सरायरासी गांव में पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी सिर नहीं ढंकने की कसम का पालन करती हैं। गांव में कोई नई बहू आती है, तो उसे पूरा घूंघट नहीं करने दिया जाता। इसके पीछे महिलाओं की मान्यता है कि जब तक रामलला का छत्र नहीं सज जाता, वे भी पूरा सिर नहीं ढंकेंगी।

गांव की सपना सिंह ये परंपरा निभाने का किस्सा सुनाती हैं। वे बताती हैं, '20 साल पहले मैं यहां बहू बनकर आई थी। मैंने देखा कि यहां शादी का मंडप नहीं है। घर में शादी जैसा कोई जश्न भी नहीं था। मुझे ये बात बहुत अजीब लगी। मैंने सास से पूछा कि ऐसा क्यों हैं?

उन्होंने मुझे उस कसम के बारे में बताया। बोलीं- यहां के लोगों ने संकल्प लिया है। रामजी का मंदिर बन जाएगा, तभी मंडप छाया जाएगा। लोग पगड़ी पहनेंगे।'चाहे ठंड हो या गर्मी, कोई सिर नहीं ढंकता, प्रतिज्ञा के लिए कारसेवा भी की गांव के प्रमोद सिंह ठाकुर कहते हैं, 'सूर्यवंशियों के परिवार अयोध्या के आसपास 14 कोस में फैले हुए हैं। इन गांवों के लोग अब भी 500 साल पुरानी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं। कितनी भी गर्मी हो, सर्दी पड़े, यहां कोई सिर नहीं ढंकता।'

सरायरासी के हर घर में कारसेवकों की कोई न कोई कहानी है। यहां रहने वाले बताते हैं कि राम मंदिर आंदोलन के लिए देशभर से कारसेवा के लिए लोग अयोध्या पहुंच रहे थे। उनके खाने और रहने का इंतजाम गांव वाले ही करते थे।

सरायरासी उस वक्त हॉट स्पॉट बना हुआ था। पुलिस की सबसे ज्यादा गाड़ियां इसी गांव में गश्त लगाती थीं। यहां के लोगों को हर रास्ता मालूम था, जिनके जरिए अयोध्या से पुलिस की नजरों में आए बिना भागा जा सकता था। चंद्रभूषण सिंह के पिता कनिकराम भी कारसेवा में शामिल थे। वे कहते हैं, 'अयोध्या में कारसेवा चल रही थी, तब गांव से कारसेवकों के जत्थे में मेरे बाबा कनिकराम सिंह भी जाते थे। बाबा को गोली भी लगी थी। 3 साल पहले उनका निधन हुआ है।''उस वक्त कारसेवकों के लिए गांव में खाना बनाया जाता था। लोग दिन में कारसेवा करते और रात में साथ बैठकर खाना खाते थे। इसी दौरान अगले दिन की प्लानिंग की जाती थी। किसको क्या काम दिया जाएगा, सब यहीं से तय होता था।'

चंद्रभूषण सिंह कहते हैं, 'मैं तब तीन साल का था। मुझे तो कुछ याद नहीं, पर पिताजी बताते थे कि उस वक्त अयोध्या का माहौल बहुत गर्म था। पिताजी के साथ सरायरासी से बहुत लोग कारसेवा में लगे थे। भीड़ बेकाबू हुई तो पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। पिताजी साथियों के साथ छिपते-छिपाते मस्जिद के पास पहुंच गए थे। तभी पुलिस ने अनाउंसमेंट किया कि आप लोग नीचे आ जाओ, नहीं तो हमें गोली चलानी पड़ेगी।'

'गांववाले जानते थे कि पुलिस इतनी जल्दी फायर नहीं करेगी। रबर बुलेट या आंसू गैस के गोले चलाएगी। पुलिस ने पहले आंसू गैस के गोले दागे। फिर रबर की गोलियां चलाईं। एक गोली पिताजी के पैर में लगी और वे बेहोश हो गए। पिताजी के साथियों ने उन्हें उठाया और पुलिस से बचाकर उस जगह से दूर ले गए।'

ठाकुर गजराज सिंह के वंशज चंद्रभूषण सिंह कहते हैं, '22 जनवरी की तारीख हमारे लिए त्योहार से कम नहीं है। हम लोग खुद को किस्मतवाला मानते हैं, क्योंकि हमारी पीढ़ी राम लला का मंदिर बनते देख रही है। हमारे जिंदा रहते 9 पीढ़ियों से चली आ रही कसम पूरी होने वाली है।'

गांव में रहने वाली साधना सिंह राम मंदिर के उद्घाटन समारोह से पहले घर की रंगाई-पुताई करवा रही हैं। वे कहती हैं, 'भगवान अपने नए घर में जा रहे हैं। मैं भी अपने घर को सजा रही हूं। खुशी की बात है कि इतने साल बाद गांववालों का संकल्प पूरा होने जा रहा है। अब हम साल में एक नहीं, बल्कि 2 बार दीपावली मनाएंगे।'

राम मंदिर उद्घाटन में अभी 2 हफ्ते से ज्यादा का वक्त बाकी है, लेकिन अयोध्या के गांवों में उत्सव मनाया जा रहा है। जगह-जगह रामायण और सुंदर-कांड का पाठ चल रहा है। लोग श्रीराम का भजन गा रहे हैं, खुशी मना रहे हैं। यहां रहने वाले संपन्न घरों के लोग मंदिर बनने से पहले विशाल भंडारा कर रहे हैं।

अयोध्या की जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह कहती हैं, 'सरायरासी के गायत्री मंदिर में 1100 सूर्यवंशियों को पगड़ी धारण कराने की रस्म अवध का क्षत्रिय समाज पूरे रीति-रिवाज से पालन करेगा। गांव-गांव जाकर पगड़ियां बांटी जाएंगी।'

रोली सिंह आगे कहती हैं, '500 साल बाद टूट रही इस प्रतिज्ञा से महिलाएं भी बेहद खुश हैं। राम मंदिर में राम लला के विराजते ही महिलाएं दिन में सुंदरकांड और रामायण की चौपाइयों का पाठ करेंगी और रात में दीपदान उत्सव मनाया जाएगा। सभी 126 गांवों में घी के दीपक जलाए जाएंगे।'

भारतीय कृषि में बदलाव, कृषि ड्रोन का उदय

कुमार निशांत

विकसित भारत संकल्प यात्रा और केंद्रीय योजनाओं के हिस्से के रूप में, कृषि ड्रोन की शुरूआत ने कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग लगाई है। जब मैं विकसित भारत संकल्प यात्रा सहित केंद्रीय योजनाओं के अध्ययन हेतु गुजरात पहुंचा तो बताया गया कि इस राज्य में विकसित भारत संकल्प यात्रा का 95% कार्य पूरा हो चुका है।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 तक भारत को विकासशील देश से विकसित देश बनाने का लक्ष्य रखा है। वह पूरा होता दिख रहा है।गुजरात जिला के मेहसाणा गांव में चल रहे संकल्प यात्रा के कार्यक्रम के तहत लाभान्वितों ने बताया कि मुझे आयुष्मान भारत योजना के तहत पांच लाख तक का स्वास्थ्य बीमा हो, उज्ज्वला योजना के तहत मिलने वाला फ्री गैस चूल्हा या वन नेशन, वन राशन कार्ड के तहत जरूरतमंदों को अनाज उपलब्ध कराना हो, यह सब लोगों को सुनिश्चित कराया जा रहा है। वहां स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को इन सब योजनाओं की जानकारी दी जा रही है साथ ही इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के विषय में लोगों को जागरूक किया जा रहा है। एक चीज वहां देखा गया कि जो भी गांव में स्कूल है उसमें वहां के ग्रामीणों का पूरा सहयोग रहता है। यदि गांव का कोई सेट है तो वह स्कूल के विकास के लिए कुछ ना कुछ योगदान करता है जिससे स्कूल की व्यवस्था अच्छी रहती है। जहां कृषि पद्धतियों में कृषि ड्रोन का एकीकरण अधिक आधुनिक और कुशल कृषि क्षेत्र की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। प्रौद्योगिकी का अभिसरण, सरकारी पहल और किसानों की सक्रिय भागीदारी एक ऐसे भविष्य को आकार दे रही है जहां सटीक खेती आदर्श बन जाएगी, जो टिकाऊ कृषि और राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान देगी।अहमदाबाद से विजापुर के हरे-भरे खेतों तक की मेरी यात्रा एक मनमोहक ध्वनि से बाधित हुई। मैंने किसानों को नैनो-यूरिया के सटीक अनुप्रयोग के लिए ड्रोन का उपयोग करते हुए पाया। एक ग्रामीण क्षेत्र में इस नई तकनीक की उत्साहपूर्ण स्वीकृति को देखकर मुझे संतुष्टि की भावना से भर दिया गया, क्योंकि यह भारतीय कृषि में 'ड्रोन पल' के जन्म का संकेत दे रहा था।किसानों ने बताया कि उन्होंने 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के दौरान कृषि ड्रोन के बारे में ज्ञान प्राप्त किया और यह नवीन तकनीक उनके खेतों में उर्वरकों और कीटनाशकों के सटीक अनुप्रयोग के लिए अत्यधिक प्रभावी साबित होती है। यह भारतीय कृषि में पारंपरिक बैल-चालित तरीकों से कृषि ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए एक आदर्श बदलाव को दर्शाता है।1960 के दशक की हरित क्रांति के बाद से कृषि क्षेत्र विकसित हुआ है, जो नई कृषि मशीनरी, उच्च उपज वाली किस्मों, कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से चिह्नित है। अब, कृषि ड्रोन का उपयोग कृषि क्रांति की तीसरी लहर की शुरुआत कर रहा है, जिससे दक्षता और उत्पादकता बढ़ रही है।ड्रोन दीदी पहल में स्पष्ट है। 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के दौरान शुरू की गई इस पहल में उर्वरकों के आसान और किफायती उपयोग के लिए किसानों को किराए पर ड्रोन उपलब्ध कराने की योजना है। चयनित महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को ड्रोन वितरित करके, कार्यक्रम न केवल ड्रोन प्रौद्योगिकी तक पहुंच की सुविधा प्रदान करता है बल्कि महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण समृद्धि में भी योगदान देता है।किसी भी नई पहल के सफल कार्यान्वयन के लिए प्रभावी संचार सर्वोपरि है। 15 नवंबर, 2023 को शुरू हुई 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' ने देश भर में ड्रोन को एक प्रमुख आकर्षण के रूप में प्रदर्शित किया है। इन प्रदर्शनों ने किसानों के बीच रुचि जगाई है, जिससे उन्हें कृषि के लिए इस नए उच्च तकनीक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।कृषि ड्रोन प्रौद्योगिकी का आगमन हमारी कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने और बदलने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। हैंडपंपों के माध्यम से कीटनाशकों और उर्वरकों के मैन्युअल अनुप्रयोग के दिन, एक समय लेने वाली और थका देने वाली प्रक्रिया, धीरे-धीरे ड्रोन के कुशल और उत्पादक उपयोग का स्थान ले रही है। कृषि क्षेत्र में दक्षता और उत्पादकता में सुधार लाने, विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि पद्धतियों का आधुनिकीकरण महत्वपूर्ण है।

मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों के संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नरेंद्र मोदी का आह्वान हालिया पहलों के अनुरूप है। प्रधान मंत्री किसान सतत विकास केंद्र की स्थापना का उद्देश्य इन पहलों के बारे में जागरूकता पैदा करना और किसानों के लिए एकीकृत समाधान प्रदान करना है। विकसित नैनो-उर्वरक पारंपरिक रासायनिक उर्वरकों का बेहतर विकल्प पेश करते हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल और प्रभावी विकल्प प्रदान करते हैं। पारंपरिक यूरिया के 45 किलोग्राम के बैग से नैनो-यूरिया की आधा लीटर की बोतल में बदलाव से न केवल मिट्टी की गुणवत्ता बरकरार रहती है, बल्कि फसल की पैदावार में भी सुधार होता है। इस तकनीक की व्यापक स्वीकृति के लिए उपयोगकर्ता-अनुकूल एप्लिकेशन सिस्टम के विकास की आवश्यकता है, जिससे एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र तैयार हो जो किसानों और कृषि समुदाय को लाभ पहुंचाए।भारत में स्वदेशी और गतिशील स्टार्टअप्स द्वारा किसानों के लिए ड्रोन तकनीक का विकास तरल उर्वरकों के उपयोग के लिए एक प्रभावी और कुशल समाधान प्रदान कर रहा है। एक एकड़ कृषि भूमि पर मिनटों में छिड़काव करने की क्षमता उन किसानों के लिए एक वरदान है जो पहले मैन्युअल रूप से उर्वरक लगाने में घंटों खर्च करते थे। अपने हाथों में अधिक खाली समय होने से, किसान अपनी आय बढ़ाने और अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अतिरिक्त उत्पादक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। उसके बाद हमारी टीम गुजरात के केवड़िया स्थित नर्मदा नदी के डैम पर पहुंची। जहां स्टैचू ऑफ यूनिटी का निर्माण कराया गया है वह शेड्यूल ट्राइब क्षेत्र है। जहां की महिलाएं आज ई रिक्शा सहित कई रोजगार की काम कर रही हैं।नर्मदा नदी के डैम के पास केवडिया कॉलोनी के पास, एकता, शक्ति और शांति का प्रतीक, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जनता के लिए खुली है। लोग केवल इस मूर्ती के एक दृश्य एक लिए दूर दूर से यात्रा करके यहां पहुंच रहे हैं।इसकी परिकल्पना भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई थी। विविधता में एकता₹ की सच्ची भावना को दर्शाते हुए यहां सभी 7 महाद्वीपों की जड़ी-बूटियां, झाड़ियाँ और पेड़ शामिल देखने को मिलते हैं। इसमें दुनिया के हर महाद्वीप का प्रतिनिधित्व करने वाली वनस्पतियों का एक विविध संयोजन है। मोदी ने सरदार पटेल की प्रतिमा बनाने का फैसला किया। वह दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा बनाने की योजना के साथ आए ताकि सरदार पटेल के हमारे राष्ट्र में योगदान को न केवल भारतीयों द्वारा, बल्कि पूरे विश्व में याद किया जाए। सरदार वल्लभभाई पटेल की सबसे ऊंची मूर्ति गुजरात में बनाई गई है। जिसकी ऊंचाई 182 मीटर है और ये नर्मदा जिले में सरदार सरोवर बांध के पास साधु बेट टापू पर खड़ी है।

कभी आदित्य ठाकरे के करीबी थे स्पीकर नार्वेकर

16 विधायकों को किस आधार पर अयोग्य नहीं ठहराया, अब आगे क्या होगा

3 जुलाई 2022 को राहुल नार्वेकर महाराष्ट्र विधानसभा के स्पीकर चुने गए। कुर्सी संभालते ही उनके सामने सबसे बड़ा सवाल शिंदे गुट के 16 विधायकों की अयोग्यता पर फैसला करना था। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और वापस उनके पाले में गेंद आ गई।

आखिरकार, स्पीकर राहुल नार्वेकर आज यानी 10 जनवरी 2024 को एकनाथ शिंदे समेत 16 विधायकों की अयोग्यता पर फैसला सुना दिया है। स्पीकर ने कहा कि शिंदे गुट ही असली शिवसेना है। 16 विधायक अयोग्य नहीं किए जा सकते। ये फैसला उद्धव ठाकरे के लिए बड़ा झटका और महाराष्ट्र की शिंदे सरकार के लिए राहत भरी खबर है। राहुल नार्वेकर की कहानी जानेंगे। शिवसेना से राजनीति शुरू की, कभी आदित्य ठाकरे के करीबी रहे, एनसीपी से होते हुए कैसे बीजेपी पहुंचे और आज किस आधार पर विधायकों की अयोग्यता पर फैसला सुनाया...

राहुल नार्वेकर का परिवार राजनीतिक रूप से मजबूत है। उनके पिता सुरेश नार्वेकर पार्षद रहे हैं। भाई मकरंद नार्वेकर अभी भी पार्षद हैं। ससुर रामराजे नाइक निंबालकर NCP के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधान परिषद अध्यक्ष हैं। पेशे से वकील राहुल ने अपनी राजनीतिक पारी शिवसेना की यूथ विंग से की। शिवसेना में राहुल को आदित्य ठाकरे का विश्वासपात्र माना जाता था। आदित्य ने एक बार विधानसभा में भाषण के दौरान उनसे नजदीकियों का जिक्र किया था। राहुल अंग्रेजी अच्छी बोलते थे और टीवी चैनलों में शिवसेना का पक्ष रखा करते थे।

2014 लोकसभा चुनाव के दौरान राहुल नार्वेकर ने अपनी दावेदारी पेश की। हालांकि शिवसेना ने उन्हें टिकट नहीं दिया। इसके बाद राहुल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। एनसीपी ने राहुल को मावल लोकसभा सीट से टिकट दिया, लेकिन वो चुनाव हार गए। बाद में उन्हें विधान परिषद की सीट दे दी गई।

2019 में अचानक राहुल ने एनसीपी छोड़कर बीजेपी का दामन थाम लिया। बीजेपी ने राज पुरोहित जैसे वफादार कैंडिडेट को दरकिनार करते हुए कोलाबा विधानसभा सीट से राहुल नार्वेकर को टिकट दिया। वो 57 हजार से ज्यादा वोटों से जीतकर पहली बार महाराष्ट्र विधानसभा पहुंचे।

3 जुलाई 2022 में राहुल नार्वेकर महाराष्ट्र विधानसभा स्पीकर बने। उनके सामने शिंदे गुट के विधायकों की अयोग्यता का मामला पहुंचा। दिसंबर 2022 में एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल ने नार्वेकर पर सदन में बोलने न देने के आरोप लगाए। उस समय नार्वेकर ने पाटिल को विधानसभा के पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया था क्योंकि उन्होंने कहा था कि नार्वेकर को 'एक बेशर्म व्यक्ति की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए।'

सदन की कार्यवाही में पक्षपातपूर्ण होने का आरोप लगाते हुए नार्वेकर के खिलाफ कांग्रेस अविश्वास प्रस्ताव भी लाई थी। नार्वेकर डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस से निर्देश लेने के आरोप भी लगते रहे हैं। कुछ महीने पहले ये भी चर्चा थी कि

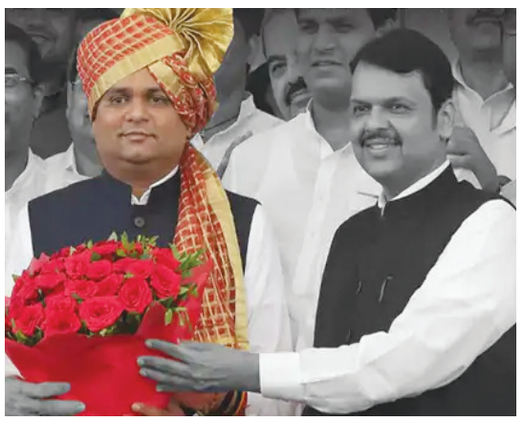

नार्वेकर दक्षिण मुंबई से लोकसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने इसका खंडन किया था।

इस पूरी कहानी की शुरुआत हुई थी एकनाथ शिंदे समेत 15 विधायकों की बगावत से। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह शिंदे और 15 अन्य विधायकों को तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ बगावत करने के लिए अयोग्य नहीं ठहरा सकता है। यह अधिकार स्पीकर के पास तब तक रहेगा, जब तक कि सुप्रीम कोर्ट की बड़ी बेंच इस फैसला नहीं सुना देती। सुप्रीम कोर्ट ने एक समय सीमा के अंदर इसका निपटारा करने को कहा है। महाराष्ट्र विधानसभा के मौजूदा स्पीकर बीजेपी के राहुल नार्वेकर हैं। उन्होंने करीब 7 महीने का वक्त लिया। इसके बाद 10 जनवरी 2024 को अपना फैसला सुनाया। स्पीकर ने कहा कि शिंदे गुट ही असली शिवसेना है। इसलिए विधायक अयोग्य नहीं किए जा सकते।

सुप्रीम कोर्ट वकील विराग गुप्ता के मुताबिक, जब चुनाव आयोग ने शिंदे गुट को शिवसेना दे दी थी और सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया था, उसी वक्त स्पीकर के इस फैसले की बुनियाद बन गई थी।

स्पीकर ने कहा कि शिवसेना का 2018 का संविधान चुनाव आयोग के पास नहीं था। जिसमें पार्टी प्रधान को ताकतवर बनाया गया था। 1999 के संविधान के मुताबिक शिंदे गुट के फेवर में फैसला दिया गया। विराग गुप्ता के मुताबिक चुनाव आयोग के पास संविधान भले नहीं था, लेकिन ये संविधान एग्जिस्ट करता था। 2018 में विधायक दल के नेता के रूप में शिंदे की भी उसमें सहमति थे। वो इस एडमिटेड फैक्ट से इनकार कैसे कर सकते हैं।

इस फैसले का महाराष्ट्र की राजनीति में क्या असर पड़ेगा?

महाराष्ट्र विधानसभा में इस वक्त 286 विधायक हैं। बहुमत के लिए 144 विधायक चाहिए। स्पीकर राहुल नार्वेकर के 16 विधायकों को अयोग्य घोषित न करने के फैसले के बाद विधायकों की संख्या में कोई बदलाव नहीं होगा। बीजेपी के 104, अजित पवार गुट के 41 और शिंदे गुट के 40 विधायकों के साथ शिंदे सरकार बरकरार रहेगी।

मकर संक्रांति

पर स्नान-दान के बाद जरूर पढ़ें यह कथा

साल 2024 में मकर सक्रांति 15 जनवरी दिन सोमवार को पड़ रही है। मां गंगा ने राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को मोक्ष प्रदान किया था।

सक्रांति के अवसर पर गंगा स्नान करने के बाद दान देने का विधान है। इससे पाप मिट जाते हैं, पुण्य प्राप्त होता है और मां गंगा के आशीर्वाद से जीवन के अंत में मोक्ष मिलता है। इस साल 2024 में मकर सक्रांति 15 जनवरी दिन सोमवार को पड़ रही है। उस दिन ब्रह्म मुहूर्त से स्नान और दान प्रारंभ हो जाएगा। मकर सक्रांति से ही प्रयागराज में माघ मेले की भी शुरूआत होती है। मकर सक्रांति के दिन स्नान, दान और पूजा पाठ करते हैं। उस समय आपको मकर सक्रांति की कथा जरूर पढ़नी चाहिए। यह कथा मां गंगा के मोक्ष प्रदान करने से जुड़ी है।

मकर सक्रांति की कथा

शिव पुराण समेत कुछ धार्मिक पुस्तकों में गंगा अवतरण की कथा है। पौराणिक कथा के अनुसार, इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर अपने धर्म पुण्य कार्यों के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया तो देवराज इंद्र ने उस यज्ञ के अश्व को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम के पास बांध आए। राजा सगर ने अपने पुत्रों को उस घोड़े की खोज में लगा दी। वे लोग अश्वमेध यक्ष के घोड़े को खोजते हुए कपिल मुनि के आश्रम पहुंच गए। उनको वह घोड़ा वहीं पास में बंधा हुआ दिखाई दिया। राजा सगर के पुत्रों ने कपिल मुनि पर अश्व चोरी करने का आरोप लगाया। इस बात से मुनि क्रोधित हो गए क्योंकि आरोप झूठा था। उन्होंने क्रोध में आकर राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को अपने श्राप से भस्म कर दिया। इस घटना से आहत राजा सगर कपिल मुनिक के आश्रम आए और उनसे क्षमा प्रार्थना की। कपिन मुनि ने कहा कि अब तो श्राप वापस नहीं हो सकता, लेकिन इन संतानों के मोक्ष के लिए गंगा को पृथ्वी पर लाना होगा। राजा सगर के वंशज राजा भागीरथ ने अपने कठोर तप से मां गंगा को प्रसन्न किया। मां गंगा ब्रह्म देव के कमंडल से निकलकर भगवान शिव की जटाओं से होती हुई पृथ्वी पर अवतरित हुईं। राजा सगर मां गंगा को कपिल मुनि के आश्रम लेकर आए, जहां उनके स्पर्श मात्र से ही राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को मोक्ष मिल गया। उनके पाप नष्ट हो गए। कहा जाता है कि जिस दिन मां गंगा ने राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को मोक्ष प्रदान किया, उस दिन मकर संक्रांति थी। इस वजह से हर साल मकर संक्रांति पर गंगा स्नान करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मकर संक्रांति पर गंगा जल अमृत के समान लाभकारी हो जाता है। इस वजह से लोग गंगा स्नान करते हैं।

हमने कभी भीतर खड़े होकर भी शरीर को नहीं देखा

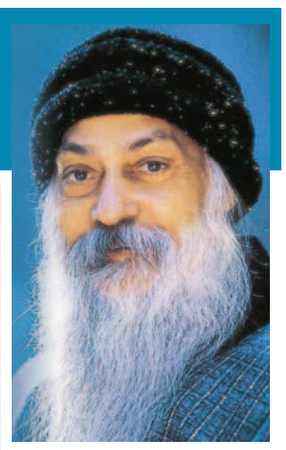

अलग कुआं खतरनाक है। लेकिन तब तक खयाल नहीं था। वजीर से राजा कहने लगा, क्या होगा अब? वजीर ने कहा, अब कुछ पूछने की जरूरत नहीं है। आप भागे पीछे के द्वार से, और गांव के उस कुएं का पानी पीकर जल्दी लौट आएं। अन्यथा यह महल खतरे में है। सम्राट ने कहा, उसे कुएं का पानी! क्या तुम मुझे पागल बनाना चाहते हो? वजीर ने कहा, अब पागल बने बिना बचने का कोई उपाय नहीं है। राजा भागा, उसकी रानियां भागी। उन्होंने जाकर उस कुएं का पानी पी लिया। उस रात उस गांव में एक बड़ा जलसा मनाया गया। सारे गांव के लोगों ने खुशी मनाई, बाजे बजाए, गीत गाए और भगवान को धन्यवाद दिया कि हमारे राजा का दिमाग ठीक हो गया है। क्योंकि राजा भी भीड़ में नाच रहा था और गालियां बक रहा था। अब राजा का दिमाग ठीक हो गया।

चूंकि हमारी नींद सार्वजनिक है, सार्वभौमिक है, क्योंकि हम जन्म से ही सोए हुए हैं, इसलिए हमें पता नहीं चलता है। इस नींद में हम क्या समझ पाते हैं जीवन को? इतना ही कि यह शरीर जीवन है। इस शरीर के भीतर जरा भी प्रवेश नहीं हो पाता। यह समझ वैसी ही है, जैसे किसी राजमहल के बाहर दीवाल के आसपास कोई घूमता हो और समझता हो कि यह राजमहल है। दीवाल पर, बाहर की दीवाल पर, चारदीवारी पर, परकोटे पर, परकोटे के बाहर कोई घूमता हो और सोचता हो कि राजमहल है। और परकोटे की दीवाल से टिक कर सो जाता हो और सोचता हो कि महलों में विश्राम कर रहा हूं। शरीर के आसपास जिनके जीवन का बोध है, वह उसी नासमझ आदमी की तरह हैं जो महल की दीवाल के बाहर खड़े होकर समझता है कि महल का मेहमान हो गया हूं। शरीर के भीतर हमारा कोई प्रवेश नहीं है, हम शरीर के बाहर जीते हैं। बस शरीर की पर्त, बाहर की पर्त.....। शरीर की, भीतर की पर्त तक का कोई पता हमें नहीं चलता। बस दीवाल के बाहर का हिस्सा... दीवाल के भीतर का हिस्सा ही पता नहीं चलता, महल तो बहुत दूर है। दीवाल के बाहर के हिस्से को ही महल समझते हैं, दीवाल के भीतर के हिस्से तक से परिचय नहीं हो पाता।

हम अपने शरीर को अपने से बाहर से जानते हैं, हमने कभी भीतर खड़े होकर भी शरीर को नहीं देखा है — भीतर से, फ्राम विदिन। जैसे मैं इस कमरे के भीतर बैठा हूं, आप इस कमरे के भीतर बैठे हैं। हम इस कमरे को भीतर से देख रहे हैं। एक आदमी बाहर घूम रहा है। वह इस मकान को बाहर से देख रहा है। आदमी अपने शरीर के घर में अपने को भीतर से भी देखने में समर्थ नहीं हो पाता है, बाहर से ही जानता है। और तब मौत पैदा हो जाती है। क्योंकि जिसे हम बाहर से जानते हैं, वह केवल खोल है। वह केवल बाहरी वस्त्र है। वह केवल मकान के बाहर की दीवाल है, घर का मालिक नहीं। घर का मालिक भीतर है। उस भीतर के मालिक से तो पहचान ही हमारी नहीं हो पाती। भीतर की दीवाल तक से पहचान नहीं हो पाती तो भीतर के मालिक से कैसे पहचान होगी?(**क्रमशः**)

बिना कुंडली दिखाए मकर संक्रांति पर न करें तिल का दान

शनि देव हो सकते हैं नाराज, ज्योतिष से जानें सबकुछ

दान पुण्य के लिए समर्पित साल का सबसे पहला और खास मकर संक्रांति का त्यौहार इस साल 15 जनवरी को मनाया जाएगा। मान्यता अनुसार मकर संक्रांति पर हर व्यक्ति जीवन में सुख – समृद्धि की प्राप्ति के लिए गंगा स्नान और दान पुण्य को सबसे ज्यादा महत्व देता है। इस त्यौहार के दान पुण्य में भी सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया गया है। इसलिए हर व्यक्ति तिल के दान को मकर संक्रांति के त्योहार पर सबसे ज्यादा करता है। लेकिन हर व्यक्ति के लिए मकर संक्रांति पर तिल का दान करना शुभ भी नहीं होता है। यह तिल का दान आपके जीवन पर विपरीत प्रभाव भी डाल सकता है। तो आइए जानते हैं ज्योतिषी से किन-किन लोगों को करना चाहिए मकर संक्रांति पर तिल का दान।

ज्योतिषी गिर्राज सोनी बताते हैं कि मकर संक्रांति पर तिल के लड्डू, चावल और खिचड़ी का दान आमचलन है। मकर संक्रांति पर यह दान का सभी के लिए ट्रेंड गलत है। हर किसी को बिना सोचे समझे इन तिल व अन्य चीजों का दान नहीं करना चाहिए। ज्योतिषी का कहना है कि मकर संक्रांति पर तिल का दान आपके लिए नुकसानदेय भी साबित हो सकता है। यह दान आपके चलते हुए कामों को रोक सकता है। इसलिए कुंडली के अनुसार ही इस त्यौहार पर दान करना चाहिए।

सिर्फ इन्हें करना चाहिए तिल का दान

ज्योतिषी गिर्राज सोनी ने बताया कि अबकी बार मकर संक्रांति 15 जनवरी सोमवार के दिन मनाई जाएगी और इस बार मकर संक्रांति पर तिल का दान केवल जिन लोगों का कर्क का शनि है उन्हीं को करना है। साथ ही ऐसे लोग जिनका कर्क का शनि है वे इस मकर संक्रांति पर काली जैकेट और काले लेदर के जूते का भी जरूरतमंदों के लिए दान कर सकते हैं। यह दान उनके लिए बहुत ही फायदेमंद साबित होगा।

सभी लोगों को नहीं करना चाहिए तिल का दान

ज्योतिषी का कहना है कि मकर संक्रांति पर तिल का दान आमचलन होने के साथ इसे हर व्यक्ति करता है। ऐसे में हर राशि का शनि अलग-अलग होता है। किसी का सिंह में, किसी का मिथुन में, किसी का कन्या में तो किसी का अन्य राशि में, इसलिए हर किसी के लिए यह तिल का दान शुभ नहीं होता है और मकर संक्रांति पर बिना सोचे समझे इसे करना नुकसानदेय भी हो सकता है।

कुंडली दिखाकर ही करना चाहिए दान

ज्योतिषी के मुताबिक हर व्यक्ति के लिए मकर संक्रांति पर दिल का दान जीवन पर विपरीत प्रभाव भी डालता है। अगर आपका शनि किसी दूसरे कक्ष में बैठा है तो इस तिल के दान से घटना दुर्घटना भी शनि की नाराजगी से निश्चित तौर से हो सकती है। ऐसे ही किसी का शनि नवम कक्षा में बैठा है तो उसका तो भाग्य ही तिल के दान से अवरोध हो सकता है और उनके चलते हुए काम भी रुक सकते हैं। इसलिए हर आम आदमी को यह दान नहीं करना चाहिए, बाकायदा कुंडली दिखाकर ही मकर संक्रांति पर दान करना चाहिए।

दुल्ला भट्टी के बिना अधूरा है लोहड़ी का त्योहार

देशभर में लोहड़ी का त्योहार बेहद हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से लोहड़ी पंजाब और हरियाणा में मनाया जाता है। वैसे तो हर साल लोहड़ी का त्योहार 13 जनवरी को पड़ता है लेकिन पंचांग के हिसाब से इस बार ये पर्व 14 जनवरी को मनाया जाएगा। वैसे तो अन्य त्योहारों की तरह लोहड़ी से जुडी कई लोक कथाएं प्रचलित हैं। इन लोककथाओं का ज़िक्र लोहड़ी के लोकगीतों में किया जाता है। उन्हीं लोकगीतों में एक नाम दुल्ला भट्टी का भी आता है। आइए जानते हैं दुल्ला भट्टी के बिना क्यों अधूरा माना जाता है लोहड़ी का पर्व।

क्या है दुल्ला भट्टी और लोहड़ी का संबंध

कुछ मान्यताओं के अनुसार, लोहड़ी को होलिका की बहन माना जाता है,जो भक्त प्रह्लाद के साथ आग से बच गई थी,जबकि अन्य मान्यताओं के अनुसार इस त्योहार का नाम लोई के नाम पर रखा गया था, जो संत कबीर की पत्नी का नाम था। इसीलिए लोग हर साल लोहड़ी मनाने के लिए आग जलाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं लोहड़ी का त्यौहार दुल्ला भट्टी के ऐतिहासिक चरित्र से जुड़ा हुआ है। आइए जानते हैं विस्तार से।

दुल्ला भट्टी एक राजपूत मुस्लिम था, जो कथित तौर पर पंजाब क्षेत्र से आया था। उसने अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था। किंवदंती के अनुसार, मुगल शासक हुमायूं ने दुल्ला के जन्म से चार महीने पहले उसके पिता फरीद खान और दादा संदल भट्टी की हत्या कर दी थी। विद्रोहियों के दिलों में भय पैदा करने के लिए दोनों की खालों को गेहूं की घास में भरकर भरवा गांव के बाहर लटका दिया गया। उनकी हत्या कर दी गई क्योंकि उन्होंने मुगलों को कर देने का विरोध किया था।

अपने परिवार की मौत का बदला लेने के लिए दुल्ला भट्टी उस युग का रॉबिनहुड बन गया। वह अकबर के जमींदारों से माल लूटकर गरीबों और जरूरतमंदों में बांट देता था। अकबर उन्हें डाकू के रूप में देखता था।

इसके अलावा दुल्ला को उन महिलाओं को बचाने के लिए जाना जाता है, जिन्हें जबरन गुलाम बाजारों में बेचने के लिए ले जाया गया था। फिर उसने गांव के लड़कों से उनकी शादी तय की और आर्थिक रूप से मदद की। बचाई गई लड़कियों में सुंदरी और मुंदरी भी शामिल थीं जो अब पंजाब के लोकगीत सुंदर मुंदरिये से जुड़ी हुई हैं। लोककथाओं के अनुसार, दुल्ला भट्टी इतना शक्तिशाली था कि अकबर की 12 हजार की सेना उसे पकड़ नहीं पाई, इसलिए 1599 में लड़ाई के दौरान उसे धोखे से पकड़ लिया गया और फिर उसे फांसी दे दी गई। इसलिए लोहड़ी पर्व के दिन लोग दुल्ला भट्टी और उनके बलिदान को याद करते हैं।

हर साल लोहड़ी का त्योहार 13 जनवरी को पड़ता है लेकिन पंचांग के हिसाब से इस बार ये पर्व 14 जनवरी को मनाया जाएगा। वैसे तो अन्य त्योहारों की तरह लोहड़ी से जुडी कई लोक कथाएं प्रचलित हैं। इन लोककथाओं का ज़िक्र लोहड़ी के लोकगीतों में किया जाता है। उन्हीं लोकगीतों में एक नाम दुल्ला भट्टी का भी आता है।

शुभ योग में लोहड़ी पर्व

गर करण का निर्माण लोहड़ी के दिन सबसे पहले होने जा रहा है। इस योग का निर्माण सुबह 07:59 बजे तक रहेगा। इसके बाद सुबह 10.22 बजे से रवि योग का निर्माण होगा। यह योग 15 जनवरी सुबह 7.15 बजे तक रहेगा। इसके अलावा वणिज करण का निर्माण शाम 06 बजकर 27 मिनट से होने जा रहा है। इस दिन अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12.09 बजे से दोपहर 12:51 तक रहेगा। गोधूलि बेला शाम 05:42 बजे से शाम 06:09 बजे तक है।

पंचांग

ब्रह्म मुहूर्त – सुबह 05:27 बजे से सुबह 06:21 बजे तक।
विजय मुहूर्त – दोपहर 2.15 बजे से 2.57 बजे तक।
गोधूलि बेला – शाम 5.42 बजे से शाम 6.09 बजे तक।
निशिता मुहूर्त – रात 12:03 बजे से रात 12:57 बजे तक।

'सातवें आसमान पर' नोरा फतेही

नोरा मूल रूप से एक मोरक्कन परिवार की बेटी है। कनाडा में रहने वाले मोरक्कन परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी, नोरा बॉलीवुड में प्रवेश करने से पहले सऊदी अरब चली गई थी। अब कई सालों से भारत में रह रही नोरा काफी हद तक भारतीय संस्कृति में रच-बस चुकी है लेकिन उसे मोरक्को की परम्पराओं और संस्कृति से भी गहरा लगाव है। मोरक्को के भोजन और संस्कृति तथा भारतीय सिनेमा के लिए अपने प्यार की सबसे अच्छी यादें उसके मन में हमेशा के लिए बस चुकी हैं।

दिलबर गर्ल' के नाम से मशहूर नोरा फतेही ने 'बाहुबली' से लेकर' भारत' और' स्त्री' जैसी फिल्मों में अपने आइटम सांग्स से खूब वाहवाही बटोरी है। उसने यूं तो कई फिल्मों में काम किया है, लेकिन बॉलीवुड में उसे बतौर लीड एक्ट्रैस काम करने का मौका नहीं मिला। हालांकि, अब उसको लीड हीरोइन के रूप में पहली फिल्म 'क्रैक' मिल गई है। इन दिनों वह इसी को लेकर चर्चा में है, जिसमें वह विद्युत जामवाल के साथ दिखाई देगी। फिल्म की शूटिंग खत्म हो चुकी है और इसे लेकर नोरा बहुत उत्साहित नजर आती है।

फिल्म 'क्रैक' के अलावा वह वरुण तेज की फिल्म 'मटका' से तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में अभिनय की शुरुआत करेगी। वहीं वह निर्देशक रेमो डिसूजा की फिल्म 'बी हैप्पी' में अभिषेक बच्चन के साथ काम कर रही है। वह अभिनेता कुणाल खेमू के साथ फिल्म 'मडगांव एक्सप्रेस' में भी नजर आएगी, जिसकी रिलीज डेट जल्द सामने आएगी। जाहिर है कि इतनी फिल्मों के साथ वह खुद को सातवें आसमान पर महसूस कर रही है।

फिल्म में एक्शन के लिए की कठिन ट्रेनिंग

फिल्म 'क्रैक' में अपने रोल को सही ढंग से निभाने के लिए नोरा को कठोर शारीरिक प्रशिक्षण से गुजरना पड़ा। यह ह उसके लिए बिल्कुल अलग था क्योंकि उसने वास्तव में इससे पहले अधिक एक्शन भूमिकाएं नहीं की हैं। ऐसे में, अपनी ताकत बढ़ाने, लचीलापन पाने के लिए उसे कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ा।

अपनी बॉडी को सही आकार देने के लिए उसने एक कठोर फिटनैस दिनचर्या अपनाई, जिसमें कई तरह के व्यायाम शामिल थे।

उसके प्रशिक्षण के एक हिस्से में स्टैचिग के साथ-साथ मार्शल आर्ट्स में क्रैश कोर्स करना भी शामिल रहा। इस दौरान उसे अपना स्टैमिना बढ़ाने की आवश्यकता थी। यह मार्शल आर्ट्स से होने वाली शारीरिक और मानसिक थकान का सामना करने के लिए जरूरी होता है। हालांकि, इस दौरान अपनी शारीरिक और मानसिक सीमाओं से परे जाने की कोशिश करना उसके लिए खास अनुभव रहा।

फिल्म 'क्रैक' की शूटिंग खत्म होने की सूचना देते हुए उसने सोशल मीडिया पर कुछ फोटोज शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा था, क्रैक की शूटिंग खत्म। पूरी टीम के साथ मेरा अनुभव बहुत ही खास रहा। मुझे एक लीड के रूप में लेने के लिए आदित्य दत्त, विद्युत जामवाल और पूरी टीम को शुक्रिया। मैंने सैट पर बहुत कुछ सीखा है और मैं दुनिया के इस फिल्म के देखने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं। फिल्म 23 फरवरी, 2024 को रिलीज हो रही है।

मोरक्को से है नोरा

नोरा मूल रूप से एक मोरक्कन परिवार की बेटी है। कनाडा में रहने वाले मोरक्कन परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी, नोरा बॉलीवुड में प्रवेश करने से पहले सऊदी अरब चली गई थी। अब कई सालों से भारत में रह रही नोरा काफी हद तक भारतीय संस्कृति में रच-बस चुकी है लेकिन उसे मोरक्को की परम्पराओं और संस्कृति से भी गहरा लगाव है। मोरक्को के भोजन और संस्कृति तथा भारतीय सिनेमा के लिए अपने प्यार की सबसे अच्छी यादें उसके मन में हमेशा के लिए बस चुकी हैं।

नोरा कहती है, जब मोरक्कन संस्कृति की बात आती है, तो हमारी महिलाएं वास्तव में मेजबानी को गंभीरता से लेती हैं। लोगों को घर पर बुलाकर खाना खिलाना, हमारी संस्कृति का हिस्सा है।

रिश्तों का 'दिखावा' क्या करना : अनन्या पांडे

अनन्या ने भले ही कभी खुल कर नहीं बताया कि वह किसके प्यार में गिरफ्त है लेकिन सभी जानते हैं कि वह आदित्य रॉय कपूर को डेट कर रही है। हाल ही में दोनों ने नए साल का स्वागत लंदन में एक साथ किया।

फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2' से बॉलीवुड में डेब्यू करने के बाद से अब तक 'पति पत्नी और वो', 'खाली पीली' से लेकर हालिया रिलीज 'खो गए हम कहां' जैसी फिल्मों में नजर आ चुकी अनन्या पांडे अपने रिलेशनशिप को लेकर चर्चा में रहती है। अनन्या ने भले ही कभी खुल कर नहीं बताया कि वह किसके प्यार में गिरफ्त है लेकिन सभी जानते हैं कि वह आदित्य रॉय कपूर को डेट कर रही है। हाल ही में अनन्या ने आजकल होने वाली डेटिंग को लेकर अपने विचार रखे। उसका कहना है किउसे पुराने जमाने वाला प्यार ही पसंद है। उसने आगे कहा कि अगर उसका पार्टनर सोशल मीडिया पर किसी दूसरी लड़की की हॉट तस्वीरों को लाईक करता है, तो वह 'पजैसिव' हो जाती है। अनन्या ने डेटिंग को लेकर कहा कि वह डेटिंग के नए तरीकों को स्वीकार नहीं करती। वह सोशल मीडिया पर फेक रिलेशनशिप स्टेटस पर भी विश्वास नहीं करती।

इस दौरान 'सिचुएशनशिप' टर्म पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए उसने कहा कि इस शब्द से उसे नफरत है। 'सिचुएशनशिप' दरअसल, 'सिचुएशन' (स्थिति) थति) और 'रिलेशन' (रिश्ता) से मिल कर बना शब्द है। यह डेटिंग का एक तरीका है। इसमें दो लोग रोमांस और शारीरिक जरूरत को पूरा करने के मकसद से एक साथ रह सकते हैं। इस रिलेशनशिप में कोई व्यक्ति अपने पार्टनर को बिना कोई स्पष्टीकरण दिए छोड़ कर जा सकता है।

अनन्या के अनुसार, मुझे यह शब्द ही पसंद नहीं है। इसके अलावा, मैं किसी डेटिंग ऐप पर नहीं हूं और न ही मैं सोशल मीडिया पर अपने रिश्तों के बारे में बात करती हूं। मैं ऐसी इंसान नहीं हूं, जो केवल सोशल मीडिया के लिए अपने रिश्ते का दिखावा करूंगी। उसने यह भी कहा कि सोशल मीडिया पर लोगों को फॉलो करने के लिए वह 'फिनस्टा' या 'फेक इंस्टाग्राम' अकाऊंट का इस्तेमाल नहीं करने वाली। गौरतलब है कि गत दिनों 'कॉफी विद करण' सीजन-8 में आदित्य रॉय कपूर को अनन्या ने अपना दोस्त बताया था लेकिन वे दोनों अपनी डेटिंग की खबरों को लेकर अक्सर चर्चा में रहते हैं। हालांकि, वे न तो अपने रिश्ते को स्वीकार करते हैं और न ही इससे इंकार करते हैं। हाल ही में इन दोनों को लंदन में न्यू ईयर की छुट्टियां मनाते भी देखा गया। सोशल मीडिया पर वायरल हो रही कुछ तस्वीरों में अनन्या और आदित्य बाकी दोस्तों के साथ कैमरे के लिए पोज देते हुए नजर आ रहे हैं।

हालिया फिल्म

फिलहाल, अनन्या अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'खो गए हम कहां' का आनंद ले रही है। इस फिल्म में उसके साथ सिद्धांत चतुर्वेदी और आदर्श गौरव मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म मुम्बई के तीन दोस्तों पर आधारित हैं, जिसका निर्देशन फिल्ममेकर अर्जुन वरैन सिंह ने किया है। एक ओ.टी.टी. प्लेटफॉम पर रिलीज इस फिल्म को दर्शकों के साथ ही समीक्षकों ने भी काफी पसंद किया है। इससे पहले 'ड्रीम गर्ल 2' में नजर आई अनन्या की अगली फिल्मों में 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सी. शंकरन नायर' और 'कंट्रोल' शामिल हैं। वह वैब सीरीज 'कॉल मी बे' में भी नजर आएगी।

शिल्पा शेट्टी ने पूरे किए बॉलीवुड में '30 वर्ष'

फिल्म इंडस्ट्री में 30 साल पूरे करने वाली शिल्पा शैट्टी ने अपने करियर की शुरुआत 1993 में शाहरुख खान और काजोल के साथ थ्रिलर फिल्म 'बाजीगर' से की थी। अपनी विविध भूमिकाओं और प्रभावशाली अभिनय के लिए जानी जाती शिल्पा ने मनोरंजन उद्योग में शानदार तीन दशक पूरे कर लिए हैं। यहां बने रहने की चुनौतियों को संबोधित करते हुए उसने आज के डिजिटल युग में उभरते दर्शकों और उन्हें खुश करने की निरंतर आवश्यकता को स्वीकार करते हुए कहा, जब मैंने शुरुआत की थी, तो दर्शक अलग थे। आज हम ट्रोल होने की हद तक पहुंच गए हैं। शिल्पा ने पहली फिल्म में एक छोटी भूमिका से लेकर फिल्म 'धड़कन' (2002) के साथ मुख्यधारा की नायिका बनने तक की अपनी यात्रा को याद किया। वह 'चुरा के दिल मेरा' (मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी, 1994) और 'मैं आई हूं यू.पी. बिहार लूटने' (शूल, 1999) जैसे सुपरहिट गानों से अपनी लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गई थी। उसकी प्रसिद्धि 'बिग ब्रदर' जैसे रियलिटी शो से लेकर 'लाइफ इन ए मैट्रो' और 'फिर मिलेंगे' जैसी फिल्मों से बढ़ी। शिल्पा ने फिल्म उद्योग में अपनी उल्लेखनीय यात्रा को स्वीकार करते हुए कहा, ये मेरे अब तक के करियर में प्रमुख मील के पत्थर रहे हैं। अपनी नवीनतम रिलीज कॉमेडी ड्रामा 'सुखी' के बारे में शिल्पा ने कहा, हम बहुत सारी फिल्में बनाते हैं और किरदारों के कारण प्यार और फैन फॉलोइंग हासिल करते हैं लेकिन, 'सुखी' के लिए मुझे जिस तरह की सराहना मिली, वह कुछ अलग थी। यह सब इतने वर्षों में मुझे नहीं मिला था। शिल्पा ने देश में बढ़िया डाइनिंग रेस्तरां चेन के साथ हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में भी अपने लिए एक जगह बनाई है। जल्द ही वह वैब सीरीज 'इंडियन पुलिस फोर्स' में नजर आने वाली है। यह पुलिस ड्रामा रोहित शैट्टी द्वारा निर्देशित है और इसमें शिल्पा के साथ सिद्धार्थ मल्होत्रा और विवेक ओबेरॉय हैं। इस धाकड़ सीरीज का ट्रेलर रिलीज हो चुका है, जो एक्शन और रोमांच से भरपूर नजर आता है।

हिना खान का फूटा... 'गुस्सा'

बॉलीवुड के मशहूर फिल्ममेकर आनंद पंडित ने गत दिनों अपने जन्मदिन पर एक भव्य पार्टी का आयोजन किया। बड़े पर्दे से लेकर छोटे पर्दे के सितारे भी इस बर्थडे सैलिब्रेशन का हिस्सा रहे। हिना खान भी आनंद पंडित को जन्मदिन की बधाई देने के लिए पहुंची, जहां उसने जमकर फोटोग्राफरों के सामने पोज दिए लेकिन इस दौरान उसके साथ एक ऐसा वाक्या हो गया जो अब चर्चा का विषय बन चुका है। हुआ यूं कि जैसे ही हिना पार्टी में पहुंची तो फोटोग्राफर उसे अपने कैमरे में कैद करने के लिए बेताब दिखे। इस दौरान किसी कैमरामैन ने उसे पोज देने के लिए कहा। यह सुनते ही हिना उस शख्स पर भड़क उठी। हिना ने ताना मारते हुए कहा कि अच्छा अब आप मुझे बताएंगे कि पोज कैसे देना है। यह बोलते ही हिना ताली बजाने लगती है।

सोशल मीडिया पर उसका यह वीडियो खूब चर्चा में बना हुआ है। इस वायरल वीडियो पर कमैंट्स की बाढ़ आ गई है। हिना के इस बर्ताव पर तरह तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। कई लोग उसके सपोर्ट में आए तो कई लोगों ने हिना को उसके इस व्यवहार के लिए ट्रोल भी किया। एक यूजर ने लिखा कि इसका घमंड ही इसको एक दिन मारेगा...।

तो किसी अन्य यूजर ने उस पर कटाक्ष किया, ₹इसमें बहुत घमंड है... नैगेटिव...। इस पार्टी में हिना पर्पल कलर की सीक्वेंस टाइट ड्रेस में नजर आई। इस ऑफ शॉल्डर ड्रैस में हिना बेहद ग्लैमरस लगी।

छोटे से बड़े पर्दे का सफर

छोटे पर्दे से अपना करियर शुरू करने वाली हिना खान ने धारावाहिक 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में अक्षरा के रोल से लोकप्रियता की जो दास्तान लिखी, उससे हर कोई वाकिफ है। हिना ने वैसे तो कई धारावाहिकों में काम किया लेकिन यही धारावाहिक उसके करियर में मील का पत्थर साबित हुआ। हिना पहली बार वर्ष 2008 में रियलिटी शो 'इंडियन आइडल' में नजर आई थी। इसमें उसने बतौर प्रतियोगी हिस्सा लिया था। इसके बाद ही हिना के हाथ' ये रिश्ता क्या कहलाता है' सीरियल लगा था जिससे वह घर- घर मशहूर हो गई। इसके बाद उसने रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी सीजन 8' व'बिग बॉस 11' में हिस्सा लिया। इसके अलावा 'कसौटी जिंदगी की 2' में कमोलिया के नैगेटिव रोल में भी सभी को प्रभावित किया। इसके बाद उसने फिल्मों में कदम रखे और अब तक' हैक्ड', 'अनलॉक', 'लाइंस' और 'कंट्री ऑफ ब्लाइंड' जैसी फिल्मों में काम कर चुकी है। उसके कई म्यूजिक वीडियो भी काफी ज्यादा हिट हुए जिनमें 'रांझणा', 'हमको तुम मिल गए', 'बारिश बन जाना' और 'बरसात आ गई' शामिल हैं।

निजी जिंदगी

उसकी निजी जिंदगी की बात करें तो इन दिनों वह रॉकी जायसवाल के साथ रिलेशनशिप में है। वे दोनों वर्ष 2014 से एक साथ हैं। उसका कहना है कि अभी उन दोनों का शादी करने का कोई इरादा नहीं है और जैसा भी है अपने वर्तमान रिलेशनशिप में वे बहुत खुश हैं।

किसिंग सीन्स के चलते बहन ने नहीं देखी फिल्म : तनीषा

दिग्गज अभिनेत्री तनुजा की बेटी और काजोल की छोटी बहन तनीषा मुखर्जी इन दिनों रियलिटी शो 'झलक दिखला जा' में अपने डांस का जलवा दिखा रही है। अपने डांस के अलावा, कई फिल्मों में अपनी दमदार अभिनय क्षमता भी वह साबित कर चुकी है। तनीषा ने अभिनय करियर की शुरुआत वर्ष 2003 में फिल्म 'श्श...' से की थी। इसके बाद उसने कई फिल्मों में किया, जिनमें 'सरकार', 'वन टू श्री' आदि शामिल हैं।

काम साल 2005 में वह यशराज फिल्म्स के बैनर में बनी फिल्म 'नील एन निक्की' में भी नजर आई थी। यह फिल्म तब समीक्षकों और दर्शकों को संतुष्ट करने में नाकाम साबित हुई थी। हाल ही में एक बातचीत में तनीषा ने इस फिल्म को लेकर एक दिलचस्प खुलासा किया।

उसने बताया कि यह फिल्म अब तक उसकी बहन काजोल ने नहीं देखी है। उसके अनुसार फिल्म में बहुत सारे किसिंग सीन्स की वजह से काजोल ने यह फिल्म नहीं देखी। बातचीत के दौरान उसने अपने दोस्तों के बच्चों को बड़े होने के बाद इसे देखने का सुझाव दिया। उसने आगे बताया कि अगर उसे अभी इस फिल्म की पेशकश की जाती तो वह बेहतर प्रदर्शन करती। तनीषा और उदय उस समय रिलेशनशिप में थे। इसी वजह से उसे ऑन- स्क्रीन किस करने में असहजता नहीं हुई। एक इंटरव्यू में तनीषा ने उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में खुलासा करते हुए बताया था, उदय और मैं फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के समय पर मिले थे। उस दौरान हम दोस्त बन गए और मुझे लगता है कि ऐसी ही फिल्म के दौरान हम नजदीक आ गए और फिर हमें प्यार हो गया। यह रिश्ता दो साल तक चला लेकिन कुछ कारणों से यह टूट गया था।

अमाला पॉल ने दी 'गुड न्यूज'

अमाला पॉल ने सोशल मीडिया पर अपने फैन्स को 'गुड न्यूज' सुनाई है कि वह मां बनने वाली है। उसने 2 महीने पहले ही प्रोड्यूसर जगत देसाई के साथ शादी की थी। बेबी बम्प दिखाने वाली उसकी फोटोज इंटरनैट पर वायरल हो गई हैं।

उसने ये फोटोज खुद शेयर की हैं, जिनमें वह पति के साथ समंदर के किनारे मैटरनिटी फोटोशूट करवाती नजर आ रही है। इन्हें शेयर करते हुए कैप्शन में उसने लिखा, ₹मुझे तुम्हारे साथ पता है कि 1+1 अब 3 होता है।

अमाला ने गत वर्ष 5 नवम्बर को कोच्चि (केरल) में जगत देसाई के साथ ईसाई रीति-रिवाज से शादी की थी। यह एक लैवेंडर थीम वैडिंग थी।

अमाला की दूसरी शादी यह अमाला की दूसरी शादी है।

इससे पहले उसने तमिल डायरैक्टर ए.एल. विजय से शादी की थी लेकिन उनका रिश्ता केवल 3 साल ही चल सका। शादी के कुछ समय बाद ही उनके बीच तनातनी होने लगी थी। दोनों ने अपने रिश्ते में आने वाली उलझनों को सुलझाने की काफी कोशिश की, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला। ऐसे में उन्होंने 2017 में तलाक ले लिया। कहा जाता है कि अमाला की सास उसे एक्टिंग करने से रोकती थी जो अमाला को पसंद नहीं था। ऐसे में उसने परिवार की जगह अपने करियर को चुना था। फिल्मों की बात करें तो वह साऊथ की बड़ी अभिनेत्रियों में शुमार है, जहां वह अनेक फिल्मों में लीड रोल कर चुकी है। बॉलीवुड में उसने गत वर्ष ही अजय देवगन के साथ फिल्म 'भोला' से डेब्यू किया था।

दीपिका की हमशक्ल बताते हैं लोग

26 अक्तूबर 1991 को केरल के एर्नाकुलम में जन्मी अमाला को कई लोग दीपिका पादुकोण की हमशक्ल भी कहते हैं। दरअसल, दोनों ही एक्ट्रैस की लुक काफी हद तक एक- दूसरे से मिलती है। इस मसले पर उसने एक इंटरव्यू में कहा था, दीपिका से तुलना मेरे लिए सम्मान की बात है। वैसे मुझे लगता है कि वह मुझसे काफी ज्यादा खूबसूरत हैं।

गुजरात में आई पैसों की सुनामी

अब आएगा 26.33 लाख करोड, पीछे छूट जाएंगे 166 देश

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)। वाइब्रेंट गुजरात की गूंज अब विदेशों तक में सुनाई दे रही है। भले ही इस ईवेंट में टेस्ला ना आई हो, लेकिन देश और विदेशी की कंपनियों ने गुजरात में पैसों की बारिश कर दी है। खुद गुजरात के सीएम ने इस बात की जानकारी एक्स पहले ट्विटर पर दी है। उन्होंने अपने पोस्ट में कहा है कि वाइब्रेंट गुजरात में 26.33 लाख करोड़ रुपए यानी 317 बिलियन डॉलर के निवेश के एमओयू साइन हुए हैं। वास्तव में ये रकम दुनिया 166 देशों की जीडीपी से भी ज्यादा है। जी हां, जिसमें कई यूरोपीय, एशियाई और अफ्रीकी देश शामिल है। पाकिस्तान का 6 साल का बजट भी इस रकम से पूरा हो जाएगा। आइए पहले गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल के उस ट्वीट के आंकड़ों को देखते हैं और उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

कितने निवेश के एमओयू हुए साइन

मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 के 10वें एडिशन के दौरान

26.33 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रपोजल वाली 41,299 परियोजनाओं के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। गांधीनगर में तीन दिनों के शिखर सम्मेलन समाप्त होने पर पटेल ने एक्स पर एक पोस्ट में यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि यदि 2022 में आयोजित होने वाले वीजीजीएस में हस्ताक्षरित एमओयू को जोड़ा जाए, यह आंकड़ा 45 लाख करोड़ रुपए से अधिक हो जाएगा, जिसमें कुल 98,540 एमओयू शामिल होंगे। उन्होंने अपने पोस्ट में कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 ने नया कीर्तिमान रचा है। वर्ष 2022 में कोरोना महामारी के कारण स्थगित वाइब्रेंट समिट में 57, 241 प्रोजेक्ट्स में 18.87 लाख करोड़ रुपए के MoUs हुए थे। जनवरी 2024 में आयोजित वाइब्रेंट समिट के इस 10वें संस्करण में 41,299 परियोजनाओं में 26.33 लाख करोड़ के निवेश के लिए MoUs किए गए हैं। इस तरह से गुजरात ने कुल 98,540 परियोजनाओं के लिए 45 लाख करोड़ से अधिक के निवेश के लिए MoUs की ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। सीएम ने अपने अगले पोस्ट में कहा कि गेटवे टू द फ्यूचर की थीम के साथ आयोजित वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024, नए युग के उभरते सेक्टर सेमीकंडक्टर, ई-मोबिलिटी, ग्रीन हाइड्रोजन, और रिन्यूएबल एनर्जी में हुए विभिन्न MoUs के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत @ 2047 के विजन को साकार करने में अग्रणी रहेगा।

166 देशों की जीडीपी से ज्यादा का निवेश

सीएम भूपेंद्र पटेल के ट्वीट के अनुसार वाइब्रेंट गुजरात में 26.33 लाख करोड़ रुपए के एमओयू साइन हुए हैं। अगर इस रकम हो डॉलर में कंवर्ट कर दिया जा तो 317 बिलियन डॉलर से ज्यादा होगा। ताज्जुब की बात तो ये है कि दुनिया के 166 देशों की जीडीपी भी 317 बिलियन डॉलर नहीं है। आईएमएफ के अनुसार फिनलैंड की जीडीपी करीब 306 बिलियन डॉलर की है। न्यूजीलैंड, ग्रीस, कतर, हंगरी, आदि देशों की जीडीपी 250 बिलियन डॉलर से कम है।

पाकिस्तान के 6 साल के बजट के बराबर

खास बात तो ये है कि ये रकम पाकिस्तान के 5 से 6 साल के बजट के बराबर है। 26.33 लाख करोड़ रुपए पाकिस्तान के 88 लाख करोड़ रुपए के बराबर है। वित्त वर्ष 2023—24 का पाकिस्तान का बजट 14.33 लाख करोड़ रुपए था। अगर इसे ही आधार मान लिया जाए तो ये रकम पाकिस्तान के 5 से 6 साल के बजट के बराबर है।

समस्या के समाधान के लिए अप्रैल तक करना होगा इंतजार

नितिन गडकरी ने कही बडी बात

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को चीनी मिल मालिकों को आश्वासन दिया कि उन्हें चिंता करने की जरुरत नहीं है। एथेनॉल उत्पादन के लिए चीनी के उपयोग पर सरकार की नीति के कारण उनकी समस्याओं का समाधान अप्रैल के बाद निकाला जायेगा। वसंतदादा शुगर इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गन्ना सम्मेलन में उन्होंने कहा कि भारत एक दिन ऊर्जा का निर्यातक बन जाएगा और ऐसा करने के लिए कृषि को विकसित करने की जरूरत है। बता दें कि इस संस्थान के अध्यक्ष राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) प्रमुख शरद पवार हैं।

सरकार ने कर दिया था बैन

केंद्र सरकार ने पिछले साल एथेनॉल बनाने के

लिए गन्ना शीरे के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन बाद में ग्रीन ईंधन का उत्पादन करने के लिए गन्ना रस के साथ-साथ बी-भारी शीरा के उपयोग की अनुमति देकर आदेश को उलट दिया था, लेकिन चीनी के ट्रांसफर को 17 लाख टन पर सीमित कर दिया। गडकरी ने कहा कि चीनी इंडस्ट्री को एथेनॉल उत्पादन के महत्व पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

इस उद्देश्य पर करें काम

अधिकतम एथेनॉल, न्यूनतम चीनी के उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए। एथेनॉल के साथ हमें फ्लेक्स इंजन वाहनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है और साथ ही जहां तक एथेनॉल का सवाल है, सरकार उचित कदम उठाएगी। गडकरी का मानना है कि चीनी उद्योग का भविष्य इसके सहयोगी उत्पादों के साथ बहुत अच्छा है। बता दें कि सरकार की कोशिश एथेनॉल युक्त पेट्रोल तैयार करने की है। इससे इंधन को लेकर विदेश पर देश की निर्भरता कम होगी और महंगाई को कम करने में सरकार को आसानी होगी। इसके लिए गडकरी तेजी से काम कर रहे हैं।

खेती की जमीन पर भी लग जाता है इनकम टैक्स

फार्म लैंड पर भारत में टैक्स के नियम

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।ऐसी आम मान्यता है कि खेती से होने वाली कमाई पर इनकम टैक्स नहीं लगता है। इसके साथ-साथ कई लोग ऐसा भी मान लेते हैं कि खेती की जमीन-बिक्री से हुई कमाई पर भी इनकम टैक्स नहीं लगता है। ऐसा मानना गलत है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि खेती की जमीन यानी फार्म लैंड पर किन मामलों में इनकम टैक्स की देनदारी बनती है और किन मामलों में टैक्स नहीं लगता है।।।सबसे पहले तो ये जान लीजिए कि फार्म लैंड दो तरह के होते हैं। फार्म लैंड को एग्रीकल्चर लैंड भी कहा जाता है। पहली कैटेगरी रूरल यानी ग्रामीण क्षेत्र में खेती की जमीन और दूसरी अर्बन यानी शहरी क्षेत्र में कृषि की जमीन। कई ऐसे इलाके हैं, जो शहरों में आते हैं, लेकिन वहींभी खेत हैं और लोग खेती करते हैं, लेकिन इनकम टैक्स के हिसाब से उन्हें कृषि योग्य भूमि यानी एग्रीकल्चर लैंड नहीं माना जाता है।इनकम टैक्स कानून में किन जमीनों को खेती की जमीन माना जाता है, इसे इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 2 (14) में क्लियर किया गया है। अगर आपकी खेती की जमीन म्युनिसिपालिटी, नोटिफाइड एरिया कमेटी, टाउन एरिया कमेटी या कैंटोनमेंट बोर्ड के अंदर है और उसकी जनसंख्या 10,000 या उससे ज्यादा है तो ये जमीन आयकर कानून के हिसाब से एग्रीकल्चर लैंड नहीं है। अगर म्युनिसिपालिटी या कैंटोनमेंट बोर्ड की आबादी 10 हजार से ज्यादा, लेकिन 1 लाख तक है तो उसके 2 किलोमीटर के दायरे में आने वाली जमीन एग्रीकल्चर लैंड नहीं है। अगर म्युनिसिपालिटी या कैंटोनमेंट बोर्ड की आबादी 1 लाख से ज्यादा लेकिन 10 लाख तक है तो उसके चारों ओर 6 किलोमीटर के दायरे में आने वाला इलाका एग्रीकल्चर लैंड नहीं है। इसी तरह, म्युनिसिपालिटी या कैंटोनमेंट में 10 लाख से ज्यादा आबादी होने पर 8 किलोमीटर तक के इलाके में स्थित जमीन को एग्रीकल्चर लैंड नहीं माना जाएगा।अगर आपकी खेती की जमीन ऊपर बताए गए दायरे में नहीं आती है तो उसे आयकर कानून की नजर में कृषि योग्य भूमि यानी एग्रीकल्चर लैंड माना जाएगा। एग्रीकल्चर लैंड को आयकर कानून के तहत कैपिटल एसेट नहीं माना जाता है।

ट्रेडिंग अकाउंट को फ्रीज करने की सुविधा देगा एसईबीआई

इसके लिए 1 अप्रैल तक तैयार होगा फ्रेमवर्क, संदिग्ध गतिविधि रोकने में मिलेगी मदद

मुंबई, 13 जनवरी (एजेंसियां)। सिक्योरिटी एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया यानी एसईबीआई इन्वेस्टर्स को उनकी मर्जी से ट्रेडिंग अकाउंट को फ्रीज या ब्लॉक करने की सुविधा देने जा रहा है। एसईबीआई ने शुक्रवार को सर्कुलर जारी करते हुए कहा कि ट्रेडिंग अकाउंट का अनऑथराइज्ड ऑनलाइन एक्सेस रोकने के लिए इन्वेस्टर्स को उसे फ्रीज या ब्लॉक करने की सुविधा देने के लिए फ्रेमवर्क तैयार किया जाएगा।एसईबीआई के परामर्श से ब्रोकर्स इंडस्ट्री स्टैंडर्ड्स फोरम इसके लिए 1 अप्रैल 2024 तक या उससे पहले फ्रेमवर्क तैयार करेगी, जिसमें जरूरी दिशानिर्देश भी शामिल होंगे। इसके बाद स्टॉक एक्सचेंज सुनिश्चित करेंगे कि फ्रेमवर्क के तहत जारी किए गए जारी दिशानिर्देशों को 1 जुलाई 2024 से लागू किया जाए।'

एसईबीआई ट्रेडिंग अकाउंट को ब्लॉक करने की सुविधा क्यों देना चाहती है?

एसईबीआई ने कहा कि भारत में स्टॉक ब्रोकिंग इंडस्ट्री कॉल एंड ट्रेड से बदलकर ऑनलाइन मोड में बदल गया है, जिसमें इन्वेस्टर को लॉगिन आईडी और पासवर्ड का यूज करते हैं। कई बार यह देखा गया है कि इन्वेस्टर के ट्रेडिंग अकाउंट में संदिग्ध गतिविधियां होती हैं, लेकिन अधिकांश ट्रेडिंग मेंबर्स के पास अकाउंट फ्रीज या ब्लॉक करने की सुविधा नहीं होती है।इसीलिए सभी इन्वेस्टर्स के लिए यह सुविधा लाने की तुरंत जरूरत है। अभी एटीएम कार्ड और क्रेडिट कार्ड को इस तरह ब्लॉक करने की सुविधा अवेलेबल है।

ऑनलाइन ट्रेडिंग करने के लिए स्टॉकब्रोकर के पास एक अकाउंट खुलवाना पड़ता है। ट्रेडिंग अकाउंट एक इंटरफेस होता है जो शेयरों की खरीद और बिक्री की अनुमति देता है। यह इन्वेस्टर्स के बैंक अकाउंट और डीमैट अकाउंट के बीच एक इंटरफेस के रूप में काम करता है। इसी अकाउंट के माध्यम से खरीदे गए शेयरों को किसी के डीमैट अकाउंट में क्रेडिट किया जाता है।

आरबीआई की बड़ी कार्रवाई, 3 बैंकों पर ठोका 2.49 करोड़ जुर्माना-एक नामी बैंक भी आया चपेट में

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।भारतीय रिजर्व बैंक ने नियामकीय अनुपालन का उल्लंघन करने पर अब तीन बैंकों के खिलाफ कार्रवाई की है। नियम विरुद्ध लोन देने, ग्राहक सेवा नियमों को न मानने और केवाई से संबंधित नियमों का पालन न करने पर इन तीनों बैंको पर 2.49 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है। जो बैंक नपे गए हैं उनमें ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक , धनलक्ष्मी बैंक और पंजाब एंड सिंध बैंक शामिल हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने पंजाब एंड सिंध बैंक पर 1 करोड़ रुपये की पेनल्टी लगाई है। धनलक्ष्मी बैंक पर 1.20 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। इसी तरह ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक को 2955 लाख रुपये जुर्माना भरना होगा। गौरतलब है कि हाल ही में आरबीआई ने गुजरात के पांच सहकारी बैंकों पर भी जुर्माना लगाया था। रिजर्व बैंक ने पंजाब एंड सिंध बैंक पर 1 करोड़ रुपये की नियम विरुद्ध जाकर एक कंपनी को लोन देने के कारण लगाई है। वहीं, धनलक्ष्मी बैंक ने लोन और एडवांस वैधानिक और अन्य प्रतिबंध, केवाईसी और पर ब्याज दर से संबंधित कुछ मानदंडों का पालन नहीं किया था। इस वजह से धनलक्ष्मी बैंक पर 1.20 करोड़ रुपये जुर्माना लगाया गया है।ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक पर 'बैंकों में ग्राहक सेवा' पर आरबीआई द्वारा दिए गए निर्देशों का अनुपालन न करने पर कार्रवाई की गई है। बैंक पर 29.55 लाख रुपये की पेनाल्टी लगाई गई है। केंद्रीय बैंक का कहना है कि यह जुर्माना बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 46(4)(i) के साथ पठित धारा 47A(1)(c) के प्रावधानों के आरबीआई को की मिली शक्तियों का प्रयोग करते हुए लगाया गया है

6 गुना बढ़ने वाली हैं अयोध्या के लिए फ्लाइट्स, जानिये क्या होंगे प्राइस

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।हाल ही में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि 22 जनवरी को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में राम मंदिर का उद्घाटन होगा तो 100 चार्टर्ड प्लेन अयोध्या हवाई अड्डे पर उतरेंगे। इसमें उद्योग जगत के नेता, फिल्मी सितारे और अन्य हस्तियां भी शामिल होंगी। भारत के सबसे धनी भक्तों और अन्य लोगों को मंदिर और शहर तक पहुंचाने के लिए काफी संख्या में चार्टर्ड उड़ानों के साथ फ्लाइट्स की आवाजाही छह गुना बढ़ने वाली है। ट्रैवल पोर्टल्स ने कहा कि रेलवे टिकट बुकिंग में 60 फीसदी की वृद्धि हुई है और इंटरसिटी कैब ऑपरेटरों को बुकिंग में 50 फीसदी का इजाफा होने की उम्मीद है।अयोध्या हवाई अड्डे के डायरेक्टर विनोद कुमार ने कहा कि चार्टर ऑपरेटर्स से कुल 42 पूछताछ हुई हैं। अपेक्षित भीड़ को देखते हुए, नए एयरपोर्ट पर विमानों के लिए पर्याप्त पार्किंग स्थान होने की संभावना नहीं है। कुमार ने चार्टर ऑपरेटरों से कहा है कि वे 22 जनवरी को केवल यात्रियों को छोड़ें और ले जाएं। उन्होंने कहा कि वे लखनऊ, वाराणसी, कुशीनगर, पटना और यहां तक कि दिल्ली जैसे पड़ोसी एयरपोर्ट पर अपने क्राफ्ट पार्क करेंगे। एयर चार्टर फर्म क्लब वन एयर के सीईओ राजन मेहरा ने कहा कि यह साल चार्टर्स के लिए एक नई ऊंचाई होगी। अयोध्या प्रोग्राम के अलावा, निजी चार्टर ऑपरेटरों ने पहले से ही वाइब्रेंट गुजरात निवेशक शिखर सम्मेलन के लिए अहमदाबाद की बुकिंग में वृद्धि देखी है और आम चुनावों के लिए प्रचार से उड़ानों की मांग में एक और वृद्धि देखी जाएगी।मंदिर के उद्घाटन के लिए क्लब वन एयर ने तीन फाल्कन 2000 12-सीटर बिजनेस जेट की बुकिंग की है।

जल्द खुलेंगे इथेनॉल ईंधन स्टेशन, परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का एलान

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।देश की शीर्ष रिफाइनरी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन 300 इथेनॉल ईंधन स्टेशन खोलेगी। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को यह एलान किया। पश्चिमी शहर पुणे में एक चीनी सम्मेलन के मौके पर गडकरी ने कहा, इथेनॉल पंप खोलने की मेरी मांग को पेट्रोलियम मंत्री ने स्वीकार कर लिया है। उन्होंने आगे कहा, इंडियन ऑयल ने देश में 300 इथेनॉल पंप शुरू करने का फैसला लिया है। भारत, दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक और उपभोक्ता। साथ ही यह अपने 2070 नेट-शून्य कार्बन लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए उत्सुक है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जापानी कार निर्माताओं की मांगों के बाद, भारत के व्यापार विभाग ने स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की ओर शिफ्ट होने में मदद के लिए हाइब्रिड वाहनों पर टैक्स को कम करने का समर्थन किया है। इससे पहले केंद्रीय मंत्री ने गुजरात ग्लोबल समिट में कहा था कि वह भारत से पेट्रोल और डीजल को उसी तरह खदेड़ने के मिशन पर हैं जैसे भारत छोड़ो आंदोलन था। मंत्री जी ने कहा कि वायु प्रदूषण को रोकने और आयातित कच्चे तेल पर भारत की निर्भरता कम करने के लिए स्वच्छ और वैकल्पिक ईंधन के उत्पादन और इस्तेमाल को बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, मैं हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक और फ्लेक्स-फ्यूल कारों में सफर करता हूं ताकि वैकल्पिक ईंधन का प्रचार कर सकूं। जिस तरह हमने अंग्रेजों को भगाने के लिए 'भारत छोड़ो' आंदोलन चलाया था। उसी तरह मैं देश से पेट्रोल और डीजल को खदेड़ने के मिशन पर हूं। गडकरी ने कहा कि देश वायु प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है और परिवहन क्षेत्र इसमें लगभग 40 प्रतिशत का योगदान देता है। उन्होंने कहा, अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कच्चा तेल आयात करने का भारी-भरकम बिल एक आर्थिक चुनौती है।

टाटा और मस्क का बजा दुनिया में डंका 2023 रहा इन दो कंपनियों के नाम

नई दिल्ली , 13 जनवरी (एजेंसियां)।दुनिया की टॉप कंपनियां अपने इनोवेशन के दम पर आगे बढ़ती है। लगातार अपने कस्टमर को कुछ नया देना कंपनियों की सोच और अपने कस्टमर के प्रति ईमानदारी को भी प्रदर्शित करता है। बोस्टन कंसलटिंग ग्रुप की दुनिया की मोस्ट इनोवेटिव कंपनीज की लिस्ट को देखें तो एलन मस्क की टेस्ला ने दिग्गज कंपनियों को पछाड़ते हुए दुनिया की दूसरे नंबर की कंपनी बन गई है। वहीं दूसरी ओर भारत के सबसे बड़े कारोबारी ग्रुप टाटा की इस लिस्ट में वापसी हुई है। खास बात तो ये है कि टाटा ग्रुप इस लिस्ट में टॉप 20 में शामिल है। आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर दुनिया की सबसे बड़ी इनोवेटिव कंपनी कौन सी है।इनोवेशन के मामले में एपल का दुनिया में कोई सानी नहीं है। आज भी इस मामले में एपल दुनिया की नंबर वन कंपनी है। हर साल अपने कस्टकर्स के लिए नए फोन लेकर आना और वो भी नए फीचर्स के साथ कोई छोटी बात नहीं।वहीं इस लिस्ट में टेस्ला का नाम दूसरे नंबर है। कंपनी को तीन रैंक का फायदा हुआ है। उसे माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन और गूगल को पछाड़ा है। माइक्रोसॉफ्ट 2 नंबर से खिसकर सीधे 5वें पायदान पर आ

गई है।वहीं इएस लिस्ट में वॉलमार्ट को रैंकिंग में सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। वॉलमार्ट को इस रैंकिंग में 32 पायदान का नुकसान हुआ है। अब वह इनोवेशन रैंकिंग में खिसककर सीधे 45वें पायदान पर आ गई है।अगर बात सोनी डेल और अलिबाबा की बात करें तो इन्हें रैंकिंग में 20 से ज्यादा का नुकसान हुआ है। अलीबाबा और सोनी को 22 रैंकिंग का नुकसान हुआ और खिसककर नीचे आ गए हैं। डेल को 24 रैंकिंग का नुकसान हुआ है।दूसरी ओर टाटा ग्रुप की इस रैंकिंग में वापसी हुई है। टाटा ग्रुप दुनिया की टॉप 20 कंपनियों में शामिल हो गई है, जिनमें इनोवेशन सबसे ज्यादा होता है। इस फेहरिस्त में बीवाईडी 9वें पायदान पर वापसी हुई है। खास बात तो ये है कि इस लिस्ट में स्पेसएक्स की भी वापसी हुई है। एक्सॉन मोबिल की 15वें पायदान पर वापसी हुई है।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2080
शक संवत् -1945, सूर्य -उत्तरायणे - ऋतु- शिशिर
महावीर निर्वाण संवत् -2550,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-53
भोग्य कलि वर्ष-426876 सूर्यास्त. -17-56
कलियुग संवत् -5124 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949124
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885124

ग्रह स्थिति			लग्नारंभ समय		
सूर्य-	धनु	में	धनु....	04-50	बजे
चंद्र-	कुंभ	में	मकर..	06-56	बजे
मंगल	धनु	में	कुंभ...	08-47	बजे
बुध-	धनु	में	मीन...	10-25	बजे
गुरु-	मेष	में	मेष--	12-01	बजे
शुक्र-	वृश्चिक	में	वृष--	13-46	बजे
शनि-	कुंभ	में	मिथुन..	15-46	बजे
राहु-	मीन	में	कर्क...	17-58	बजे
केतु-	कन्या	में	सिंह...	20-11	बजे
			कन्या..	22-17	बजे
			तुला....	00-22	बजे
			वृश्चिक.	02-33	बजे

दिशाशूल -- पश्चिम - पान खाकर घर से निकले
तिथि- तृतीया - 08 -00 - तक उपरान्त चतुर्थी
मास - पौष शुक्ल पक्ष , रविवार 14 January
नक्षत्र - धनिष्ठा - 10 - 22 - तक उपरान्त शतभिषा
योग - व्यतिपात - 02 - 39 - तक उप वरियान
करण- गर - 08 -00 - तक उप- वणिज
विशेष:- मकरे अर्क चतुर्थी तिथि क्षय
व्रत -त्योहार - मकर संक्रान्ति, रात 02 -43 से

विशेष:- राशिफल ग्हों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए ।

राहुकाल 16:36 से 17:59 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
उत्पात	06:53 - 08:14	अशुभ	शुभ	17:56 - 19:36	शुभ
चंचल	08:14 - 09:38	शुभ	अमृत.	19:36 - 21:12	शुभ
लाभ	09:38 - 11:01	शुभ	चंचल	21:12 - 22:49	शुभ
अमृत	11:01 - 12:25	शुभ	रोग	22:49 - 24:25	अशुभ
काल.	12:25 - 13:49	अशुभ	काल	24:25 - 02:01	अशुभ
शुभ.	13:49 - 15:12	शुभ	लाभ	02:01 - 03:38	शुभ
रोग	15:12 - 16:36	अशुभ	उत्पात	03:38 - 05:14	अशुभ
उत्पात	16:36 - 17:56	अशुभ	शुभ	05:14 - 06:53	शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,): आप अपने आसपास के लोगों से अच्छी खासी सहायता और पहचान की उम्मीद रख सकते हैं । आप मजबूत आधार और आशावादिता से भरपूर हैं और नयी परियोजनाओं के लिए बिलकुल तैयार हैं लेकिन आपमें अभी भी अच्छी परियोजना को पहचानने की क्षमता बरक़रार है । इसके कारण आप केवल उन्ही परियोजनाओं में निवेश करेंगे जो भविष्य में काफी लाभकारी साबित होंगी ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,): आपकी वर्तमान जिंदगी में काफी उतार चढाव आ रहे हैं लेकिन आपको उनसे जल्दी ही छुटकारा मिलने वाला है । अपना नजरिया हमेशा की तरह सकारात्मक बनाये रखें,स्थिति जल्दी ही बेहतर होगी । लोग आपसे सहायता मांगेंगे और आप उनकी सहायता में व्यस्त होकर अपनी चिंताएं भूल जायेंगें ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,): आज आपको ईमानदारी से काम लेना है। आज का दिन अपने काम की बारीकियों पर ध्यान देने और उन महत्वपूर्ण कामों को पूरे कर लेने के लिए भी बहुत अच्छा है जिन्हें आप कुछ समय से टाल रहे हो । आप इन नीरस रूटीन कामों को पूरा करने में आलस कर रहे हैं लेकिन एक बार आप इन्हें शुरू कर दें तो बहुत जल्दी पूरा भी कर लेंगे ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,): आपको दोस्तों का प्यार पाने के लिए थोडा नम्र बनना पड़ेगा । आप यह नही जानते लेकिन आपको घमंडी समझा जाता है इसीलिए यह सबसे अच्छा समय है कि आप दूसरों की आलोचना करने के स्थान पर अपनी भूतकाल की गतिविधियों का विश्लेषण करें । यह आपके लिए अपने अंतर्मन में झाँकने का बहुत अच्छा समय है और आपको इसका उपयोग अपनी कमियां दूर करने के लिए इसका उपयोग जरुर करना चाहिए ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,): आज अप्रत्याशित रूप से काफी खर्च हो सकता है । आप कोई ऐसी चीज खरीद सकते हैं जिसकी आपको जरुरत नही है लेकिन आपको अच्छी लगती है,इससे आपकी वित्तीय स्थिति काफी प्रभावित भी होगी। अपनी इस खर्च करने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें तो दिन शांति से गुजर जाएगा । आपको आज कुछ नयी वित्तीय योजनायें भी पता चलेंगी ।

कन्या (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,): आज अपना और आपनी सेहत का ध्यान रखना ना भूलें । आज स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी समस्या की आशंका बन सकती है । बहुत ठंडा भोजन खाने से बचें । अगर पहले से ही कोई स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे है तो और अधिक ध्यान रखें । वित्तीय दृष्टि से ना फायदा ना नुकसान वाली स्थिति रहेगी हालाँकि आज कोई बड़ा निवेश ना करना ही ठीक रहेगा ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,): घर पर पवित्रता का वातावरण बना रहेगा और चिंताएं नही रहेंगी । इसीलिए अपने परिवार के साथ रहें और खुशियाँ बाँटें ।आपको जीवन में निराशा से दो दो हाथ करने का नया तरीका निकलना होगा ,जो आपके भीतर कई कारणों से भरी हुई है । आपकी भीतरी शक्ति समाधान तलाशने में मदद करेगी ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,): अपने सृजनात्मक विचारों को कार्यान्वित करने का यह बहुत अच्छा समय है । अपने विचारों को बड़ा रखें तथा किसी बोद्धिक या व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिस्सा लें, इससे आपको औरो पर बढ़त हासिल होगी । हालाँकि ऐसा करते हुए आपको कुछ वित्तीय परेशानियां आ सकती हैं ।आप पिछले कई दिनों से अपनी डाइट में काफी सारे अंतर लाने के बारे में सोचते रहे हैं ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे): आज आप अनुभव करेंगे कि आप सामान्य से कुछ अधिक बोल रहे हैं । आप पिछले कुछ समय से चालाकी भरा व्यवहार कर रहे हैं लेकिन आज आप इससे खुद ही परेशानी अनुभव करेंगे । आज आप वह सच्चाई नही उगलना चाहते जो शायद कईयों को अच्छी नहीं लगेगी । आज के लिए किसी एकान्त कार्यकलाप की योजना बनाएं ।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी): आपको मदद की जरुरत है और आप जितनी जल्दी यह बात समझ लेंगे उतना ही अच्छा है । समय रहते किसी दोस्त या मेंटर से मिली मदद से आप फिर से जीवन में आपस आ पायेंगे। जिन बदलावों का आप विरोध करते आ रहे हैं ,उनकी महत्ता आपको अब समझ में आएगी और आप खुद उन्हें करने की प्रक्रिया शुरू करेंगे । अपनी व्यवाहरिक जरूरतों के रास्ते में अपने अहम को न आने दें ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,): आज आपको अपनी आरामदायक स्थिति से बाहर आकर कुछ गंभीर प्रयास करने हैं । सावधान रहें कि बिलकुल परम्पराओं के अनुसार चलने से आपको कुछ हासिल नही होगा। गंभीर होकर प्रयास करने से ही आपको बहाव के साथ बहते रहने के स्थान पर जीवन जीने की सही भावना आएगी । यह इस समय आपको मुश्किल जरुर लगेगा ,लेकिन अगर एक बार आप यह कर गये तो आपका जीवन ही बदल जाएगा ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची): आप सच्चे और ईमानदार लोगों से मिलना पसंद करते हैं । लेकिन आज आपकी मुलाक़ात उनसे होगी जो मुखौटे लगाये रखते हैं ।उन्हें पहचानने की कोशिश करें । आपसे जल्दी फैसले लेना समय की मांग रहेगी । किसी भी फैसले को अंतिम रूप देने से पहले अच्छी तरह सोच लें और फैसले लेने तक कोई भी अन्य काम न करें ।

पं ।महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

10 सेकेंड गले लगने से बीमारियां दूर

पार्टनर का साथ टॉनिक : पति को न करें आहत, दंपत्ती सुनें एक-दूसरे के दिल की बात

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एक्सक्लूसिव डेस्क)। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में सबसे ज्यादा मेंटल हेल्थ प्रभावित हो रही है। जब कोई इंसान स्ट्रेस में होता है तो वह खुद को इतना परेशान कर लेता है कि कई बार डिप्रेशन तक का शिकार हो जाता है और मनोचिकित्सक के पास जाकर थेरेपी लेनी पड़ती है।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि अगर किसी व्यक्ति को यह दिक्कत हो रही हो तो उनका पार्टनर ही बेस्ट थेरेपिस्ट का काम कर सकता है। सुनने में यह भले ही अजीब लगे लेकिन यह हकीकत है।

कई रिसर्च इस बात को साबित कर चुकी हैं कि पार्टनर का साथ व्यक्ति को कई तरह की बीमारियों से बचा सकता है। यहां तक कि मेंटल हेल्थ भी सुधारने में कामयाब होता है। बस जरूरत है तो सिर्फ बात करने की। अपने पार्टनर से बात करना और उससे अपनी परेशानियों को शेयर करना एक तरह से थेरेपी का काम करता है और पार्टनर को बेस्ट थेरेपिस्ट बनाता है।

पार्टनर का साथ मैजिकल टॉनिक जैसा

रिलेशनशिप काउंसलर डॉ. गीतांजलि शर्मा कहती हैं कि पार्टनर का साथ मैजिक की तरह काम करता है। साथी से की गई बातचीत जिंदगी को बिंदास और सेहतमंद बनाती है। इससे व्यक्ति का अपने पार्टनर के साथ इमोशनल और फिजिकल कनेक्शन एक असरदार टॉनिक की तरह काम करता है।

पार्टनर का साथ इमोशनल सिक्योरिटी देता, उसका हाथ पकड़ना, प्यार भरी नजरों से देखना और 'आई लव यू' जैसे शब्द बोलना सारी टेंशन को चंद सेकंड में दूर कर देता है। अगर कोई शादीशुदा है या रिलेशनशिप में है तो पार्टनर का साथ उसकी जिंदगी में अहम भूमिका निभाता है जो कि व्यक्ति की इमोशनल हेल्थ के लिए बहुत जरूरी है।

पार्टनर को बस सुनें

अक्सर महिलाओं की शिकायत रहती है कि उनके हसबैंड उन्हें टाइम नहीं देते। उनके साथ नहीं बैठते, उनसे बात नहीं करते और जब साथ में बैठते हैं तो सास-ससुर भी बगल में बैठे होते हैं। ये सभी बातें मैरिड यंग वुमन की परेशानी की वजह है। यह रिलेशनशिप पर निगेटिव असर डालती है। ध्यान रहे कि रिलेशनशिप भी 'मी टाइम' मांगती है।

कई बार लड़कियां उम्मीद करती हैं कि उनका पार्टनर बिना बोले उनके मन की बात को समझें। लेकिन लड़कों के पास

कोई सुपर नेचुरल पावर नहीं होती जो वो अपने पार्टनर की मन की बातों को बिना कहे सुने ही समझ लें। इसलिए लड़कियां अपने हसबैंड से क्या चाहती हैं, उन्हें खुलकर बताएं। जब तक बात नहीं होगी तो पार्टनर कैसे समझेगा कि सामने वाला क्या चाहता है?

लड़कियां इमोशनल होती हैं, वह लड़कों के साथ घूमना-फिरना नहीं चाहतीं, बस चाहती हैं कि उनकी बात सुनी जाए। ऐसे में लड़कों को उनकी बात शांति से सुननी चाहिए। भले ही वह बात लड़कों के पेरेंट्स से जुड़ी ही क्यों ना हो।

वाइफ चाहती है कि हसबैंड उन्हें जज ना करें, उनकी आलोचना ना करें, उन्हें डांटे नहीं, बस चुपचाप उनकी बात सुनें। वह नहीं चाहतीं कि उनका हसबैंड सास-ससुर से हुई अनबन को सुलझाए। ऐसी स्थिति में अगर हसबैंड उनके दिल का हाल सुने और प्यार से उन्हें गले लगा ले, तब भी लड़की की शिकायत काफी हद तक दूर हो सकती है।

हसबैंड-वाइफ का रिश्ता मजबूत रहे, इसके लिए हर कपल को प्रीमैरिटल काउंसिलिंग लेनी चाहिए। प्रीमैरिटल काउंसिलिंग के सेशन शादी से पहले ही पार्टनर को एक-दूसरे को समझने में मदद करते हैं।

एंटीबायोटिक्स का काम करता आपसी प्यार और अंडरस्टैंडिंग

'ब्रेन, बिहेवियर एंड इम्यूनिटी' नाम के हेल्थ जर्नल में छपी रिपोर्ट के अनुसार पार्टनर से इमोशनल और फिजिकल नजदीकी कई बीमारियों में रामबाण का करती है। पार्टनर से प्यार भरा रिश्ता बॉडी के हैपी हॉर्मोन्स को बढ़ाता है और कॉर्टिसोल नाम के स्ट्रेस हॉर्मोन को छूमंतर कर देता है। इससे शरीर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और दिल की बीमारियां भी नहीं सतातीं। जब इंसान खुश रहता है तो मेंटल हेल्थ भी दुरुस्त रहती है। वहीं, एक और रिसर्च में दावा किया गया है कि सिर्फ 10 सेकंड तक पार्टनर के गले लगने भर से इम्यूनिटी बढ़ती है।

उदयपुर स्थित जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के पैड्रिएटक एंडोक्रिनोलॉजिस्ट डॉक्टर विनोद बोकाडिया ने बताया कि इंसान के दिमाग में न्यूरोट्रांसमीटर होते हैं जो इमोशन को कंट्रोल करते हैं। जब किसी व्यक्ति को टेंशन में होता है तो स्ट्रेस लेवल बढ़ता है और लाइफस्टाइल से जुड़ी बीमारियां घेरने लगती हैं जैसे डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, कॉलेस्ट्रोल, मोटापा।

जब कपल के बीच प्यार हो और वह आपसी बातचीत के जरिए अपना स्ट्रेस रिलीज कर सकते हों तो इसे डोपामाइन और एडेनोसाइन नाम के हार्मोन रिलीज होते हैं जो मेंटल हेल्थ को सही रखते हैं।

महिलाओं को माइग्रेन नहीं सताता

महिलाओं के शरीर में हमेशा हॉर्मोंस का उतार-चढ़ाव होता रहता है। खासकर जब एस्ट्रोजन का फ्लक्चुएशन बढ़ता है तब महिलाओं को माइग्रेन के दर्द का अटैक होता है। अमेरिकन हेडेक सोसायटी ने सर्वे में पाया कि 5 में से 4 लोगों में माइग्रेन की वजह स्ट्रेस है। महिलाओं में माइग्रेन का कारण उनकी 'अनहैप्पी मैरिड लाइफ' थी। कई रिसर्च में यह भी पाया गया कि अच्छी सेक्स लाइफ माइग्रेन को दूर रखती है। अच्छी सेक्स लाइफ तभी होती है जब कपल के बीच अच्छा कम्युनिकेशन हो।

हेल्थलाइन में छपी रिपोर्ट के अनुसार 2013 में एक स्टडी हुई, जिसमें अमेरिका की 60% महिलाओं ने माना कि उनकी पार्टनर के साथ सेक्स लाइफ अच्छी होते ही माइग्रेन कम या खत्म हो गया।

चोट जल्दी उभरती है

कपल के बीच पॉजिटिव रिलेशनशिप घाव को जल्दी भरने में मदद करता है। यह ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर की रिसर्च के अनुसार जो कपल एक-दूसरे के साथ खुश रहते हैं और प्यार भरी बातें करते हैं, उनके घाव दूसरे लोगों के मुकाबले ज्यादा तेजी से भरते हैं।

सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रीवेंशन के अनुसार लंबे समय से एक साथ रह रहे कपल एक-दूसरे का दर्द भी कंट्रोल करते हैं। यह स्टडी 1 लाख से ज्यादा सिंगल और मैरिड कपल पर हुई। इन सभी को सिरदर्द और पीठ दर्द की समस्या थी। इसमें शादीशुदा लोगों पर दर्द का असर कम देखा गया।

पार्टनर के गले लगने और उसके करीब सोने से थकान होती दूर

पार्टनर का हाथ थामकर सोने से शरीर में गर्मी पैदा होती है जिससे ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। इससे व्यक्ति की थकान और तनाव दोनों दूर ही नहीं होते बल्कि उम्र भी बढ़ती है। यूएन नेशनल हेल्थ इंटरव्यू सर्वे के अनुसार खुशहाल शादीशुदा कपल सिंगल इंसान की तुलना में 58% ज्यादा जीते हैं।

जो लोग अनिद्रा का शिकार होते हैं, पार्टनर के साथ सोने से यह दिक्कत भी दूर रहती है।

पार्टनर की ईगो पर न करें अटैक

हर पुरुष में 'मैन ईगो' होती है। उसे घमंड कहना गलत है, वह पुरुषों की सेल्फ रिस्पेक्ट होती है। लड़कों को प्रैक्टिकल माना जाता है लेकिन लड़के भी इमोशनल होते हैं। वह खुद की भावनाओं को खुलकर साझा नहीं कर पाते। अक्सर लड़कियां हसबैंड पर आरोप लगाती हैं कि तुम मुझे नहीं समझते लेकिन पत्नी को खुद से सवाल पूछना चाहिए कि वह हसबैंड को कितना समझती है?

लड़का भी पत्नी से केयर चाहता है लेकिन स्ट्रेस के चलते बात नहीं कर पाता। ऐसे में लड़कियों को शक होता है कि हसबैंड का कहीं किसी से अफेयर तो नहीं। ऐसा सोचना गलत है। हर लड़की को पता होना चाहिए कि उनके हसबैंड का मूड कब खराब होता है और कम अच्छा इसलिए उनसे लड़ने या बेवजह के आरोपों को लगाने से बेहतर है कि उन्हें इतना सहज करें कि वह अपनी भावनाओं को खुलकर बताए। हसबैंड को वाइफ के मुकाबले फिजिकल इंटिमेसी बहुत जरूरत होती है। यह उनके लिए भी एक थेरेपी का काम करती है।

हसबैंड से कभी सवाल-जवाब ना करें इससे उनका ईगो हर्ट हो सकता है। पार्टनर को वक्त दें और जब वह सहज हो तब उनकी तकलीफ को जानें।

आरुषि तलवार की हत्या के 15 साल बाद

जारी रहस्य और पुलिस की चूक

नई दिल्ली, 13 जनवरी (एक्सक्लूसिव डेस्क)। चौदह वर्षीय स्कूली छात्रा आरुषि तलवार 16 मई 2008 को अपने नोएडा स्थित घर में अपने बेडरूम में मृत पाई गई थी। उसका गला कटा हुआ और सिर कुचला हुआ था। प्रारंभ में, तलवार परिवार के लिव-इन नौकर, हेमराज को मुख्य संदिग्ध माना गया। लेकिन दो दिन बाद, शरीर पर आरुषि जैसे ही घावों के साथ उसका खून से लथपथ शव पाया गया। ऑनर किलिंग की संभावना को ध्यान में रखते हुए, आरुषि के माता-पिता की जांच शुरू की गई। उनके संदेह के बावजूद, किसी भी सबूत या फोरेंसिक निष्कर्ष ने इस सिद्धांत की पुष्टि नहीं की। पुलिस ने हत्याओं से जुड़ी जटिल परिस्थितियों को सुलझाने के प्रयास के तहत आरुषि के माता-पिता, राजेश और नूपुर तलवार का लाई डिटेक्टर और नार्को परीक्षण भी किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 2017 में आरुषि के माता-पिता को दोषमुक्त करार दिया, लेकिन उसके हत्यारे की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। एक और हैरान करने वाला पहलू यह है कि क्या यह मामला सचमुच इतना

पेचीदा है कि न तो उत्तर प्रदेश पुलिस और न ही सीबीआई की दो टीमें इसे सुलझा सकीं। सीबीआई के पास दुनिया के कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण मामलों को सफलतापूर्वक हल करने का श्रेय है। इस मामले में उच्च न्यायालय ने जांच की प्रभावकारिता पर संदेह उठाया।

विशेषज्ञों के अनुसार, इस मामले को, जिसे अक्सर एक क्लासिक व्होडुनिट के रूप में वर्णित किया जाता है, ने जांच और न्यायिक प्रणालियों में स्पष्ट अपर्याप्तता को उजागर किया है। अपराध स्थल पर स्थानीय पुलिस की शुरुआती कार्रवाई नौसिखिया चालों के कारण खराब हो गई, अधिकारियों के पहुंचने से पहले परिवार के सदस्यों और पड़ोसियों ने महत्वपूर्ण सबूतों को खराब कर दिया। छत पर तलवार दंपति के घरेलू नौकर हेमराज के शव को खोजने में नोएडा पुलिस की विफलता ने जांच की गलतियों को और बढ़ा दिया। पोस्ट-मॉर्टम और फोरेंसिक रिपोर्टों ने भी जवाबों की तुलना में सवाल अधिक खड़े किए, जिससे पहले से ही जटिल मामले में और अधिक भ्रम पैदा हो गया। एक चौंकाने वाला खुलासा यह हुआ है कि 16 मई 2008 की सुबह तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की एनसीआर शहर की यात्रा के कारण नोएडा पुलिस इतनी व्यस्त थी कि अपराध स्थल पर उच्च अधिकारी गये ही नहीं। नोएडा के सेक्टर 25 स्थित जल वायु विहार में डॉक्टर दंपति की बेटी की हत्या के संबंध में जब कॉल आई तो स्थानीय पुलिस चौकी के प्रभारी और एक-दो सिपाही ही मौके पर पहुंचे। इन सबके बीच, बुनियादी पुलिसिंग प्रक्रियाओं की अनदेखी की गई। दिल्ली पुलिस के पूर्व अधिकारी अनिल मित्तल ने कहा, "शुरुआत में आरुषि के आवास की तलाशी नहीं ली गई और आसपास के इलाकों की भी गहन जांच नहीं की गई। घरेलू नौकर हेमराज के गायब होने से यह धारणा उत्पन्न हुई कि वही अपराधी था। उसका पता लगाने के लिए एक पुलिस टीम न केवल नोएडा और दिल्ली, बल्कि नेपाल तक भेजी गई।" उन्होंने कहा, अगर उत्तर प्रदेश पुलिस ने कानून-व्यवस्था और जांच के लिए अलग-अलग टीमें बनाई होतीं, तो 16 मई 2008 की सुबह पहुंची यूनिट वीआईपी ड्यूटी की चिंता किए बिना विशेष रूप से हत्या की जांच पर ध्यान केंद्रित कर सकती थी। एक अन्य सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी ने नाम जाहिर न करने की शर्त पर कहा, इस दृष्टिकोण के कारण संभवतः उसी दिन हेमराज के कमरे में शराब की बोतलें, बीड़ी, एक कोल्ड ड्रिंक और तीन इस्तेमाल किए गए ग्लास पाए गए, जो दर्शाता है कि वहाँ और लोग भी थे। "इसके अलावा, रसोई के निरीक्षण से हेमराज यह पता चल सकता था कि हेमराज ने खाना नहीं खाया था, जिसकी पुष्टि बाद में पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से हुई।" विशेषज्ञों ने कहा, "इसके अलावा, डॉग यूनिट के इस्तेमाल से जांचकर्ता तलवार के घर की छत पर पहुंच सकते थे, जहां अंततः हेमराज का शव मिला था। छत की ओर जाने वाली सीढ़ी की रेलिंग पर लगे खून का प्रशिक्षित कुत्तों द्वारा आसानी से पता लगाया जा सकता था।" नवंबर 2013 में, गाजियाबाद की एक विशेष सीबीआई अदालत ने राजेश और नूपुर तलवार को हत्याओं का दोषी पाया, जिसके परिणामस्वरूप दंत चिकित्सक दंपति को आजीवन कारावास की सजा हुई। हालांकि, अक्टूबर 2017 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सीबीआई अदालत के फैसले को पलट दिया, जिससे तलवार दंपति को रिहा कर दिया गया।

चार करोड़ से ज्यादा रुपये का सोना बरामद

पांच तस्कर गिरफ्तार

महासमुन्द, 13 जनवरी (एजेंसियां)। महासमुंद में सोने की तस्करी रोकने के लिए पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने सोने की तस्करी करते हुए पांच लोगों को हिरासत में लिया है। तस्करों के पास से पुलिस ने सात किलो से ज्यादा सोना बरामद किया है। बरामद सोने की कीमत चार करोड़ 76 लाख 86 हजार 400 रुपये बताई जा रही है। आरोपी तस्करों के पास से दो लग्जरी कार और पांच मोबाइल भी पुलिस ने बरामद किया है।

एनएच-53 में रेहटीखोल चेकपोस्ट के पास तस्कर पकड़े गये हैं, खड़कपुर से महाराष्ट्र सोना लेकर जा रहे थे तभी पुलिस ने तस्करों को गिरफ्तार किया है। पांचों तस्कर के खिलाफ धारा 102 के तहत कार्रवाई की गई है। साइबर सेल और सिंघोडा पुलिस ने ये संयुक्त कार्रवाई की है। भारत सरकार की जांच एजेंसी डीआरआई को आगे की कार्रवाई के लिए मामला सौंपा जाएगा।

गिरिराज सिंह बोले- हिंदू विरोधी है कंग्रेस

राम मंदिर ट्रस्ट ने भेजा है निमंत्रण, वो नहीं हो रहे शामिल

रायपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह रायपुर पहुंचे। जहां उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा समेत तमाम जनप्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया।

रायपुर एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि राम मंदिर ट्रस्ट ने सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे को निमंत्रण भेजा है, लेकिन वे नहीं जा रहे हैं क्योंकि वे हिंदू विरोधी हैं।

आगे केन्द्रीय मंत्री ने कहा मैं जिस विभाग का मंत्री हूं उस विभाग का नाम है पंचायती राज ग्रामीण विकास। यहां के ग्रामीणों को पुरानी सरकार ने जिस ढंग से लूटा उसी को मैं ठीक करने आया हूं। छत्तीसगढ़ सरकार कैसे बेहतरी के काम करे उसके लिए सब के साथ बैठक करके आगे की कार्रवाई की जाएगी।

आईएएस रानू साहू, सौम्या चौरसिया, विश्नोई से 3-4 घंटे पूछताछ

कोल स्कैम में नेताओं का कनेक्शन और इन्वॉल्वमेंट की जानकारी जुटा रही ईडी

रायपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के कोल स्कैम केस में रायपुर की सेंट्रल जेल में बंद निलंबित आईएएस रानू साहू, सौम्या चौरसिया और आईएएस समीर विश्नोई से पूछताछ की गई। पिछले 3 दिनों में ईडी की टीम ने 3 से 4 घंटे पूछताछ की है। हालांकि इसमें खास जानकारी हाथ नहीं लगी है। ईडी की टीम स्कैम में नेताओं का कनेक्शन और इन्वॉल्वमेंट की जानकारी जुटा रही है। कोल घोटाले मामले में ईडी को अहम दस्तावेज हाथ लगे है। इस संबंध में ईडी ने जेल में बंद आरोपियों से पूछताछ के लिए रायपुर की स्पेशल कोर्ट में आवेदन लगाया था। जिसे 6 जनवरी को स्वीकार करते हुए कोर्ट के 10 जनवरी से 16 जनवरी तक पूछताछ की अनुमति दी है। कोल स्कैम केस में ईडी की ओर से भिलाई विधायक देवेंद्र यादव, पूर्व विधायक चंद्रदेव राय, कांग्रेस नेता आरपी सिंह, विनोद तिवारी, रामगोपाल अग्रवाल को आरोपी बनाया है। जिसके सबंध में जांच भी चल रही है। बता दें कि देवेंद्र यादव की और से विशेष अदालत में अग्रिम जमानत याचिका लगाई गई थी। कोर्ट ने इसे खारिज करते हुए देवेंद्र समेत 4 लोगों के खिलाफ जमानती वारंट भी जारी किया है। जल्द ही कोल स्कैम केस से संबंधित अन्य लोगों की गिरफ्तारी हो सकती है।

कोल स्कैम मामले से संबंधित जेल में बंद आरोपियों की 6 जनवरी को पेशी थी। पेशी में 3 को छोड़कर बाकी 7 आरोपी कोर्ट में हाजिर हुए। सौम्या चौरसिया, रानू साहू और निखिल चंद्राकर ने मेडिकल लगाकर कोर्ट आने में असमर्थता जताई थी।

हाट में लगी आग, 13 बाइक जलकर खाक

दूर तक दिखा धुएं का गुबार, पटाखा जलाने से हादसा, मकर संक्रांति पर लगा था बाजार

पूर्वी सिंहभूम, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पूर्वी सिंहभूम जिले में एक साप्ताहिक बाजार में आग लग गई। देखते-ही-देखते 13 बाइक जलकर खाक हो गई। पटाखे जलाने के कारण ये हादसा हुआ। बाजार में पटाखे की दुकान थी, जिसके बाद एक-एक कर पटाखे फटने लगे। आग फैल गई और दूर तक धुएं का गुबार उठता दिखा। आग ने आसपास के 13 बाइक को अपनी चपेट में ले लिया। हादसा जिले के चाकुलिया प्रखंड के केरुकोचा हाट हुआ।

आग लगने से पूरे हाट में अफरातफरी मच गई। इस हादसे में 13 बाइक के अलावे एक साइकिल और पिकअप वैन जलकर खाक हो गया। एक घंटे की मशक्कत के बाद दमकल की एक गाड़ी ने आग पर काबू पाया।

मकर संक्रांति पर लगा था हाट

श्यामसुंदरपुर थाना क्षेत्र (चाकुलिया प्रखंड) एनएच 18 से सटे केरूकोचा मैदान में हर मंगलवार को हाट लगाया जाता है। लेकिन मकर संक्रांति को लेकर शनिवार को वहां हाट लगाया गया था। यहां पटाखे की दुकान सजी थी। पटाखा टेस्ट करने के दौरान आग लग गई। इधर अग्निशमन विभाग की एक गाड़ी मौके पर पहुंची और करीब 1 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

बहरागोड़ा के विधायक समीर कुमार मोहंती ने कहा कि लोग सालभर मकर संक्रांति के हाट का इंतजार करते हैं। लोगों को सस्ते में सामान मिलता है। पटाखे दुकान के कारण लोगों की गाड़ियां जल गईं। मैंने प्रशासन से मुआवजे को लेकर बात की है।

मैदान में सिर्फ पटाखा की दुकानें सजी थी। एक दर्जन से अधिक पटाखा की दुकानें लगाई गई थी। ग्रामीणों का कहना है कि पटाखा जलाने के दौरान पहले एक दुकान में आग लगी। इसके बाद एक-एक कर सभी पटाखा दुकानों में आग लग गई। राहत की बात ये रही कि कोई व्यक्ति इसकी चपेट में नहीं आया। वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

भाग निकले पटाखा दुकानदार

घटना के बाद पटाखा के सभी दुकानदार मौके से भाग निकले। वहीं, हाट में खरीदारी के लिए आनेवाले लोगों ने अपनी बाइक और दूसरी गाड़ियां को पटाखे की दुकानों के पास पार्क की थी। कई लोगों ने अपने वाहनों को वहां से हटा लिया। इधर, पुलिस पटाखा दुकानदारों का पता लगाने में जुटी है। श्यामसुंदरपुर थाना के प्रभारी दिलीप विलूम ने बताया कि आग लगने से एक दर्जन से अधिक गाड़ियां जल गई।

एक लाख का इनामी नक्सली कमांडर मुठभेड़ में ढेर

बीजापुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में हुई मुठभेड़ में 1 लाख का इनामी नक्सली ढेर हो गया है। पुलिस ने मुठभेड़ में 3 से 4 नक्सलियों के घायल होने का भी दावा किया है। बताया जा रहा है कि मारा गया नक्सली जन मिलिशिया कमांडर था।

पुलिस ने मौके से हथियार, विस्फोटक और रोजमर्रा का सामान बरामद किया है। मामला गंगालूर थाना क्षेत्र के पुसनार जंगल का है। पुलिस के मुताबिक गुरुवार को दंतेवाड़ा डीआरजी, बीजापुर डीआरजी और सीआरपीएफ की संयुक्त पार्टी नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। सूचना थी कि गंगालूर थाना क्षेत्र के पुसनार के जंगलों में 20 से 25 सशस्त्र नक्सलियों की मौजूदगी है। गंगालूर एरिया कमेटी सचिव दिनेश मोडियाम के भी होने की सूचना थी।

भाजपा सांसद को अरेस्ट करने का दबाव बनाते थे भजंत्री

आईपीएस सुभाष चंद्र ने गृह विभाग को लिखी चिट्ठी, देवघर डीसी रहे मंजूनाथ पर लगाए आरोप

रांची, 13 जनवरी (एजेंसियां)। झारखंड में एक आईपीएस की 20 पन्ने की चिट्ठी ने राजनीतिक हवा तेज कर दी है। देवघर के तत्कालीन एसपी और वर्तमान में सीबीआई के एसपी सुभाष चंद्र जाट ने देवघर के डीसी रहे मंजूनाथ भजंत्री पर गंभीर आरोप लगाए हैं। इस चिट्ठी में गोड्डा सासंद निशिकांत दुबे पर जबरन कार्रवाई करने और इसके लिए दबाव बनाने का जिक्र है।

सुभाष चंद्र जाट ने गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव (एसीएस) को पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा है कि भजंत्री गोड्डा से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे पर कार्रवाई के लिए दबाव बनाते थे। उन्होंने लोकसभा

समिति के सामने भी दुबे के खिलाफ गलत शिकायत करने का दबाव बनाया था।

यह भी बताया है कि गोड्डा से भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे से डीसी मंजूनाथ भजंत्री निजी दुश्मनी साधते थे और उनपर दबाव बनाते थे कि किसी भी तरह सांसद निशिकांत दुबे को किसी केस में फंसाएं और उन्हें गिरफ्तार कर लें। दूसरी तरफ सांसद निशिकांत दुबे लगातार सोशल मीडिया एक्स के माध्यम से आरोप लगाते रहे कि अधिकारी उन पर जबरन दबाव बनाते हैं। एफआईआर दर्ज करते हैं।

देवघर के तत्कालीन एसपी और वर्तमान में सीबीआई के एसपी सुभाष चंद्र जाट ने गृह विभाग के एसीएस को पत्र लिखा है। इस चिट्ठी में उन्होंने बताया है कि कैसे देवघर के तत्कालीन डीसी मंजू नाथ भजंत्री सांसद निशिकांत दुबे पर कार्रवाई का दबाव बनाते थे। उन्हें जबरन गिरफ्तार करने के लिए कहते थे। उन्होंने लोकसभा समिति के सामने भी दुबे के खिलाफ गलत शिकायत करने का दबाव बनाया था। तब लोकसभा समिति सांसद द्वारा भजंत्री के खिलाफ लाए गए प्रिविलेज मोशन (विशेषाधिकार प्रस्ताव) की जांच कर रही थी। अपनी चिट्ठी में एसपी ने लिखा है कि सांसद के खिलाफ कार्रवाई करने का दबाव बनाने के बाद भी कार्रवाई से इनकार करने पर सांसद जब देवघर से बाहर किसी दौरे पर जाते थे तो वे उनके लिए सुरक्षा और गाड़ी की सुविधा भी उपलब्ध नहीं करवाते थे।

पांच दिन के चीन दौरे से मोहम्मद मोइज्जू को क्या हुआ हासिल

राष्ट्रपति ऑफिस ने जारी किया बयान

माले, 13 जनवरी (एजेंसियां)। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मोइज्जू शुक्रवार को चीन की अपनी पांच दिन कीयात्रा खत्म कर लौटे हैं। देश लौटने के बाद उन्होंने बताया है कि क्यों उनका ये दौरा बहुत अहम था। मोइज्जू की राष्ट्रपति बनने के बाद किसी विदेशी राष्ट्र की पहली राजकीय यात्रा थी, जिसके लिए उन्होंने चीन को चुना। मालदीव के राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि चीन मालदीव के सबसे करीबी सहयोगियों और विकास भागीदारों में से एक है। ऐसे में चीन को इस यात्रा के लिए चुना गया और इस दौरे पर दोनों देशों के बीच बहुत अहम समझौते भी हुए।

मालदीव के राष्ट्रपति ऑफिस से जारी बयान में कहा गया है, प्रेसीडेंट मोहम्मद मोइज्जू और फर्स्ट लेडी साजिदा मोहम्मद चीन का सफल दौरा पूरा कर लौट आए हैं। दोनों चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के न्योते पर बीजिंग पहुंचे थे। जहां उनका शानदार स्वागत और सम्मान हुआ। इस दौरे के दौरान दोनों देशों के बीच कई अहम डील हुई हैं, जिनका फायदा आने वाले समय में होगा। दोनों देशों की सरकारों ने 20 प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों में हुए करार शामिल हैं। बयान में कहा गया है कि दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों के विकास को बहुत महत्व देते हैं। दोनों देशों में जो समझौते हुए उनमें पर्यटन सहयोग के अलावा आपदा जोखिम, अर्थव्यवस्था और डिजिटल अर्थव्यवस्था में निवेश को मजबूत करना शामिल है। साथ ही बेल्ट एंड रोड पहल पर सहयोग योजना के निर्माण में तेजी लाना और मले में सड़क परियोजनाओं का विकास शामिल है। वहीं चीन से लौटने के बाद मोइज्जू ने कहा कि वह चीन की अपनी पहली राजकीय यात्रा करने और इस साल चीन में पहले विदेशी राष्ट्राध्यक्ष बनने पर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। बता दें कि मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मोइज्जू बीते साल चुनाव जीतने के बाद से ही भारत की बजाय चीन की ओर झुकाव रख रहे हैं। मोइज्जू के कई बयानों की वजह से दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बना था। उन्होंने मालदीव से भारतीय सैनिकों को भी वापस भेजने के भी बात कही है।

दोनों देशों के कुछ अहम समझौतों को बढ़ाने से भी मोइज्जू इनकार कर चुके हैं। इससे दोनों देशों के बीच रिश्ते फिलहाल सहज नहीं दिख रहे हैं।

दुनिया के सबसे ताकतवर पासपोर्ट में पहले नंबर पर छह देश

पाक कमजोर की लिस्ट में

वॉशिंगटन, 13 जनवरी (एजेंसियां)। दुनिया के सबसे ताकतवर पासपोर्ट्स की सूची जारी हो चुकी है। हेनली पासपोर्ट इंडेक्स 2024 के मुताबिक, इस बार पहले नंबर पर एक-दो नहीं बल्कि छह देश हैं। यानी इन छह देशों के पासपोर्ट सबसे ताकतवर हैं। यह पासपोर्ट अपने नागरिकों को दुनिया के 227 गंतव्यों में से 194 में बिना वीजा के एंट्री की सुविधा मुहैया कराते हैं। जिन छह देशों ने पहले नंबर पर जगह बनाई है, उनमें यूरोप के फ्रांस, जर्मनी, इटली और स्पेन शामिल हैं। वहीं, लगातार पांच वर्षों से इस स्थान पर बने रहे एशियाई देश जापान और सिंगापुर एक बार फिर नंबर-1 हैं। हेनली पासपोर्ट इंडेक्स के टॉप-10 में एक बार फिर यूरोपीय देशों ने पैठ बनाई है। लिस्ट में दूसरे स्थान पर दक्षिण कोरिया के साथ फिनलैंड और स्वीडन हैं, जजिनके पासपोर्ट 193 गंतव्यों तक बिना वीजा जाने की सुविधा देते हैं। वहीं, तीसरे स्थान पर ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, आयरलैंड और नीदरलैंड हैं, जिनके पासपोर्ट पर नागरिक 192 गंतव्यों पर वीजा-फ्री एंट्री ले सकते हैं। 191 गंतव्यों तक बिना वीजा के जाने की छूट के साथ ब्रिटेन ने चौथे स्थान पर जगह बनाई है। वह पिछले साल छठे पायदान पर था। भारत को इस लिस्ट में 80वें स्थान पर रखा गया है। भारतीय अपने पासपोर्ट के जरिए मौजूदा समय में 62 गंतव्यों पर बिना वीजा के जा सकते हैं।

इनमें थाईलैंड, इंडोनेशिया, मॉरिशस, श्रीलंका और मालदीव शामिल हैं। दूसरी तरफ भारत के पड़ोसी देशों की बात करें तो जहां 85 गंतव्यों में वीजा-फ्री एंट्री के लिए चीन को 62वें स्थान पर रखा गया है। वहीं, सबसे कमजोर पासपोर्ट की बात की जाए तो इसमें अफगानिस्तान का नंबर सबसे ऊपर है। हालांकि, पाकिस्तान का पासपोर्ट भी सबसे कमजोर की लिस्ट में चौथे नंबर पर है। युद्ध प्रभावित सीरिया और इराक के पासपोर्ट इस लिस्ट में दूसरे और तीसरे नंबर हैं।

सबसे कमजोर पासपोर्ट में पाकिस्तान की स्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसके पासपोर्ट की स्थिति युद्ध झेल रहे यमन और सोमालिया से भी खराब है।

अमेरिका ने यमन की राजधानी सना में फिर बरसाए बम

हूती विद्रोहियों की चेतावनी- इसकी सजा मिलेगी

वॉशिंगटन, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अमेरिकी सेना ने शनिवार की सुबह एक बार फिर से यमन के हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर बमबारी की। इससे पहले अमेरिका ने शुक्रवार को भी ब्रिटेन की सेना के साथ मिलकर यमन में कई जगहों पर हूती विद्रोहियों के खिलाफ भीषण हवाई हमले किए थे। शनिवार को हुआ हमला राजधानी सना में हूती विद्रोहियों के ठिकानों को निशाना बनाकर किया गया।

शुक्रवार को अमेरिका और ब्रिटेन के संयुक्त हमले में 28 स्थानों पर हूती विद्रोहियों के 60 से ज्यादा ठिकानों पर हमले किए गए थे। साथ ही अमेरिका ने अपने व्यापारिक जहाजों को कुछ दिनों तक लाल सागर से दूर रहने की सलाह दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने हूतियों पर हवाई हमले की पुष्टि करते हुए ही कहा था कि अगर हूती विद्रोहियों ने व्यापारिक जहाजों को निशाना बनाना बंद नहीं किया तो उन पर फिर से निशाना बनाया जा सकता है। अमेरिका के हमलों के बाद पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ने की आशंका पैदा हो गई है, जो पहले से ही इजराइल हमास युद्ध की वजह से तनाव से जूझ रहा है।

वहीं अमेरिका के हमलों के बाद हूती विद्रोहियों ने भी जवाबी कार्रवाई करने की चेतावनी दी है। हूती सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल याहया सारी ने बयान जारी कर कहा है कि अमेरिका को इन हमलों की सजा मिलेगी। अमेरिका का कहना है कि हवाई हमलों में हूती विद्रोहियों के उन ठिकानों को निशाना बनाया गया, जहां ज्यादा जनसंख्या नहीं थी और खासकर हूतियों के हथियारों, रडार और अहम ठिकानों पर हमले किए गए। इन हमलों में ज्यादा लोगों की मौत की आशंका नहीं है।

गौरतलब है कि ईरान समर्थित हूती विद्रोही इजराइल हमास युद्ध के बाद से लाल सागर से गुजरने वाले व्यापारिक जहाजों को निशाना बना रहे थे। अमेरिकी नौसेना ने कई बार हूती विद्रोहियों के ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम किया था। हालांकि बार-बार चेतावनी के बावजूद हूती विद्रोहियों का जहाजों को निशाना बनाना जारी था। इसके चलते अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट बाधित हो रहा था। यही वजह रही कि अमेरिका और उसके सहयोगी देश ब्रिटेन ने शुक्रवार को यमन में हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर भारी गोलाबारी की।

यूक्रेन को दिए 8 हजार करोड़ के अमेरिकी हथियार लापता

पेंटागन के ऑडिट में खुलासा, मंत्रालय ने अपने ही विभाग की रिपोर्ट को गलत बताया

कीव, 13 जनवरी (एजेंसियां)। रूस से जंग लड़ने के लिए यूक्रेन की मदद कर रहे अमेरिका को नहीं पता की उनकी तरफ से दिए गए 1 बिलियन डॉलर यानी 8 हजार करोड़ रुपए के हथियार कहां हैं। अमेरिका के रक्षा मंत्रालय पेंटागन की ऑडिट रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है।

पेंटागन के इंस्पेक्टर जनरल के मुताबिक यूक्रेन को भेजे गए 8 हजार करोड़ रुपए के हथियारों का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला है। शक जताया गया है कि या तो एक बिलियन डॉलर के हथियारों को कहीं और भेज दिया गया है या उनकी लूट हुई है।

न्यूज एजेंसी एएफपी के मुताबिक डिफेंस डिपार्टमेंट के ऑफिस ने गुरुवार को दिखाया कि यूक्रेन को दी गई 1.7 बिलियन डॉलर की मदद से 59% यानी लगभग 1 बिलियन डॉलर का कोई ब्योरा ही नहीं है। ये रिपोर्ट उस वक्त आई है जब अमेरिका की रिपब्लिकन पार्टी यूक्रेन और इजराइल को दी जाने वाली 105 बिलियन डॉलर की मदद को रोके हुए है। अमेरिका के डिफेंस डिपार्टमेंट के प्रेस सेक्रेटरी ब्रिगेडियर जनरल पैट्रिक राइडर ने अपने ही रक्षा विभाग के दावों को खारिज किया है। उन्होंने कहा है कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि हथियारों को कहीं और भेजा गया। हमने हथियारों को यूक्रेन में तैनात और उनका इस्तेमाल होते हुए देखा है। पैट्रिक राइडर ने हथियारों की जानकारी नहीं होने को रूस का प्रोपोगैंडा बताया है। हालांकि, कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि अमेरिका की एम4 राइफल्स का इस्तेमाल हमास और जम्मू कश्मीर में आतंकी कर रहे हैं। न्यूज एजेंसी एपी के मुताबिक अमेरिकी कांग्रेस ने अब तक नाटो और यूक्रेन को 100 बिलियन डॉलर की मदद दी है। इसमें से 75 बिलियन डॉलर की मदद यूक्रेन को गई है। अमेरिका ने यूक्रेन को एंटी टैंक मिसाइल, जमीन से जमीन पर वार करने वाली मिसाइलें, कामिकाजे ड्रोन, आर्मर्ड व्हीकल जैसे दर्जनों हथियार दिए हैं। ऑडिट में 1 बिलियन डॉलर के हथियारों के लापता होने के पीछे मॉनिटरिंग और स्टाफ की कमी, वॉर जोन में हथियार पहुंचे या नहीं इसकी मॉनिटरिंग नहीं हो पाना बताया गया है।

डिफेंस डिपार्टमेंट के जनरल इंस्पेक्टर का ऑफिस मामले की जांच कर रहा है। द इंडिपेंडेंट की रिपोर्ट के मुताबिक मामले की जांच सिक्योरिटी एसिस्टेंस के गलत इस्तेमाल के एंगल से की जा रही है। अमेरिका में काफी वक्त से यूक्रेन को भेजे जाने वाली मदद की जवाबदेही तय करने की मांग उठाई जा रही है।

चीन में एक बार फिर कोयले की खदान में हादसा, 10 की मौत

बीजिंग, 13 जनवरी (एजेंसियां)। चीन के हेनान प्रांत में शनिवार को कोयले की एक खदान में बड़ा हादसा हो गया। इसमें कम से कम 10 लोगों की मौत हुई है, जबकि छह लोग गायब हैं। अधिकारियों के मुताबिक, यह दुर्घटना पिंगदिंगशान में कोयले और गैस के संपर्क में आने के बाद हुई। हादसे में पिंगदिंगशान तिआनन कोल माइनिंग कंपनी लिमिटेड के कर्मचारियों की जान गई है। शिन्हुआ न्यूज एजेंसी के मुताबिक, जब यह घटना हुई तब 425 लोग साइट पर काम कर रहे थे। इनमें से 380 को सही सलामत निकाल लिया गया। राहत-बचाव कार्य अभी भी जारी है। कोयला खदान की देख-रेख में लगे अधिकारियों को कस्टडी में ले लिया गया है।

चीन में आम हैं कोयला खदान में दुर्घटनाएं

चीन में खदान दुर्घटनाएं आम हैं, लेकिन हाल के वर्षों में इनमें मरने वालों की संख्या में कमी आई है। चीन कोयले का सबसे बड़ा निर्माता और उपयोगकर्ता है। इससे पहले 21 दिसंबर को चीन के हेईलोंगजिआंग प्रांत में कोयले की खदान में दुर्घटना में कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई। वहीं, 13 लोग घायल हो गए।

मॉरीशस में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा पर 2 घंटे छुट्टी

पोर्ट लुई, 13 जनवरी (एजेंसियां)। मॉरीशस की सरकार ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर 22 जनवरी को हिंदू धर्म मानने वाले कर्मचारियों के लिए 2 घंटे की छुट्टी की घोषणा की है। इस दौरान वे स्थानीय कार्यक्रमों में भाग ले सकेंगे। मॉरीशस की कैबिनेट ने शुक्रवार को इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। कैबिनेट की तरफ से जारी किए प्रस्ताव में कहा गया है कि 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन एक ऐतिहासिक घटना है। यह अयोध्या में भगवान राम की वापसी का प्रतीक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 22 जनवरी को दोपहर 2 बजे से हिंदुओं को दो घंटे की स्पेशल छुट्टी दी जाएगी। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जुगनाथ ने कैबिनेट के इस फैसले पर कहा कि ये हिंदुओं की भावनाओं और परंपराओं का सम्मान करने के लिए छोटी सी कोशिश है। बता दें कि अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पीएम नरेंद्र मोदी सहित कई सीनियर नेता मौजूद रहेंगे। पूरे कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट किया जाएगा। मॉरीशस के सांसद महेंद गंगा प्रसाद ने प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताते हुए कहा था कि सिर्फ पीएम मोदी ही अयोध्या को फिर से दुनिया के सामने ला सकते थे और उन्होंने ऐसा कर दिखाया है। मैं और मॉरीशस में रह रहे हिंदू आज इस बात से बेहद खुश हैं कि भगवान राम का मंदिर अब वहां है, जहां वे पैदा हुए थे।

पेरू की एलियन ममी हड्डियों की बनी गुड़िया निकली

दावा- इंसान-जानवरों के अंगों को गोंद से चिपकाया, इनका दूसरी दुनिया से ताल्लुक नहीं

लिमा, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पेरू के एयरपोर्ट पर मिले कथित एलियन के कंकाल असल में इंसानों और जानवरों के अंगों से बनी डॉल हैं। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, पेरू की राजधानी लिमा में शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कई विशेषज्ञों ने यह दावा किया है। उन्होंने कहा है कि ये शव किसी बाहरी दुनिया के नहीं बल्कि जानवरों की हड्डियों से बने हैं। इन्हें सिंथेटिक गोंद की मदद से चिपकाया गया है।

पेरू इंस्टीट्यूट फॉर लीगल मेडिसिन एंड फॉरेंसिक साइंस के प्रोफेसर फ्लावियो एस्ट्राडा ने कहा- कंकालों के एलियन होने की बात सिर्फ एक कहानी है। कंकालों के तीन उंगली वाले हाथ की भी जांच की गई है। इसकी हड्डियां पेरू के ही नाज्का क्षेत्र से ली गई हैं। पिछले साल सितंबर में मेक्सिको की संसद में भी कुछ कंकाल दिखाए गए थे। इस दौरान इनके एलियन होने का दावा किया गया था।

पेरू के एयरपोर्ट पर कार्डबोर्ड बॉक्स में मिले थे कंकाल

प्रेस कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने इन दोनों मामलों में कनेक्शन को लेकर फिलहाल कुछ नहीं कहा है। हालांकि, मेक्सिको की संसद में दिखाए गई ममीज के भी एलियन नहीं होने की बात कही गई थी। दरअसल, पिछले साल अक्टूबर में पेरू के एयरपोर्ट के कोरियर डिपार्टमेंट में एक कार्डबोर्ड बॉक्स के अंदर 2 कंकाल मिले थे।

कई मीडिया रिपोर्ट्स में इनके एलियन होने का दावा किया गया था। इनमें से एक कंकाल ने पारंपरिक परिधान पहन रखा था। वहीं सितंबर में मेक्सिको की संसद में भी कथित एलियन के शव दिखाए गए थे। मेक्सिकन जर्नलिस्ट और यूफोलॉजिस्ट जेम मोसान ने दावा किया था कि इन कंकालों का इंसान के इवोल्यूशन से कोई कनेक्शन नहीं है।

पहली बार मेक्सिको की संसद में दिखाई गई थी एलियन ममी

मेक्सिको की संसद में पहली बार एलियन की ममी पेश करते हुए मोसान ने कहा था- ये शव पेरू की एक खदान से मिले थे, जो करीब 1 हजार साल पुराने हैं। मोसान के मुताबिक ये दुनिया के इतिहास में अब तक की सबसे अहम खोजों में से एक है। इसके बाद इन शवों का लैब टेस्ट हुआ था। इसकी रिपोर्ट में कहा गया था कि कथित एलियन ममी को अलग-अलग हड्डियों से जोड़कर नहीं बनाया गया है। ये पूरा एक ही कंकाल है। टेस्ट में एलियन के कंकाल से छेड़छाड़ या जोड़-तोड़ के भी कोई सबूत नहीं मिले थे। साथ ही यह भी कहा गया था कि इन शवों का इंसानों से कोई कनेक्शन नहीं है।

वहीं पिछले साल जुलाई में अमेरिकी संसद में भी एलियन्स को लेकर चर्चा हुई थी। इस दौरान यूएस नेवी के पूर्व इंटेलिजेंस ऑफिसर रिटायर्ड मेजर डेविड ग्रश ने दावा किया था कि अमेरिका कई सालों से यूएफओ और एलियन्स से जुड़ी जानकारियां छिपा रहा है। उन्होंने ये भी कहा था कि अमेरिका इन यूएफओस की रिवर्स इंजीनियरिंग पर काम कर रहा है।

द गार्जियन के मुताबिक, मेजर ग्रश 2022 के आखिर तक अमेरिका की डिफेंस एजेंसी के लिए यूएपी (यूएफओ से जुड़ी संदिग्ध घटनाएं) पर एनालिसिस कर रहे थे। सुनवाई में उन्होंने बताया था कि सरकार को एलियन मिले थे और वो उनके स्पेसक्राफ्ट पर सीक्रेट रिसर्च कर रही है।

अमेरिका में खालिस्तान को लेकर 28 जनवरी को रेफरेंडम

भारत के खिलाफ षड्यंत्र रच रहे आतंकी, बाइडेन सरकार नहीं ले रही एक्शन

वॉशिंगटन, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अमेरिकी में खालिस्तान के मुद्दे को हवा देने का काम अकेला सिख फॉर जस्टिस (एसजेएफ) ही नहीं कर रहा है। अमेरिका में कई नए संगठन तेजी से सक्रिय हुए हैं। वर्ल्ड सिख पार्लियामेंट (डब्ल्यूएसपी) खालिस्तान समर्थक संगठन हैं जिसने न्यूयॉर्क में अपनी 5वीं आम सभा में अलग पंजाब की मांग को समर्थन की घोषणा की है।

सिख यूथ फॉर अमेरिका भी एक नया संगठन है जो खालिस्तान को समर्थन करता है। इसके 200 से ज्यादा मेंबर हैं।अमेरिका में सिख फॉर जस्टिस (एसजेएफ) का भारत विरोधी अभियान चरम पर है। एसजेएफ ने पंजाब को भारत से अलग देश बनाने के लिए 28 जनवरी को कैलिफोर्निया के सेन फ्रांसिस्को में खालिस्तान रेफरेंडम कराने का ऐलान किया है। भारत के खिलाफ षड्यंत्र रच रहे खालिस्तानियों को अमेरिका भी नहीं रोक रहा है। अमेरिका के द्वारा भारत पर खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश के आरोपों को लेकर पहले ही दोनों देशों के रिश्तों में तनाव है।

इसी बीच, कैलिफोर्निया में हो रहे कथित रेफरेंडम को लेकर दोनों देशों के रिश्ते और बिगड़ सकते हैं। दरअसल, भारत ने 2019 में अलगाववाद का समर्थन करने के लिए सिख फॉर जस्टिस संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया था। एसजेएफ के प्रवक्ता का कहना है कि 28 जनवरी को सैन फ्रांसिस्को में वोटिंग होनी है।

इससे पहले, लंदन, जिनेवा और स्विडजरलैंड में 2021, इटली में 2022 में, टोरंटो और ब्रेम्पटन में 2022 में व ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में 2023 में खालिस्तान के लिए रेफरेंडम आयोजित किया गया था।

कैलिफोर्निया में 2.50 लाख से ज्यादा सिख रहते हैं। यहां सेन जोंस गुरुद्वारा, गुरुद्वारा फ्रेमोंट, अल सोब्रेंट, रोसविले और युवा सिटी जैसे कई गुरुद्वारे हैं। गुरुद्वारा फ्रेमोंट सबसे बड़ा है। कई गुरुद्वारों की प्रबंधन समितियों पर खालिस्तानी समर्थकों का कब्जा है। गुरुद्वारा फ्रेमोंट साहिब पर खालिस्तान के समर्थक सिख फॉर जस्टिस की मदद का आरोप है। एसजेएफ न्यूयॉर्क, लोस एजिलिस, मियामी और वॉशिंगटन के कई गुरुद्वारों के प्रबंधन को भी गुरुद्वारा फ्रेमोंट की तरह हथियाने की कोशिश में लगा हुआ है।

अमेरिकी थिंक टैंक हडसन इंस्टीट्यूट ने अपनी रिपोर्ट 'पाकिस्तान डिस्टेबलाइज प्लेबुकः खालिस्तान सेपरेटिस्ट एक्टिविज्म विदिन अमेरिका' में कहा है कि अमेरिका में कई गुरुद्वारे अब चरमपंथ, उग्रवाद और हिंसा की जन्म स्थली बन गए हैं।

म्यांमार सेना और जातीय गुरिल्ला समूहों में संघर्षविराम पर सहमति

चीनी मध्यस्थता में हुआ समझौता

बीजिंग, 13 जनवरी (एजेंसियां)। म्यांमार की सेना और वहां के जातीय अल्पसंख्यक गुरिल्ला समूहों के गठबंधन के बीच देश के पूर्वोत्तर में जारी लड़ाई को रोकने के लिए तत्काल संघर्षविराम समझौते पर सहमति बन गई है। चीनी विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी, जबकि म्यांमार की सैन्य सरकार ने भी इसकी पुष्टि की है। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा, म्यांमार सीमा से 400 किमी दूर चीन की एक प्रांतीय राजधानी कुनमिंग में चीनी मध्यस्थता में यह समझौता हुआ। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि म्यांमार में संबंधित पक्ष ईमानदारी से समझौते को लागू करेंगे, एक-दूसरे के प्रति अधिकतम संयम बरतेंगे और बातचीत तथा परामर्श के माध्यम से मुद्दों को हल करेंगे। सत्तारूढ़ सैन्य परिषद के प्रवक्ता मेजर जनरल जॉ मिन तुन ने अस्थायी संघर्षविराम समझौते पर सहमति जताई।

इजराइल बोला- हमास के खिलाफ कार्रवाई जरूरी थी

आईसीजे में कहा- दुनिया के सामने झूठ पेश किया जा रहा, जर्मनी बातचीत के पक्ष में

तेल अवीव, 13 जनवरी (एजेंसियां)। इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस में शुक्रवार को इजराइल के खिलाफ नरसंहार मामले में दूसरे दिन सुनवाई हुई। यह केस साउथ अफ्रीका ने दायर किया है। इजराइल ने अपने बचाव में कहा- दुनिया के सामने एकतरफा तथ्य पेश किए जा रहे हैं, झूठ पेश किया जा रहा है।

दूसरी तरफ, जर्मनी ने इजराइल का बचाव किया है। जर्मनी ने कहा- अगर कोई आपके देश में घुसकर बार-बार हमला करेगा तो उसका जवाब देना जरूरी हो जाता है। हमास ने इजराइल में हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया था।

इजराइल अपनी हिफाजत करेगा

नीदरलैंड के द हेग में आईसीजे की सुनवाई के दौरान शुक्रवार को इजराइली पक्ष ने दलीलें पेश कीं। इजराइल के लीगल एडवाइजर ताल बेकर ने कहा- हम एक ऐसे दौर में रह रहे हैं, जहां शब्दों की अहमियत कम होती जा रही है। सोशल मीडिया पर झूठ फैलाया जा रहा है।

कुछ लोगों ने इस घटना का गलत फायदा उठा रहे हैं। साउथ अफ्रीका ने भी दुनिया के सामने सिर्फ झूठ पेश किया है। बेकर ने कहा- साउथ अफ्रीका ने जानबूझकर सच्चाई को पेश करने से इनकार किया है। दुनिया को कानून के जरिए गुमराह करने की कोशिश की जा रही है। 7 अक्टूबर को जो कुछ हमास ने इजराइल में घुसकर किया, क्या उसे साउथ अफ्रीका सही ठहराने की कोशिश कर रहा है। ऐसी कई ताकतें हैं जो इजराइल के खिलाफ साजिश रच रही हैं और इसके लिए कानून और मीडिया का सहारा लिया जा रहा है। साउथ अफ्रीका के इजराइल पर आरोपों के खिलाफ जर्मनी ने भी आवाज उठाई है। जर्मन सरकार ने साफ कर दिया है कि इजराइल पर लगाए गए आरोप पूरी तरह गलत हैं और इनके खिलाफ वो भी सबूत पेश करेगा।

जर्मन सरकार के स्पोक्सपर्सन स्टीफन हेबेसट्रेट ने कहा- इजराइल के खिलाफ 7 अक्टूबर को जो कुछ हुआ, उसकी बात क्यों नहीं की जा रही? इस बार जंग का आगाज किसने किया? क्या अगर आपके देश पर हमला होता है, महिलाओं से रेप होता है, बच्चों को किडनैप किया जाता है तो आप चुप बैठ जाएंगे? साउथ अफ्रीका को आरोप लगाने से पहले यह बातें सोच लेनी चाहिए थीं। स्टीफन ने आगे कहा- आज जो कुछ इजराइल की तरफ से किया जा रहा है वो वास्तव में अपनी हिफाजत के लिए है। हमने भी हमास की तरह का आतंक झेला है। होलोकास्ट भी सबने देखा है। सच्चाई ये है कि ये मामला बातचीत से भी हल हो सकता था, लेकिन हमास ने ऐसा होने नहीं दिया।

हूती विद्रोहियों पर हमलों का विरोध

बाइडेन की पार्टी बोली- संसद से मंजूरी क्यों नहीं ली, अब जंग नहीं चाहते, व्हाइट हाउस के बाहर प्रदर्शन

वॉशिंगटन, 13 जनवरी (एजेंसियां)। यमन के हूती विद्रोहियों पर एयरस्ट्राइक देकर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन देश और पार्टी दोनों में घिर गए हैं। गुरुवार रात के बाद शुक्रवार को भी युद्ध विरोधी लोगों ने व्हाइट हाउस के बाहर प्रदर्शन किया। इन लोगों का कहना था कि बाइडेन चुनावी साल में देश को नई जंग में झोंक रहे हैं। दूसरी तरफ, बाइडेन की डेमोक्रेट पार्टी के कुछ सांसदों ने भी हमले का विरोध किया है। इनका कहना है कि प्रेसिडेंट को हमले से पहले संसद की मंजूरी लेनी चाहिए थी। अमेरिका और ब्रिटेन ने गुरुवार को यमन के हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर एयरस्ट्राइक की थी। एक रिपोर्ट के मुताबिक- कुल 60 टारगेट हिट किए गए। इनमें 6 हूती विद्रोही मारे गए। हूती ने हमले का बदला लेने की धमकी दी है। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर और व्हाइट हाउस के सामने एंटी वॉर प्रोटेस्टर्स ने रैली की। इस दौरान प्रेसिडेंट बाइडेन के खिलाफ नारेबाजी हुई। इन लोगों ने कहा- यमन में अमेरिका ने हमला क्यों किया।

सीएम बोले- संकल्प पत्र के दस वादे एक माह में हुए पूरे

जनता लोकसभा चुनाव की 25 सीटों पर भी खिलाएगी कमल

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी ने लोक सभा चुनाव की तैयारियां प्रारंभ कर दी हैं। आज दिल्ली रोड स्थित एक रिसोर्ट में लोकसभा से संबंधित कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा की गई। इस चर्चा में प्रदेश की कोर कमेटी के पदाधिकारी, मंत्री, सांसद, विधायक एवं प्रमुख कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बैठक में कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्ता के लिए नहीं सेवा के लिए आई है। हम डबल इंजन की सरकार के ज़रिये प्रदेश की जनता को निश्चित रूप से मोदी जी की दी हुई गारंटी पूरा कर रहे हैं। हमने जहां आपणो अग्रणी राजस्थान के संकल्प पत्र में किए हुए वादे को एक महीने में ही लगभग 10 गारंटियों को पूरा करने का काम किया है। जिनमें 450 में सिलेंडर, पेपर लीक अपराधियों के लिए एसआईटी, गैंगस्टरों के उन्मूलन के लिये एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स, सीबीआई को जांच की अनुमति, श्रीअन्नपूर्णा रसोई, भ्रष्टाचार पर ज़ीरो टॉलरेंस आदि शामिल हैं। वास्तव में अब जनता को यह लगा है कि भाजपा सरकार की ये सरकार सेवक सरकार है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से हम विकसित भारत संकल्प यात्रा में भी ज़बरदस्त तरीक़े से आगे बढ़ रहे हैं। राजस्थान विकसित भारत संकल्प यात्रा ने क़रीबन एक करोड़ से भी अधिक लोगों से संपर्क कर उनकी समस्याओं को हल किया है। विभिन्न केंद्रीय योजनाओं से उन सभी को जोड़ा है।

भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश की जनता का आशीर्वाद विधानसभा में भी भाजपा को मिला और अब आमजन भाजपा को 25 लोकसभा सीटों में से 25 सीटें जीताकर माननीय मोदी जी 2024 को पुनः प्रधानमंत्री बनाकर देश की सेवा का मौक़ा देंगी।

पार्टी की बैठकों से नदारद वसुंधरा

नाराजगी है या फिर रिटायरमेंट के बारे में सोच रही हैं?

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। लोकसभा चुनावों की तैयारियों के लिए राजधानी जयपुर के एक बड़े होटल में भाजपा के पार्टी पदाधिकारियों और अन्य नेताओं की बैठक हुई। इस बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, प्रदेश पार्टी अध्यक्ष सीपी जोशी, राजस्थान प्रभारी अरुण सिंह, छत्तीसगढ़ प्रभारी ओम माथुर, केंद्रीय मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत, अर्जुनराम मेघवाल, कैलाश चौधरी, विधानसभा में सरकारी सचेतक जोगेश्वर गर्ग, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ समेत कई नेता मौजूद रहे।

इन सारे नेताओं के बीच राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे इस बैठक में शामिल नहीं हुईं। राजस्थान में भाजपा की जीत और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के शपथ ग्रहण के बाद यह तीसरी बार है, जब वसुंधरा राजे पार्टी की बैठक और मंत्रिपरिषद के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं हुईं। बैठक में वसुंधरा राजे की अनुपस्थिति से सवाल उठने लगा है कि क्या वसुंधरा पार्टी से नाराज हैं? या फिर प्रदेश भाजपा में कोई गुटबाजी चल रही है। वसुंधरा की गैरमौजूदगी को लेकर ये सवाल इसलिए भी उठ रहे हैं क्योंकि पूर्व मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री मोदी के जयपुर प्रवास के दौरान हुई पार्टी की बैठक से भी किनारा कर लिया था।

हाल ही में आईजी-डीजी कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के जयपुर पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने पार्टी कार्यालय में नवनिर्वाचित विधायकों और पार्टी पदाधिकारियों के साथ ढाई घंटे तक बैठक की थी, लेकिन इस बैठक में भी वसुंधरा राजे शामिल नहीं हुई थीं, जबकि पार्टी के जयपुर कार्यालय में प्रधानमंत्री की यह पहली बैठक थी। शहरी विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह ने बताया कि बैठक में सभी मंत्री, विधायक और पार्टी पदाधिकारी मौजूद थे लेकिन किन्हीं पारिवारिक कारणों से वसुंधरा राजे बैठक में मौजूद नहीं थीं।

चुनाव तैयारियों को लेकर हुई बैठक में वसुंधरा राजे के शामिल नहीं होने का कारण उनकी बहू की तबीयत खराब होना बताया जा रहा है। लेकिन तीन बड़े मौकों पर वसुंधरा की गैरमौजूदगी भाजपा में गुटबाजी और अंदरूनी कलह की ओर इशारा करती है। कहीं झालावाड़ में पार्टी से रिटायरमेंट को लेकर किया गया उनका मजाक सही साबित तो नहीं होने वाला? या फिर कहीं कुछ और ही बात है।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव बोले- प्रदेश में रोजाना बिछाई जा रही 15 किलोमीटर नई रेलवे लाइन

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भाजपा प्रदेश कार्यालय पहुंचकर पार्टी के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से मुलाकात की। इस दौरान मीडिया से बात करते हुए अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में विजन बनाकर अमृत भारत स्टेशन योजना 2023 में लांच की गई थी। इस योजना के तहत देशभर के 1300 से अधिक रेलवे स्टेशनों को वर्ल्ड क्लास बनाने का काम चल रहा है।

केंद्र सरकार ने राजस्थान के लिए 9500 करोड़ का रेलवे बजट पास किया था। इसके तहत प्रदेश के 83 रेलवे स्टेशनों को अमृत स्टेशन योजना के तहत वर्ल्ड क्लास बनाने का काम चल रहा है। करीब 25-30 रेलवे स्टेशनों का काम पूरा कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में एक साल में 400 किमी नई रेलवे लाइन बिछाने का काम चल रहा है, हर दिन 15 किमी लंबी रेलवे लाइन बिछाई जा रही है। राजस्थान में अमृत स्टेशन योजना के सभी प्रोजेक्ट तय समय में पूरे किये जाएंगे।

दौरे के दौरान रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जयपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण भी किया।

इस दौरान सीएम भजनलाल शर्मा ने सांगानेर रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना में शामिल करने का प्रस्ताव रखा था। वहीं, मुख्यमंत्री शर्मा ने मुख्य सचिव के निर्देशन में रेलवे की रिव्यू कमेटी बनाने का प्रस्ताव भी रखा। यह कमेटी प्रदेश में रेलवे प्रोजक्ट में आने वाली परेशानियों को दूर करेगी। निरीक्षण के दौरान रिंग रेल की कल्पना पर भी चर्चा की गई।

इस अवसर पर सांसद रामचरण बोहरा, भाजपा प्रदेश ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष चंपालाल गेदर, एससी मोर्चा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल, एसटी मोर्चा अध्यक्ष नारायण मीणा, मेयर सौम्या गुर्जर, महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. रक्षा भंडारी, महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पूजा कपिल मिश्रा, भाजपा प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, सोशल मीडिया संयोजक हीरेंद्र कौशिक, भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी महेश शर्मा, भाजपा मीडिया कार्यालय प्रभारी चंपालाल रामावत सहित अन्य पदाधिकारीगण मौजूद रहे।

तीन जिलों में शीतलहर का अलर्ट

तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक चढ़ा दिन में बढ़ने लगी सूरज की तपिश

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। राजस्थान में माइनस तापमान और गलनभरी सर्दी से लोगों को आज कुछ राहत मिली। माउंट आबू, फतेहपुर, सीकर, चूरू में आज न्यूनतम तापमान में 5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोतरी हुई है। सर्द हवा थमने और धूप निकलने से अजमेर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर समेत कई शहरों में दिन का तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर आ गया।

मौसम केन्द्र जयपुर ने अगले कुछ दिन राज्य में मौसम साफ रहने और तापमान में सामान्य रहने की संभावना जताई है। वहीं, 16 जनवरी से तीन जिलों में शीतलहर चलने की संभावना है।

जम्मू-कश्मीर, लद्दाख के एरिया में एक हल्के प्रभाव के वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के असर से आज उत्तरी राजस्थान में गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनूं, सीकर के एरिया में आसमान में धुंध रही। इस कारण नॉर्दन विंड (उत्तरी हवाएं) आनी थम गई। इससे जयपुर, बीकानेर, अजमेर, कोटा समेत अधिकांश शहरों का मिनिमम तापमान भी एक से दो डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गए।

जयपुर में आज सुबह 8 बजे से ही अच्छी धूप निकली और लोगों को सर्दी से राहत मिली। जयपुर में कल दिन का अधिकतम तापमान 24.3, जबकि आज न्यूनतम तापमान 8.5 डिग्री सेल्सियस रहा। कल भी जयपुर में पूरे दिन आसमान साफ रहा और देर शाम तक अच्छी धूप रही।

सीकर, पिलानी, उदयपुर, बीकानेर, अजमेर, चूरू में अब दिन और रात का तापमान सामान्य से ऊपर आ गया है। बीकानेर में आज तापमान सामान्य से 5 डिग्री सेल्सियस ऊपर दर्ज हुआ। यहां आज रात का न्यूनतम तापमान 11.7 डिग्री सेल्सियस, जबकि अधिकतम तापमान 25.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। सीकर में आज न्यूनतम तापमान कल के मुकाबले 5 डिग्री सेल्सियस बढ़कर 8.5 पर पहुंच गया, जिससे यहां के लोगों को गलनभरी सर्दी से राहत मिली।

मौसम केन्द्र से जारी फोरकास्ट के मुताबिक जम्मू-कश्मीर, लद्दाख के एरिया में 16 जनवरी से वेस्टर्न डिस्टर्बेंस असर खत्म हो जाएगा। इसके बाद वापस उत्तर भारत से सर्द हवाएं आनी शुरू होगी। गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के एरिया में एक-दो दिन कोल्ड-वेव चलने की भी संभावना है।

प्रदेश में 4500 करोड़ की सड़कों के काम शुरू होंगे

पीडब्ल्यूडी में छह तरह के प्रोजेक्ट पर रोक हटाने का प्रस्ताव तैयार

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। प्रदेश में नए टेंडर और वर्क ऑर्डर पर लगी रोक के बीच अब सड़क से जुड़े कामों में छूट देने की तैयारी है। केंद्र सरकार की सहायता से चलने वाले सड़क प्रोजेक्ट्स को जल्द शुरू किया जा सकता है। डिप्टी सीएम दीया कुमारी के आदेश के बाद पीडब्ल्यूडी के अफसरों ने छह तरह के सड़क प्रोजेक्ट्स का काम शुरू करने के लिए मुख्यमंत्री को प्रस्ताव भेजने की तैयारी कर ली है। प्रदेश में करीब 4500 करोड़ के सड़क प्रोजेक्ट्स के कामों को जारी रखने और उन पर काम शुरू करने का प्रस्ताव तैयार किया है। डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने उन सड़क प्रोजेक्ट्स को छांटने को कहा था, जिन पर काम शुरू हो सकता हो। विभागीय स्तर पर समीक्षा में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई), सेंट्रल रोड फंड, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सहित छह तरह की सड़कों के काम छांटे गए हैं। इनके काम शुरू करने के लिए सीएम से मंजूरी ली जाएगी।

बैठक में अवगत करवाया गया कि नेशनल हाईवे और सेंट्रल रोड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड से बनने वाली सड़कों का फंड केंद्र सरकार देती है। इनमें केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के अनुसार प्रक्रिया अपनाई जाती है। इन योजनाओं के तहत बनने वाली सड़कों के काम सीएम से मंजूरी के बाद जारी रखे जा सकते हैं। मौजूदा वित्त वर्ष में प्रदेश में करीब 1300 करोड़ की लागत से नेशनल हाईवे और 812 करोड़ की लागत से सेंट्रल रोड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड से सड़कों का काम होना है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में प्रदेश में 672 करोड़ के काम करवाए जाने हैं। यह पूरी तरह केंद्र की योजना है। इसका संचालन और मॉनिटरिंग भी नेशनल रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट एजेंसी करती है। बैठक में तय हुआ कि इस योजना के तहत सड़कों के काम मंजूरी के बाद जारी रखे जा सकते हैं।

राजस्थान स्टेट हाईवे अथॉरिटी में 1718 करोड़ की लागत से सड़कें बनाई जानी हैं। रिव्यू बैठक में तय हुआ कि राजस्थान स्टेट हाईवे अथॉरिटी पूरी तरह स्वायत्त एजेंसी है, इसलिए इसके काम जारी रखे जा सकते हैं। इसी तरह रेलवे और एचपीसीएल के फंड से बनने वाली सड़कों को भी मंजूरी के बाद जारी रखा जा सकता है।

कन्हैयालाल टेलर हत्याकांड

एनआईए कोर्ट ने आठ आरोपियों के खिलाफ चार्ज तय किए, 2 फरवरी को होगी सुनवाई

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। जून 2022 में उदयपुर में हुई कन्हैयालाल टेलर की नृशंस हत्या के मामले में एनआईए कोर्ट ने आठ आरोपियों के खिलाफ हत्या, धर्म के अपमान और आतंकी गतिविधियों में शामिल होने का चार्ज तय किया है। कन्हैयालाल टेलर की जून 2022 में हुई नृशंस हत्या के मामले में एनआईए कोर्ट ने 8 आरोपियों गौस मोहम्मद, मोहम्मद रियाज अत्तारी, आसिफ, मोहम्मद मोहसिन, वसीम अली, मोहसिन खान, मो. जावेद, मुस्लिम खान के खिलाफ हत्या, अन्य धर्म व जाति को अपमानित करने समेत आतंकी गतिविधियों में शामिल होने के चार्ज तय किए हैं। आरोपियों को 2 फरवरी को सुनवाई के लिए कोर्ट में पेश होने का निर्देश दिया गया है। कोर्ट ने आरोपी फरहाद मोहम्मद के खिलाफ एनआईए से अभियोजन स्वीकृति का आदेश पेश करने के लिए कहा है। साथ ही फरहाद, मुस्लिम खान व मोहम्मद जावेद को आरोप मुक्त करने की अर्जी को भी निरस्त कर दिया है।

परिजनों से खतरा बताते हुए युवती ने मांगी सुरक्षा

नाबालिग की 25 साल के युवक से की सगाई, बालिग होने पर की लव मैरिज

चूरू, 13 जनवरी (एजेंसियां)। बिना माता-पिता की 16 वर्षीय नाबालिग लड़की की परिवार के लोगों ने 25 वर्षीय युवक से सगाई कर दी। मगर लड़की को युवक पसंद नहीं होने के कारण उसने घर से भागकर अपने प्रेमी के संग लव मैरिज कर ली। इसके बाद एसपी ऑफिस पहुंचकर अपने परिवार के लोगों से खतरा होने की बात कही।

एसपी ऑफिस में सांखू फोर्ट निवासी 18 वर्षीय प्रियंका ने बताया कि उसने अपनी मनमर्जी से सांखू में ही जेसीबी चलाने वाले झुंझुनूं निवासी प्रमोद कुमार (23) के साथ लव मैरिज कर ली है। नौ जनवरी को दोनों घर से भाग गए। दिल्ली जाकर आर्य समाज में दोनों ने लव मैरिज कर ली है। अब अपनी मर्जी से प्रमोद के साथ रहना चाहती।

प्रियंका ने बताया कि 2 साल पहले जब वह 16 साल की थी। तब उसके परिवार के लोगों ने उसकी सगाई रतनगढ़ के 25 वर्षीय युवक से कर दी थी, जो उसको पसंद नहीं था। उसने बताया कि दो साल से एक दूसरे को जानते हैं और एक दूसरे को प्यार करते हैं। उस समय प्रमोद उनके गांव में जेसीबी चलाने का काम करता था। तब से उसके साथ जानकारी है। परिवार के लोगों ने जब मैं नाबालिग थी उसी समय 25 वर्षीय युवक से सगाई कर दी, जो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था।

राजस्थान ने तमिलनाडु को हराकर जीता नेशनल बॉस्केटबॉल टूर्नामेंट

बाड़मेर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। 67वीं नेशनल स्कूल गेम्स के तहत 14 वर्ष छात्रा वर्ग बास्केटबॉल प्रतियोगिता में राजस्थान को बड़ी उपलब्धि हासिल हुई। प्रतियोगिताएं बाड़मेर की माल गोदाम रोड स्थित गर्ल्स हाई स्कूल की ओर से की जा रही हैं। नेशनल बास्केटबॉल स्कूल गेम्स का फाइनल मुकाबला शनिवार को तमिलनाडु और राजस्थान के बीच खेल गया। जिसमें राजस्थान ने तमिलनाडु को 30-22 के अंतर से हरा दिया।

मैच देखने के लिए बड़ी संख्या में दर्शक कड़ाके की ठंड में पहुंचे। राजस्थान की जीत के साथ ही मैदान में जश्न शुरू हो गया। तमिलनाडु की टीम के खिलाड़ी हताश हो गए और उन बच्चियों की आंखें भी नम हो गई।अतिथियों ने विजेता और उप विजेता टीम के खिलाड़ियों को ट्राफी दी गई।

राजस्थान को 14 साल बाद मेजबानी मिली थी। इस प्रतियोगिता में देशभर की 29 टीमों ने भाग लिया। क्वार्टर फाइनल और सेमीफाइनल मुकाबले खेले गए। देर शाम हुए सेमीफाइनल मुकाबलों के बाद राजस्थान और तमिलनाडु की टीमों ने जीत दर्ज करते हुए फाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल मैच में राजस्थान ने गुजरात की टीम को 35-23 के अंतर से हराया। राजस्थान की टीम ने यशिता कंवर के नेतृत्व में दमदार प्रदर्शन करते हुए गुजरात के खिलाड़ियों को छका कर कई बास्केट किए। पूरे मैच में दर्शकों ने जबरदस्त हूटिंग कर खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया।

शनिवार को सुबह राजस्थान और तमिलनाडु के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया। कड़ाके की ठंड में मैच शुरू होने से पहले दर्शकों का हुजूम उमड़ गया।

22 जनवरी को मंदिरों में होगा लाइव टेलीकास्ट

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या में 22 जनवरी को भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को देशभर में मनाया जाएगा। राजस्थान में सरकार ने इस मौके पर प्रदेश के सभी सरकारी और निजी मंदिरों में विशेष आयोजन करने का फैसला किया है। देवस्थान विभाग ने सभी जिलों के कलेक्टर को आदेश जारी किए हैं कि वे अपने-अपने जिले के मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा का लाइव टेलीकास्ट स्क्रीन पर दिखाने की व्यवस्था करें। विभाग के उप शासन सचिव की ओर से जारी आदेशों में बताया कि 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रदेश के सभी मंदिरों में विशेष सजावट, रोशनी और विशेष पूजा-श्रृंगार करवाया जाएगा। इस मौके पर हर मंदिर में एक स्क्रीन लगाई जाएगी, जिस पर अयोध्या में होने वाले कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट दिखाया जाए। इसके अलावा हर मंदिर में सत्संग या सुंदरकांड अथवा हनुमान चालीसा का पाठ करवाया जाए और मंदिर में विशेष आरती के बाद प्रसाद का वितरण करवाया जाए। शहरों में पंचायत स्तर पर स्थानीय निकाय और पंचायती राज संस्थाओं को निजी मंदिरों में ये व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं, जबकि जिला मुख्यालय पर बने राजकीय मंदिरों में देवस्थान विभाग और बड़े निजी मंदिरों में उपखंड अधिकारी या कलेक्टर स्तर पर व्यवस्था करवाने के निर्देश दिए हैं।

पेट्रोल पंप के मालिक का सिर कटकर झाड़ियों में गिरा

ओवर स्पीड स्कॉर्पियो 5 बार पलटी; एक की मौत, दो गंभीर घायल

बाड़मेर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। ओवर स्पीड स्कॉर्पियो स्टेट हाईवे पर 5 बार पलटी खा गई। गाड़ी चला रहे पेट्रोल पंप के मालिक का सिर कटकर झाड़ियों में गिर गया। स्कॉर्पियो सवार दो अन्य लोग गंभीर घायल हो गए। हादसा बाड़मेर-जालोर स्टेट हाईवे पर बालोतरा में सिणधरी वांकल माता मंदिर के पास हुआ। सिणधरी थानाधिकारी सुरेंद्र कुमार ने बताया- हादसे में सिणधरी में पेट्रोल पंप के मालिक नौसर निवासी परबत सिंह (35) की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उनके साथ गाड़ी में सवार सिणधरी चारणान गांव निवासी कमल सिंह और इंद्रजीत सिंह घायल हो गए।

परबत सिंह, कमल और इंद्रजीत पेट्रोल पंप के काम से सिणधरी से बाड़मेर गए थे। लौटते वक्त रात 10 बजे के करीब सिणधरी इलाके में लूणी नदी पुलिया से पहले मंदिर के पास मोड़ पर स्कॉर्पियो बेकाबू हो गई। स्पीड तेज होने के कारण स्कॉर्पियो स्टेट हाईवे से उतरकर 5 बार पलटी।

मारपीट कर बनाया बंधक, विवादित मकान को किया ध्वस्त

शांतिभंग के आरोप में 3 गिरफ्तार, रिश्तेदारों में विवाद के बाद बेचा था

बाड़मेर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। बाड़मेर शहर के कल्याणपुरा मार्ग नंबर 4 मोहल्ले में स्थित विवादित भूखंड पर दो पक्षों के बीच में विवाद हो गया। विवादित भूखंड पर कब्जा करने पहुंचे एक पक्ष के खिलाफ कोतवाली थाने में मारपीट व अवैध कब्जा करने का मामला दर्ज हुआ है। पीड़ित का आरोप है कि बंधक बनाकर मकान को ध्वस्त कर दिया। घटना की जानकारी के बाद एएसपी, डीएसपी और कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लेकर जांच शुरू की है।

कोतवाल गंगाराम खावा के मुताबिक कल्याणपुरा मार्ग नंबर 4 निवासी कमला देवी पत्नी गोमाराम ने रिपोर्ट पेश कर बताया कि कल्याणपुरा मार्ग नंबर 4 पर पैतृक व पुश्तैनी मकान है।

टास्कफोर्स ने नौ क्विंटल पीडीएस चावल जब्त किया

आसिफाबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। गरीबों को मिलने वाला राशन का चावल की कालाबाजारी की जा रही है। टास्कफोर्स पुलिस ने पीडीएस चावल को पकड़ा जो दूसरों से कम दर पर खरीदा कर और महाराष्ट्र में ले जाकर अधिक दामों पर बेचते हैं। कुमरम भीम आसिफाबाद जिले के एसपी के. सुरेश कुमार के आदेशानुसार सरसिलक क्षेत्र के विरापानेनी कागज नगर ग्रामीण क्षेत्र के वंजिरी गांव के पास वाहनों की जांच कर रहे थे, सुरेश कुमार के निर्देश पर टास्कफोर्स के अधिकारियों को मिली जानकारी के अनुसार तांडूर मंडल से पीडीएस चावल अवैध रूप से महाराष्ट्र ले जाया जा रहा था। टास्क फोर्स के सीआई राणा प्रताप ने बताया कि किशोर की मिनी वैन संख्या टीएस07यूएफ4369 में नौ क्विंटल पीडीएस चावल कागज नगर ग्रामीण पुलिस स्टेशन ले जाया गया और उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया और नौ क्विंटल पीडीएस चावल पुलिस को सौंप दिया गया।कुमराम भीम आसिफाबाद जिले के विभिन्न मंडलों में आयोजित पोकर शिविरों, और देसी दारू, पीडीएस चावल, गांजा अवैध रावण और असामाजिक गतिविधियों में भाग लेने वालों का विवरण दे सकते हैं। सूचना देने वालों का विवरण गोपनीय रखा जाएगा।

टास्कफोर्स सीआई राणा प्रताप ने कहा कि इस तरह की गतिविधियों में भाग लेने वालों और पूछने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।इस कार्य में टास्क फोर्स सीआई राणा प्रताप, एसआई संदीप कुमार, टास्क फोर्स स्टाफ पीसी मधु, रमेश, संजीव ने भाग लिया।

अग्र महिला समिति ने भजन संधया कार्यक्रम मनाया

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। अग्र महिला समिति दोमलगुड़ा शाखा द्वारा बाला त्रिपुरा सुंदरी देवी मंदिर में पूजा अर्चना एवं भजनों का कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ मुख्य संयोजिका रश्मि अग्रवाल ने बताया की महाराजा अग्रसेन जी को माल्यार्पण कर प्रथम गणेश वंदना से आरंभ कर सुंदर सुंदर भजन कीर्तन किए गए। दीपों से व रंगोली से सजावट की गई। अल्पाहार की भी उचित व्यवस्था की गई।

संयोजिकाएं सरला अग्रवाल, सीमा अग्रवाल, नेहा अग्रवाल एवं सुधा दादू, शारदा गुप्ता, दीपा गर्ग, मधु गोयल, सरला जिंदल, सीमा पसारी, सुनीता अग्रवाल, सीमा गर्ग, मोनिका गोयल, ज्योति अग्रवाल ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया। इसी कड़ी में संयोजिका सरला अग्रवाल ने महिलाओं से अभी चल रहे राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के दिन घरों में 5 दीपक लगाने के लिए निवेदन किया।

कुख्यात वाहन चोर गिरफ्तार, चोरी की 23 मोटरसाइकिल बरामद

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राचकोंडा की उप्पल पुलिस द्वारा आदतन संपत्ति अपराधी की गिरफ्तारी की गई। आरोपी के पास से चोरी की 23 मोटर साइकिलें, प्रिंटर, लैपटॉप, नकली पंजीकरण कार्ड, खाली प्रिंट करने योग्य इंकजेट चिप कार्ड, रंगीन स्याही की 6 बोतलें बरामद की गईं। पुलिस आयुक्त राचकोंडा सुधीर बाबू ने बताया कि रचाकोंडा कमिश्नरी मिशन के हिस्से के रूप में, 13 जनवरी को सुबह को सशविज़िबल पुलिसिंग कॉन्सेप्ट के कार्यान्वयन के लिए कोटेश्वर राव, जासूस पुलिस उपनिरीक्षक, उप्पल पुलिस स्टेशन, राचकोंडा अपने अपराध कर्मचारियों के साथ वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों का पालन करते हुए एसवीएम ग्रांड, नागोल रोड़ पर औचक वाहन जाँच कर रहे थे। उसी समय, उन्होंने एक व्यक्ति को संदिग्ध परिस्थितियों में मोटरसाइकिल चलाते देखा, उन्होंने उसकी मोटरसाइकिल रोकी और उससे पूछताछ की, तो अज्ञात व्यक्ति ने अपनी पहचान रायडू चैतन्य साई कुमार, पुत्र वेंकट रमना, निवासी सीताफलमंडी, मायलारगड्डा, सिकंदराबाद बताई। प्रारंभिक हिचकिचाहट के बावजूद, रायडू चैतन्य साई कुमार की पहचान के संबंध में विवरणों को आसानी से सुलभ आरोपी पहचान पुलिस एप्लिकेशन ऐप में पूरी तरह से सत्यापित किया गया और यह पता चला कि, रायडू चैतन्य साई कुमार एक आदतन अपराधी है। इसके कारण, रायडू चैतन्य को उप्पल पुलिस स्टेशन लाया गया और पूछताछ की गई। कोटेश्वर राव, जासूस पुलिस उपनिरीक्षक, उप्पल पीएस, राचकोंडा ने दो सम्मानित मध्यस्थों की उपस्थिति में कबूल किया कि जब वह पॉलिटेक्निक पढ़ रहा था, तो वह बुरी आदतों का आदी हो गया था और उसने अपनी आगे की शिक्षा छोड़ दी थी। तदनुसार, अपनी बुरी आदतों को पूरा करने के लिए वह मेट्रो स्टेशनों के पास खड़े दोपहिया वाहनों की चोरी करके उनकी नंबर प्लेट बदलकर उन्हें दूसरों को बेचकर आसानी से पैसा कमा रहा था।

इसके अलावा, आरोपी ने कबूल किया कि उसने निम्नलिखित पुलिस स्टेशनों की सीमा में दोपहिया वाहनों की चोरी की है। उसने उप्पल % मामले, गोपालपुरम 1 मामला, एसआर नगर 1 मामला, बेगमपेट 2 मामले, खम्मम II टाउन 2 मामले, कोत्तागुडेम III टाउन1 मामला, मियापुर- 1 मामला, एल.बी. नगर 4 मामले ,कृष्णालंका विजयवाड़ा1 मामला, अन्य पुलिस स्टेशन 3 मामलों को अंजाम दिया। आरोपी को चौटुप्पल, उप्पल, माधापुर पुलिस स्टेशनों और अन्य पुलिस स्टेशनों के परिसर के भीतर समान प्रकार के मामलों में शामिल होने के संबंध में कई बार न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। इसके बावजूद भी, जेल से छूटने के बाद आरोपी ने अपना रवैया नहीं बदला और आसानी से पैसा कमाने के लिए दोपहिया वाहनों की चोरी करना जारी रखा।

हिंदी प्रचार सभा में मना विश्व हिंदी दिवस

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सभा के प्रधानमंत्री एस. गैबुवली एवं चुनाव संयोजक श्रुतिकांत भारती, आंध्र प्रदेश हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद के संयुक्त मंत्री डी. हाजीवली ने राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की मूर्ति पर पुष्पहार डालकर कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सभा के प्रधानमंत्री एस. गैबुवली ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। इस अवसर पर हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के कार्यालय मंत्री के. वेंकटेश्वर, रजिस्ट्रार नामदेव वाघमोडे, सी. शिवलिंगम, माया पाण्डेय, भानुदास पुजारे, प्रतिभा कुलकर्णी, सुनिता सबनिस, जी.आर. नरसिंग राव, के. श्रीकांत, अरुणा आदि उपस्थित थे।

कवि चंदर की पुस्तक का लोकार्पण और कवि सम्मेलन संपन्न

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। गीत चाँदनी और जीनियस एजुकेशनल अकादमी हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कवि चंदर की पुस्तक चंचल चितचोर का लोकार्पण और कवि सम्मेलन व हिंदी निबंध लेखन एवं कविता पठन प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। 90 से अधिक छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र और कवि चंदर की पुस्तक चंचल चितचोर की प्रतियाँ वितरित की गयीं। आर्य कन्या विद्यालय हाई स्कूल, कंदास्वामी लेन में आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक उच्च विद्यालयों और जूनियर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने हिंदी विषय पर आधारित प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिनमें सेंट जार्जेस गर्ल्स हाईस्कूल और जूनियर कॉलेज, आर्य कन्या पाठशाला हाईस्कूल, सेंटेन्स हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज, सक्षम हाई स्कूल, शमशीर गंज, मेगा हाई स्कूल, वट्टेपल्ली, राजस्थान हिंदी विद्यालय, अग्रवाल हिंदी-अंग्रेजी हाई स्कूल, हैदराबाद आदि प्रमुख हैं। कवि चंदर के पद्य-गद्य संग्रह चंचल चितचोर का लोकार्पण गीत चाँदनी की कोषाध्यक्षा व कवयित्री रत्नकला मिश्र ने किया। उन्होंने लोकार्पण के पश्चात् कवि चंदर की कविताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि ये कविताएँ समाज में व्याप्त बुराई को दूर करने में सक्षम हैं। कवि का प्रयास प्रशंसनीय हैं उन्होंने कवि को बधाई और शुभकामनाएँ दीं। लोकार्पित पुस्तक का परिचय ठाकुर दिनेश सिंह ने दिया। कार्यक्रम बर्तार विशिष्ट अतिथि उस्मानिया विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ संगीता व्यास ने भाग लिया। पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के अधिकारी (राजभाषा) रमेश प्रसाद मिश्र बतौर मुख्य अतिथि मंच पर विराजमान थे। विशेष अतिथि भक्तराम आर्य, श्रुतिकांत भारती और समाज सेवी प्रदीप जाजू ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज पूरी दुनिया में हिंदी की प्रगति हो रही है। देश में हिंदी गाँव-गाँव तक पहुँची है। आज दुनिया में शेख भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं। प्रेम से ही हिंदी का प्रचार-प्रसार संभव है। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता गीतकार चंपालाल बैद ने की और संचालन का भार गीत चाँदनी के कार्यदर्शी व कवि गोविंद अक्षय सँभाला।

संक्राति के उपलक्ष्य में मल्लाकुंडा में गरीब बच्चों में पंतग वितरित करते हुए जामबाग के पार्षद राकेश जायसवाल । साथम में है भाजपा नेता श्रीनिवास यादव, अमर सिंह, रघु कांबले, रामकृष्ण व अन्य।

हिमायत नगर स्थित कार्यालय में अग्रणी महिला मंच द्वारा मकर संक्रांति एवं लोहड़ी उत्सव मनाया गया। भग लेती हुईं मंच की अध्यक्ष सुमन भुवानिया, बबिता गर्ग, रितु गर्ग, सुनयना नरसरिया, स्मिता शाह, श्रद्धा व अन्य।

गवर्नमेंट हाईस्कूल में नोट बुक्स व आवश्यक सामग्री वितरित

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। गवर्नमेंट हाईस्कूल सुल्तान बाजार के प्रथम से दसवीं कक्षा तक के 120 विद्यार्थियों में रामगोपाल गुप्ता, गोविन्द अग्रवाल, अनिल संघी के नेतृत्व में नोट बुक्स, पेंस वितरित किए गए। साथ ही मिठाई, नमकीन की व्यवस्था भी की गई। अवसर पर शारदा गुप्ता, मंजेश्वरी गुप्ता ने छात्राओं को लगन एवं मेहनत से पढ़कर विद्यालय का, देश का नाम ऊंचा करने के साथ ही जिंदगी में अच्छे संस्कार की जरूरत की बात कही। अभी चल रहे राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के दिन घरों में 5 दीपक लगाने के लिए निवेदन किया। इस सेवा कार्य में सहयोग आरती अग्रवाल, गणेश अग्रवाल,शारदा गुप्ता, अर्चना संघी, सरला अग्रवाल, रश्मि अग्रवाल व अन्यों का भी रहा। विद्यालय की प्राचार्या ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में छात्रों के लिए अन्य कार्यक्रम आयोजित करने के लिए संस्था के सहयोग की आवश्यकता होगी।

दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा की मासिक बैठक आयोजित

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा की मासिक बैठक सभा के कार्यालय निर्दोष भवन, खैरताबाद में सम्पन्न हुई। बैठक में गत माह में लिए गए निर्णयों की समीक्षा एवं पिछली बैठक से आजतक के आय-व्यय की समीक्षा एवं अनुमोदन किया गया। गत माह में सम्पन्न हुए दीपावली स्नेह मिलन एवं छात्रवृत्ति वितरण की विस्तार से विवेचना की गई एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया। बैठक में आगामी 14 फरवरी बसंत पंचमी को निर्धारित सामूहिक उपनयन कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया एवं कार्यों का आबन्टन किया गया। इस दौरान बटुकों के अभिभावकों को सूचित किया गया कि जोभी महानुभाव अपने बालकों का यज्ञापवीत करवाना चाहते हों वे निर्दोष भवन खैरताबाद में स्थित सभा के कार्यालय पर पधारकर निर्धारित राशि का भुगतान कर जनेऊ का पंजीकरण करवाकर टोकन प्राप्त कर सकते हैं। बैठक की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार तिवारी ने की। बैठक में विशेष आमंत्रित प्रेमसुन्दर शुक्ल, महा मंत्री विजय पाल पाण्डे, युवामामलों के मंत्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, व्यवस्था मंत्री दुर्गाप्रसाद मिश्रा, जनसम्पर्क मंत्री विनोद प्रसाद तिवारी, सांस्कृतिक मंत्री रत्नकला मिश्रा, महिला विभाग मंत्री शोभा दुबे, महेश अग्निहोत्री, संगठन मंत्री बाला प्रसाद तिवारी ने भाग लिया। महा मंत्री के धन्यवाद ज्ञापन से सभा सम्पन्न हुई।

जाट प्रीमियर लीग-2 क्रिकेट प्रतियोगिता आज, हुई बैठक

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। पिरजाजीगुड़ा स्थित बाबुराव ग्रीन पार्क क्रिकेट ग्राउंड में समस्त जाट समाज हैदराबाद (तेलंगाना) के तत्वावधान में जाट प्रीमियर लीग-2 क्रिकेट प्रतियोगिता 2024 रविवार 14 जनवरी प्रातः वेला में तेजाजी महाराज की तस्वीर पर माल्यापर्णकर कई मारवाड़ी समाज के वरिष्ठ अतिथियों के करकमलों द्वारा शुभारम्भ किया जाएगा। धर्माराम ढाका ने बताया कि जाट समाज की 8 टीम महादेव क्लब 11, शिवशक्ति 11, नीलकंठ महादेव, वीर तेजा क्लब नागौर, तेजल क्लब, बजरंग बली बालाजी नगर, लीलण क्लब व भेरु बाबा एनजीओ कॉलनी की टीमें प्रतियोगिता में प्रमुखरुप से भाग लेंगी। क्रिकेट प्रतियोगिता दो ग्राउंड में आयोजितकर फाईनल मुकाबले का आयोजन शाम को किया जाएगा। क्रिकेट प्रतियोगिता में आयोजकों द्वारा निर्धारित नियमों व शर्तों का टीम के खिलाड़ियों को पालन करना होगा। प्रतियोगिता की विजेता, उपविजेता टीमों को नगद पुरस्कार व ट्रॉफी, बेस्ट बॉलर, बेस्टमैन, फील्डर, मैन ऑफ दी मैच खिलाड़ी को, व कार्यक्रम में पधारे अतिथियों को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आयोजनकर्ता धर्माराम ढाका, राजू जाट, अमरारामजी दुकतावा, दिनेशजी भडीयासर, लक्ष्मणजी बोता, दिनेशजी डांगी, वीरमसिंहजी लटियाल, दोलाराम कड़वा, राजुरामजी जाखड़, रतनजी धानिया, नरपतजी मुंदलिया व सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहेगा।

पतंग उड़ाते समय करंट लगने से बच्चे की मौत

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। अत्तापुर में शुक्रवार को पतंग उड़ाते समय करंट लगने से 11 साल के एक लड़के की मौत हो गई। अट्टापुर इंस्पेक्टर पी यादगिरी ने बताया कि बच्चा तनिष्क अपने दोस्त मोहित उबले के साथ पतंग उड़ा रहा था, तभी वह छत पर हाईटेंशन बिजली के तारों के संपर्क में आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने अपार्टमेंट के मालिकों के खिलाफ लापरवाही का मामला दर्ज किया। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए शवगृह में रखवा दिया गया है।

जयपुर यात्रा प्रवास के दौरान भाजपा नवनियुक्त मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, डॉ. प्रेमचन्द बैरवा, शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, मंत्री झाबरसिंह खर्रा का सम्मानकर शुभकामनाएँ देते हुए पूर्व अध्यक्ष राजस्थानी राजपूत संघ हैदराबाद-सिकंदराबाद एवं भाजपा जिला उपाध्यक्ष जालौर रामसिंह चौहान। अवसर पर पूर्व सांसद देवजी भाई पटेल, पूर्व विधायक नारायण सिंह देवल व अन्य।

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग...

'श्री सोनल माता ...

चारण समाज में एक से एक विद्वानों हुए है। पूज्य ठारण बापू, ईसर दास जी, पिंगलशी बापू, काग बापू, मेरूभा बापू, शंकरदान बापू, शभुदान जी, भजनीक नारणस्वामी, हेमुभाई गढवी, पद्मश्री कवि दाद और पद्मश्री भीखुदान गढवी ऐसे कितने ही व्यक्तित्व चारण समाज के विचारों को समृद्ध करते रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, आज जब भारत विकसित और आत्मनिर्भर होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है, तो आई श्री सोनल मां की प्रेरणा, हमें नई ऊर्जा देती है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति में चारण समाज की भी बड़ी भूमिका है। सोनल मां के दिए गए 51 आदेश, चारण समाज के लिए दिशा दर्शक और पथ दर्शक हैं। चारण समाज को इसे याद रखना चाहिए और समाज में जागृति लाने का काम निरंतर जारी रखना चाहिए।

खड़गे को इंडिया ...

तृणमूल प्रमुख और पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, शिवसेना (यूबीटी) के उद्धव ठाकरे और समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव मीटिंग में शामिल नहीं हुए। सीट शेयरिंग के मुद्दे पर ममता ने पहले से ही कांग्रेस से दूरी बना रखी है। वह कांग्रेस को बंगाल में 2 सीटें देने पर अड़ी हैं।

इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने आज ऑनलाइन मुलाकात की और गठबंधन पर सार्थक चर्चा की। हर कोई इस बात से खुश है कि सीट बंटवारे पर बातचीत सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ रही है। हमने सभी दलों को अपनी सुविधानुसार भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने का न्यौता दिया है।

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल शनिवार शाम कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मिलने उनके घर पहुंचे। दोनों की मुलाकात के दौरान राहुल गांधी भी मौजूद रहे। माना जा रहा है कि आप और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत हो सकती है।

उधर बैठक में शामिल नहीं होने पर तृणमूल सूत्रों ने कहा कि उन्हें बैठक की जानकारी काफी देर से मिली और ममता के कार्यक्रम पहले से तय थे। इसलिए वह बैठक में शामिल नहीं हो रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ये बैठक कुछ दिन पहले होनी थी, लेकिन किसी वजह से ऐन मौके पर रद्द हो गई थी।

ये पहला मौका नहीं है, जब ममता बनर्जी ने बैठक में आने से इनकार किया है। दिसंबर 2023 में भी ममता गठबंधन की बैठक में शामिल नहीं हुई थीं। तब उन्होंने कहा था कि कांग्रेस ने बैठक की जानकारी दो दिन पहले दी। ऐसे में मैं पहले से तय अपने कार्यक्रम रद्द नहीं कर सकतीं।

स्थिति को देखकर लग रहा है कि बीजेपी से टक्कर लेने के लिए बने इंडिया के 28 दलों के बीच सीट शेयरिंग बड़ी चुनौती साबित हो सकती है। गठबंधन में शामिल कई पार्टियों के नेता ऐसे बयान दे चुके हैं, जिससे साफ है कि वे पार्टी के प्रभाव वाले राज्यों में सीटों के मुद्दे पर समझौता नहीं करेंगे।

इंडिया गठबंधन की वर्चुअल मीटिंग को लेकर बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा, जब मैंने आज इंडिया गठबंधन की बैठक के बारे में सुना, तो मैंने पूछा कि बैठक कहां हो रही है और पता चला कि यह एक वर्चुअल बैठक है। वर्चुअल गठबंधन सिर्फ वर्चुअल मीटिंग ही करेगा। इससे ज्यादा वे कुछ नहीं कर सकते। पीएम मोदी का एजेंडा विकसित भारत, युवा सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण, गरीबी कम करना है, लेकिन उनका (विपक्ष) एजेंडा क्या है? यह 'मोदी हटाओ' है। इंडिया गठबंधन के केवल दो एजेंडे हैं, परिवार बचाओ और संपत्ति बचाओ।

ममता बनर्जी ने 28 दिसंबर को राज्य में अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर की। उत्तर 24 परगना में एक रैली के दौरान ममता ने कहा कि हमें बीजेपी को सबक सिखाना है, किसी अन्य पार्टी को नहीं। बंगाल में टीएमसी की सीधी टक्कर बीजेपी से है। सीट शेयरिंग के मुद्दे पर सभी पार्टियों से खुले मन से बात की जाएगी।

बिहार में लोकसभा की 40 सीटें, कैसे होगा सीट बंटवारा :

दिल्ली शराब घोटाले ...

अरविंद केजरीवाल भी विपक्षी गठबंधन के नेता हैं। जांच एजेंसी अपना काम करने के बजाय विपक्षी नेताओं पर दबाव डाल रही है। वहीं भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा, आज भी केजरीवाल ईडी के सामने पेश नहीं होने से यह समझ आता है कि उनके पास कुछ छिपाने के लिए है। वह अपराधियों की तरह छिपते फिर रहे हैं।

कानून के जानकारों के अनुसार, सीएम केजरीवाल के बार-बार पेश नहीं होने पर ईडी उनके खिलाफ जमानती वारंट जारी कर सकती है। उसके बाद भी पेश नहीं हुए तो धारा 45 के तहत गैर जमानती वारंट जारी कर सकती है। पीएमएलए के जानकार बताते हैं कि पेश नहीं हो पाने की ठोस वजह बताई जाती है तो ईडी समय दे सकती है। फिर दोबारा नोटिस जारी करती है। पीएमएलए एक्ट में नोटिस की बार-बार अवहेलना पर गिरफ्तारी हो सकती है। अगर सीएम केजरीवाल आगे

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

सात्विक-चिराग ने इतिहास रचा

मलेशिया ओपन के फाइनल में पहुंचने वाले पहले भारतीय; वर्ल्ड चैंपियन पेयर को सीधे गेम में हराया

क्वालालंपुर, , 13 जनवरी (एजेंसियां)। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी शनिवार को कुआलालंपुर में मलेशिया ओपन 2024 बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंच गई है। टूर्नामेंट इतिहास में यह पहली बार है जब कोई भारतीय किसी भी कैटेगरी में खिताबी मुकाबले में पहुंचा है।

बैडमिंटन रैंकिंग में दूसरे नंबर पर मौजूद भारतीय जोड़ी ने मेंस डबल्स इवेंट के सेमीफाइनल में वर्ल्ड चैंपियन कोरिया के कांग मिन ह्युक और सियो सेउंग जे की जोड़ी को सीधे गेम में हराकर खिताबी मुकाबले में पहुंची।

भारतीय जोड़ी ने 21-18, 22-20 से मैच अपने नाम किया। 21 मिनट तक चले इस गेम में कड़ा मुकाबला देखने को मिला।

तीसरी बार भारतीय जोड़ी जीती

इंटरनेशनल सर्किट पर भारतीय और कोरियन जोड़ी 5वीं बार आमने-सामने हुई थीं। जिसमें तीसरी बार भारतीय जोड़ी जीती। दो मुकाबलों में कोरियन जोड़ी को जीत मिली है। मलेशिया ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट 1937 से खेला जा रहा है। मलेशिया ओपन 2024 के रिजल्ट पेरिस ओलिंपिक 2024 के लिए शटलरों को क्वालिफाइंग रैंकिंग पॉइंट्स देगा। बैडमिंटन के लिए क्वालिफिकेशन विंडो पिछले साल 1 मई को शुरू हुई थी। मलेशिया ओपन में अब तक किसी भी भारतीय ने खिताब नहीं जीता है।

दुनिया में बैडमिंटन चलाने वाली संस्थान BWF 3 ग्रेड के टूर्नामेंट कराती है। इनमें ग्रेड-1 में वर्ल्ड चैंपियनशिप, ओलिंपिक गेम्स और ऑल इंग्लैंड ओपन जैसे टूर्नामेंट शामिल हैं, वहीं ग्रेड-2 में वर्ल्ड टूर फाइनल्स, सुपर सीरीज शामिल हैं। सुपर सीरीज भी 5 लेवल की होती है, इसमें लेवल-1 वर्ल्ड टूर फाइनल्स, लेवल-2 में सुपर-1000, लेवल-3 में सुपर-750, लेवल-4 में सुपर-500 और लेवल-5 में सुपर-300 इवेंट्स शामिल हैं। इसके बाद बारी आती है ग्रेड-3 टूर्नामेंट की। इनमें इंटरनेशनल चैलेंज, इंटरनेशनल सीरीज और फ्यूचर टूर जैसे इवेंट शामिल होते हैं।

बैडमिंटन रैंकिंग टूर्नामेंट की ग्रेड से डिसाइड होती है। BWF वर्ल्ड रैंकिंग टूर्नामेंट में सुपर 1000, 750, 500, 300 और सुपर 100 मुकाबले होते है। रैंकिंग के हिसाब से विनर को पॉइंट मिलते हैं। जैसे सुपर 1000 मुकाबले के विनर को 12 हजार पॉइंट्स मिलते है। वहीं, सुपर 100 टूर्नामेंट जीतने वाले को 5 हजार 500 पॉइंट्स मिलते है।

सबसे ज्यादा 13 हजार पॉइंट्स वर्ल्ड चैंपियनशिप और ओलिंपिक जीतने पर मिलते है। टोटल पॉइंट्स आधार पर वर्ल्ड रैंकिंग तय होती है। विनर के अलावा फाइनलिस्ट, सेमीफाइनलिस्ट से लेकर टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाले शटलर्स को भी ग्रेड और पायदान के हिसाब से पॉइंट्स दिए जाते है।

एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप

अखिल को स्वर्ण, ऐश्वर्य को रजत

50 मीटर थ्री पोजीशन टीम में भी भारत को सोना

जकार्ता, 13 जनवरी (एजेंसियां)। एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप में भारतीय शूटरों का स्वर्णिम प्रदर्शन जारी है। बागपत के अखिल श्योराण ने 50 मीटर थ्री पोजीशन में अपने ही साथी एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर को पराजित कर स्वर्ण जीता। ऐश्वर्य को रजत मिला। इन दोनों ने स्वप्निल कुसाले के साथ मिलकर देश को टीम का स्वर्ण भी दिलाया। तीनों ने मिलकर 1758 का स्कोर किया। भारत इस चैंपियनशिप में अब तक 10 स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य पदक जीत चुका है।

चीन से 14 अंक आगे रहकर भारत ने जीता स्वर्ण

इस इवेंट में अखिल पहले ही देश को पेरिस ओलंपिक का कोटा दिला चुके हैं। उन्होंने फाइनल में 460.2 का स्कोर किया, जबकि ऐश्वर्य ने 459 का स्कोर किया। थाईलैंड के थोंगफाफुम वांगसुकदी को कांस्य पदक मिला। टीम इवेंट में भारतीय टीम रजत जीतने वाले चीन से 14 अंक आगे रही। क्वालिफाइंग राउंड में ऐश्वर्य 588 का स्कोर कर तीसरे और अखिल 586 के स्कोर के साथ छठे स्थान पर रहे। टीम में नहीं शामिल भारत के नीरज कुमार और चैन सिंह ने भी 588 का स्कोर कर रैंकिंग अंक जुटाए। कुसाले भी 584 का स्कोर फाइनल में पहुंचे।

स्टैंडिंग पोजीशन में अखिल का शानदार प्रदर्शन

45 शॉट के फाइनल में अखिल शुरू से पदक की होड़ में रहे। उन्होंने नीलिंग में 153, प्रोन में 154 और स्टैंडिंग के 10 शॉट में 100.9 का स्कोर किया। इस दौरान वह दूसरे स्थान पर थे, लेकिन अंतिम पांच शॉट में बड़े स्कोर कर वह आगे निकल गए। 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल में विजयवीर सिद्धू और आदर्श सिंह के पास पेरिस ओलंपिक का कोटा जीतने का अवसर है। दो में से एक कोटा ये दोनों शूटर हासिल कर सकते हैं। क्वालिफिकेशन के पहले दिन दोनों शूटर 288 का स्कोर कर छठे और सातवें स्थान पर हैं। शीर्ष छह शूटरों को फाइनल में प्रवेश मिलेगा, जबकि जापान और कोरिया के शूटर कोटा के लिए अयोग्य हैं। दोनों पहले ही कोटा हासिल कर चुके हैं।

मेजबान जयपुर पिंक पैंथर्स की विजयी शुरुआत

तेलुगू टाइटंस को तीन अंकों से मिली शिकस्त

जयपुर, 13 जनवरी (एजेंसियां)। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 10वें सीजन के 67वें मैच में तेलुगू टाइटंस को मेजबान जयपुर पिंक पैंथर्स के खिलाफ तीन अंकों से हार का सामना करना पड़ा।

पहले हाफ में 19 प्वॉइंट से पिछड़ने के बाद तेलुगू टाइटंस ने दूसरे हाफ में जबरदस्त वापसी की। इसके बावजूद हाई-फ्लायर पवन सहरावत की टीम को हार का सामना करना पड़ा। यहां सवाई मानसिंह (एसएमएस) इंडोर स्टेडियम में खेले गए प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 10वें सीजन के 67वें मैच में तेलुगू टाइटंस को मेजबान जयपुर पिंक पैंथर्स के खिलाफ तीन अंकों से हार का सामना करना पड़ा। मौजूदा चैंपियन पिंक पैंथर्स ने अपने घर में विजयी शुरुआत करते हुए तेलुगू टाइटंस को 38-35 से हरा दिया।

हाई-फ्लायर पवन सेहरावत और अर्जुन देशवाल के इस भिड़ंत में अर्जुन ने 14, जबकि पवन ने 12 अंक जुटाए। उनके अलावा जयपुर पिंक पैंथर्स ने इस सीजन में अपना अजेय क्रम जारी रखते हुए 11 मैचों में सातवीं जीत दर्ज कर ली है। टीम अब 43 अंकों के बाद दूसरे पायदान पर पहुंच गई है। तेलुगू टाइटंस को 12 मैचों में 11वीं हार झेलनी पड़ी है।

मौजूदा चैंपियन जयपुर पिंक पैंथर्स ने अपने घर में धमाकेदार शुरुआत की पहले हाफ के खेल में ही एक बड़ी बढ़त हासिल कर ली। मेजबान टीम ने अपने स्टार खिलाड़ी अर्जुन देशवाल के दमदार प्रदर्शन की बदौलत शुरुआती मिनटों में खुद को मुकाबले में आगे बनाए रखा। लेकिन एक समय दोनों टीमें 4-4 की बराबरी पर थी। हालांकि इसके बाद जयपुर पिंक पैंथर्स ने खुद को मुकाबले में आगे कर लिया। 10वें मिनट तक जयपुर की टीम पांच प्वॉइंट से आगे हो गई और स्कोर को 10-5 का कर दिया।

15वें मिनट तक टीम के पास 10 अंकों की लीड थी और उसका स्कोर 18-8 का था। अर्जुन देशवाल ने अगले ही मिनट में अपना सातवां सुपर-10 लगा दिया। अपने अभेद्य डिफेंस के दम पर जयपुर पिंक पैंथर्स ने 17वें मिनट में ही तेलुगू टाइटंस को एक बार फिर ऑल आउट कर दिया स्कोर को 25-8 तक पहुंचा दिया। मौजूदा चैंपियन ने पहले हाफ के अंतिम मिनटों में भी लगातार अंक लेकर हाफ टाइम तक स्कोर को 27-8 तक पहुंचा दिया और 19 प्वॉइंट की लीड ले ली।

इसके बाद दूसरे हाफ के 25वें मिनट में तेलुगू टाइटंस ने अर्जुन देशवाल को सुपर टैकल करके अपने खाते में दो अंक जोड़ लिए। हालांकि अगले ही मिनट में रेजामीरबघेरी ने अपना हाई-5 पूरा करके तेलुगू को मुकाबले में और पीछे धकेल दिया। लेकिन 29वें मिनट में तेलुगू टाइटंस ने जयपुर पिंक पैंथर्स को ऑल आउट करके लीड को 12 अंकों तक लाकर सीमित कर दिया। लेकिन अभी भी स्कोर 34-21 से जयपुर पिंक पैंथर्स के पक्ष में था। तेलुगू टाइटंस ने इसके बाद वापसी करनी शुरू कर दी और 32वें मिनट में संदीप धुल ने अपना हाई-5 लगा दिया। 35वें मिनट तक जयपुर की बढ़त केवल आठ अंकों की रह गई थी और स्कोर 35-27 का था। इसी बीच, हाई-फ्लायर पवन सहरावत के दम पर तेलुगू टाइटंस ने जयपुर को दूसरी बार ऑल आउट कर दिया। जयपुर के पास अब सिर्फ पांच प्वॉइंट की लीड रह गई थी।

अंतिम दो मिनटों में पवन ने तेलुगू टाइटंस के लिए लगातार अंक लेते हुए मुकाबले को और ज्यादा रोमांचक बना दिया। लेकिन अर्जुन ने पवन को बाहर करके जयपुर को पांच प्वॉइंट की लीड दिला दी। मौजूदा चैंपियन ने इसके बाद अपनी लीड को कायम रखते हुए तेलुगू की शानदार वापसी के बावजूद 38-35 से रोमांचक जीत दर्ज कर ली।

पुणेरी पलटन ने अपना विजय अभियान जारी रखते हुए यहां जयपुर के सवाई मानसिंह (एसएमएस) इंडोर स्टेडियम में खेले गए प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 10वें सीजन के 68वें मैच में गुजरात जायंट्स को एकतरफा अंदाज में 37-17 से हरा दिया। इस शानदार जीत के बाद पुणेरी ने इस सीजन में अपनी लगातार आठवीं जीत दर्ज कर ली है।

पुणेरी पलटन के लिए इस मुकाबले में स्टार्टिंग 7 में शामिल सभी खिलाड़ियों ने कम से कम दो अंक लिए। टीम के कप्तान असलम इनामदार ने 10 अंक बटोरे। वहीं, गौरव खत्री ने अपना हाई-5 पूरा कर लिया। गुजरात की ओर से सोमबीर ने हाई-5 पूरा करते हुए 6 प्वॉइंट हासिल किए। 11 मैचों में 10वीं जीत के बाद पुणेरी पलटन के अब 51 अंक हो गए हैं और वह अंकतालिका में मजबूती के साथ नंबर वन स्थान पर कायम है। वहीं, गुजरात जायंट्स को 12 मैचों में पांचवीं हार का सामना करना पड़ा है और टीम 39 अंक लेकर चौथे नंबर पर है।

पुणेरी पलटन ने अपने कप्तान असलम इनामदार के शानदार खेल की बदौलत पहले पांच मिनट के खेल में तीन अंकों से खुद को आगे रखा। पलटन ने इसके बाद अगले 10 मिनट के खेल में अपना दबदबा बनाए रखा क्योंकि टीम के पास अभी भी तीन प्वॉइंट की लीड थी और उसका स्कोर 7-4 का था। 12वें मिनट में पुणेरी ने सुपर टैकल करके दो अंक और हासिल कर लिए।

असलम इनामदार की टीम 15वें मिनट तक अपनी बढ़त को दोगुना कर चुकी थी और स्कोर 12-6 से उसके पक्ष में थी। अगले ही मिनट में पुणेरी पलटन ने गुजरात जायंट्स को ऑल आउट करके 10 प्वॉइंट की लीड बना ली और स्कोर को 17-7 तक पहुंचा दिया। असलम के शानदार प्रदर्शन के दम पर पुणेरी की टीम ने इसके बाद पहले हाफ की समाप्ति तक 11 प्वॉइंट की लीड कायम कर ली और स्कोर को 20-9 का कर दिया।

दूसरे हाफ के शुरू होने के बाद पुणेरी पलटन ने 25वें मिनट में गुजरात जायंट्स को एक बार फिर ऑल आउट कर दिया। पुणेरी ने इसके साथ ही अपनी लीड को बढ़ाकर 18 प्वॉइंट कर दिया और स्कोर को 28-10 से अपने पक्ष में रखा। 30वें मिनट तक पुणेरी के पास 31-10 के स्कोर के साथ 20 अंकों की बढ़त हो चुकी थी। पुणेरी के लिए लगभग सभी खिलाड़ी प्वॉइंट लेकर आ रहे थे और इससे टीम काफी मजबूत स्थिति में पहुंच चुकी थी। अंतिम पांच मिनटों के खेल के दौरान गुजरात जायंट्स ने सुपर टैकल के साथ कुछ अंक जरूर अर्जित किए। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। गुजरात की टीम अंतिम मिनटों में 20 प्वॉइंट से पिछड़ चुकी थी। वहीं, पुणेरी ने इस लीड को कायम रखते हुए गुजरात जायंट्स को 37-17 से एकतरफा अंदाज में धो दिया। इस जीत के साथ ही टीम इस सीजन में अंकतालिका में 50 प्वॉइंट के आंकड़े को छूने वाली पहली टीम बन गई है।

रणजी मैच में इंजर्ड हुए प्रसिद्ध कृष्णा

गुजरात के खिलाफ 15वां ओवर पूरा नहीं कर सके; टेस्ट टीम से भी हुए बाहर

मुंबई, 13 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय टीम के प्रमुख तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा रणजी ट्रॉफी में चोटिल हो गए हैं। इस वजह से उन्हें अहमदाबाद में गुजरात के खिलाफ मैच को बीच में छोड़ना पड़ा। साउथ अफ्रीका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज में भारत के लिए टेस्ट डेब्यू करने वाले प्रसिद्ध कृष्णा दौरा खत्म होने के बाद कर्नाटक के लिए रणजी मैच खेल रहे थे।

प्रसिद्ध ने रणजी ट्रॉफी के दूसरे राउंड के पहले दिन 14.5 ओवर गेंदबाजी की। वह 2 विकेट ले चुके थे, तभी उन्हें क्वाड्रिसेप्स इंजरी हो गई और उन्हें बाहर जाना पड़ा। माना जा रहा है कि उन्हें ठीक होने में कम से कम एक महीने का समय लग जाएगी। इसी कारण इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में भी उन्हें जगह नहीं मिली।

इंडिया-ए के सपोर्ट स्टाफ से मदद ले सकते हैं प्रसिद्ध

कर्नाटक टीम का फिजियो स्टाफ इस वक्त प्रसिद्ध कृष्णा की देखरेख कर रहा है। प्रसिद्ध कृष्णा BCCI के कॉन्ट्रैक्टेड प्लेयर हैं और इसी वजह से वह इंडिया-ए के सपोर्ट स्टाफ की भी मदद ले सकते हैं। इंडिया-ए इस वक्त इंग्लैंड लायंस के खिलाफ अहमदाबाद में ही मैच खेल रही है। गुजरात-कर्नाटक का रणजी मैच भी अहमदाबाद के ही दूसरे ग्राउंड पर खेला जा रहा है।

गुजरात ने पहली पारी में बनाए 264 रन

गुजरात ने पहली पारी में बल्लेबाजी करते हुए कर्नाटक के खिलाफ 264 रन बनाए। गुजरात की ओर से सबसे ज्यादा रन क्षितिज पटेल ने बनाए। उन्होंने 161 गेंदों का सामना करते हुए 95 रन बनाए। वहीं उमंग कुमार ने 143 गेंद का सामना कर 72 रन बनाए। गुजरात के कप्तान चिंतन गाजा ने 92 गेंदों में 45 रन बनाए।

वासुकी कौशिक ने लिए चार विकेट

कर्नाटक की ओर से वासुकी कौशिक ने 20 ओवर में 49 रन देकर 4 विकेट लिए। वहीं विजय वैशाक, रोहित कुमार और प्रसिद्ध कृषणा को 2-2 विकेट सफलताएं मिलीं।

टेबल टेनिस क्वालिफायर में शरत और साथियान पेश करेंगे चुनौती

23 जनवरी से शुरू होगा टूर्नामेंट

मापुसा, 13 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय अनुभवी टेबल टेनिस खिलाड़ी अचंत शरत कमल और साथियान ज्ञानशेखरन देश के 39 अन्य टेनिस खिलाड़ियों के साथ आगामी डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर के एकल क्वालिफायर में चुनौती पेश करेंगे। इस टूर्नामेंट का दूसरा सत्र 23 से 28 जनवरी तक यहां पेड्डेम इंडोर स्टेडियम में खेला जाएगा।

भारत की शीर्ष विश्व रैंकिंग वाली खिलाड़ी मनिका बत्रा और हरमीत देसाई सहित देश के नौ खिलाड़ियों को सीधे मुख्य ड्रॉ में प्रवेश मिला है। क्वालिफाइंग दौर में भारत के 32 खिलाड़ियों को जगह मिली है जिससे कुल खिलाड़ियों की संख्या 41 हो गई है जो पिछले साल से एक अधिक है।

शरत, साथियान, अयहिका मुखर्जी, सुतीर्थ मुखर्जी और सानिल शेट्टी जैसे अनुभवी खिलाड़ियों के अलावा क्वालिफायर में मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन पोयमंती बैस्या, पायस जैन, एस फिदेल आर स्नेहित, मुदित दानी, जीत चंद्रा, दीया चितले, यशस्विनी घोरपड़े, अर्चना कामथ, स्वस्तिका घोष और सुहाना सैनी जैसे कुछ अन्य प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ियों के पास खुद को साबित करने का मौका होगा। विश्व चैंपियनशिप 2023 के युगल कांस्य पदक विजेता चो डे-सियोंग, कोरिया के 17 वर्षीय ओह जुनसुंग और हंगेरियन टेबल टेनिस खिलाड़ी बेंस मेजरोस क्वालिफाइंग दौर में खेलने वाले अंतरराष्ट्रीय सितारों में शामिल है। क्वालिफाइंग दौर से आठ एकल और चार युगल जोड़ी मुख्य ड्रॉ में जगह बनाएगी।

पाकिस्तान टीम में मानसिक समस्या

डर और तनाव में शाहीन अफरीदी

खेल डेस्क, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच इन दिनों टी20 सीरीज खेली जा रही है। पाकिस्तान टी20 टीम की कमान शाहीन शाह अफरीदी के हाथों में हैं। कप्तानी में शाहीन के लिए आगाज बेहद खराब रहा है। खेले गए पहले टी20 मैच में न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 46 रन से हराया। कप्तानी डेब्यू में शाहीन को पहले ही मैच में हार का सामना करना पड़ा है। इस हार के बाद एक स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट ने पाकिस्तान टीम की जमकर आलोचना की। जिसका वीडियो अब काफी तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

'मानसिक तनाव में पाक टीम'

मैच के बाद स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट एजाज बखरी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर करके पाकिस्तान टीम की जमकर आलोचना की। वीडियो में एजाज बखरी ने कहा कि मैने लाइव मैच को मैदान पर कवर किया है। मुझे पाकिस्तान टीम में कोई एकता नहीं दिखती है। जैसे ओवर खत्म होने के बाद जब विज्ञापन शुरू होता है तो टीम के कप्तान को कुछ नहीं पता होता कि क्या करना है और ना मैने शाहीन अफरीदी को अपने खिलाड़ियों से बातचीत करते देखा। शाहीन अफरीदी किसी की सलाह नहीं ले रहे बाबर आजम के पास अनुभव है शाहीन को बाबर से बात करनी चाहिए। मैच के दौरान शाहीन अफरीदी थके हुए तनाव में दिख रहे थे। मोहम्मद रिजवान को भी गेंदबाजों से बातचीत करते देखा गया है लेकिन शाहीन को देखकर नहीं लगा कि वो कप्तान है।

पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच ऑकलैंड में खेला गया। इस मैच को न्यूजीलैंड ने 46 रनों से जीतकर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है।

साउथ अफ्रीका ने अंडर-19 वर्ल्डकप से ठीक पहले कप्तान बदला

खेल डेस्क, 13 जनवरी (एजेंसियां)। अंडर-19 वर्ल्ड कप से एक सप्ताह पहले साउथ अफ्रीका बोर्ड ने अंडर-19 टीम के कप्तान डेविड टीगर को कप्तानी से हटा दिया है। टीगर ने फिलिस्तीन के साथ चल रही जंग में इजरायली सैनिकों के समर्थन पर कमेंट करने की वजह से बोर्ड ने उनकी सुरक्षा के लिए यह कदम उठाया। क्रिकेट साउथ अफ्रीका के मुताबिक वर्ल्ड कप में दर्शक टीगर के साथ हिंसा ना करें, इसलिए यह फैसला लिया गया। वह एक खिलाड़ी के रूप में टीम के साथ बने रहेंगे और एक नए कप्तान का नाम समय आने पर बताया जाएगा।

19 साल के डेविड टीगर का जन्म साउथ अफ्रीका के जोहान्सबर्ग शहर में हुआ है। वें यहूदी हैं। अंडर-19 वर्ल्ड कप साउथ अफ्रीका के 5 वेन्यू पर 19 जनवरी से 11 फरवरी के बीच खेला जाएगा, जिसमें कुल 41 मैच होंगे। सीएसए ने कहा, जैसा कि इस तरह के सभी आयोजनों में होता है, बोर्ड को वर्ल्ड कप के संबंध में नियमित सुरक्षा और जोखिम से जुड़े अपडेट मिलते रहे हैं।

17 फरवरी से शुरू होगा पीएसएल: लाहौर-इस्लामाबाद में पहला मुकाबला

कराची, 13 जनवरी (एजेंसियां)। पाकिस्तान सुपर लीग का शेड्यूल घोषित हो चुका है। डिफेंडिंग चैंपियन लाहौर कलदंर और इस्लामाबाद यूनाइटेड के बीच 17 फरवरी को ओपनिंग मैच खेला जाएगा। मुकाबला यूएई की आईएलटी-20 लीग के फाइनल से क्लैश करेगा, जो 17 को ही खेला जाएगा। इस्लामाद के बाद कप्तान शाहीन शाह अफरीदी हैं, जो आईएलटी-20 में डेजर्ट वाइपर्स का भी हिस्सा हैं। पीएसएल का फाइनल 18 मार्च 2024 को खेला जाएगा।

पाकिस्तान के 5 प्लेयर्स आईएलटी-20 लीग का हिस्सा हैं। पीएलएल के कारण उनका यूएई में फाइनल स्टेज के मैच खेलना मुश्किल लग रहा है। आईएलटी-20 खेलने वाले पाकिस्तान प्लेयर्स में शाहीन, शादाब खान, आजम खान और मोहम्मद आमिर डेजर्ट वाइपर्स टीम का हिस्सा हैं। जबकि इमाद वसीम को इसी साल अबुधाबी नाइट राइडर्स ने स्क्वॉड में शामिल किया।

पाकिस्तानी प्लेयर्स के अलावा कई विदेशी प्लेयर्स भी दोनों लीग का हिस्सा हैं। ऐसे में उनके भी आईएलटी-20 के फाइनल स्टेज में खेलने पर संशय है। खिलाड़ी अगर PSL का शुरुआती स्टेज खेलेंगे तो आईएलटी-20 का फाइनल मिस करेंगे। अगर वह यूएई में खेलेंगे तो पीएसएल का शुरुआती स्टेज नहीं खेल पाएंगे। क्रिकेट बोर्ड ने पीएसएल का शेड्यूल घोषित किया। 17 फरवरी से शुरू होने वाला टूर्नामेंट 18 मार्च तक चलेगा। मार्च के ही आखिरी सप्ताह में आईपीएल शुरू होने की भी संभावनाएं हैं। पीएसएल का नॉकआउट स्टेज कराची में खेला जाएगा, जो 2020 के बाद पहली बार ही होगा। कराची में कुल 11 मुकाबले खेले जाएंगे। जबकि लाहौर और रावलपिंडी में 9-9 और मुल्तान में 5 मैच खेले जाएंगे। क्वेटा और पेशावर में इस बार कोई मुकाबले नहीं होंगे। पीएसएल इस बार 9वीं बार आयोजित किया जा रहा है। लाहौर कलंदर पिछले 2 बार की चैंपियन है। टीम ने पिछले सीजन मुल्तान सुल्तांस को फाइनल में एक रन से हराकर खिताब जीता था। इस्लामाबाद ने 2016 और 2018 में पीएसएल की ट्रॉफी अपने नाम की थी।

नए औद्योगिक गलियारे को मंजूरी के लिए सीएम ने केंद्र से किया आग्रह

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने केंद्रीय उद्योग और वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल से मिर्यालगुडा के माध्यम से हैदराबाद को विजयवाड़ा से जोड़ने वाले एक नए औद्योगिक गलियारे" की स्थापना के लिए मंजूरी देने का अनुरोध किया है।

मुख्यमंत्री ने प्रस्तावित हैदराबाद-नागपुर औद्योगिक गलियारे के लिए अंतिम मंजूरी के महत्व पर जोर दिया, केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदन पर तेलंगाना राज्य के लिए 2,300 करोड़ रुपये के पर्याप्त लाभ का अनुमान लगाया। शनिवार को नई दिल्ली में हुई बैठक में रेवंत रेड्डी ने उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क के साथ केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल के सामने औद्योगिक विकास के विभिन्न प्रस्ताव पेश किए।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री से हैदराबाद और वारंगल के बीच एक फार्मा सिटी स्थापित करने की पिछली योजना पर पुनर्विचार करने और इसके बजाय केंद्र को प्रस्तुत किए जाने वाले फार्मा सिटी के आगामी प्रस्ताव का समर्थन करने का आग्रह किया।

रेवंत रेड्डी ने आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद राष्ट्रीय डिजाइन केंद्र (एनआईडी) को हैदराबाद से विजयवाड़ा में स्थानांतरित करने की ओर केंद्रीय मंत्री का ध्यान आकर्षित किया। तेलंगाना के लिए एनआईडी को मंजूरी देने का आग्रह करते हुए, मुख्यमंत्री ने अविभाजित आंध्र प्रदेश में नेल्लोर जिले के लिए पहले से ही नामित मेगा लेदर पार्क को तेलंगाना में स्थानांतरित करने की भी मंजूरी मांगी, जहां करीमनगर और जनगांव जिलों में आवश्यक भूमि का अधिग्रहण किया गया है। इसके अतिरिक्त, मुख्यमंत्री ने गोयल से पीएम मित्र योजना के तहत वारंगल में मेगा टेक्सटाइल पार्क को ग्रीनफील्ड का दर्जा देने की अपील की। रेवंत रेड्डी ने त्वरित औद्योगिक विकास की संभावना पर जोर दिया, यह देखते हुए कि ब्राउनफील्ड से ग्रीनफील्ड में रूपांतरण से अतिरिक्त 300 करोड़ रुपये की धनराशि आकर्षित होगी। बुलेटप्रूफ जैकेट, कन्वेयर बेल्ट और एयरबैग जैसे तकनीकी कपड़ा से संबंधित उद्योग स्थापित करने के लिए राज्य की तत्परता पर प्रकाश डालते हुए, रेवंत रेड्डी ने पीयूष गोयल से तकनीकी कपड़ा / परीक्षण केंद्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र प्रदान करने का आग्रह किया। इसके अलावा, उन्होंने तेलंगाना को एक राष्ट्रीय हथकरघा प्रौद्योगिकी केंद्र (आईआईएचटी) आवंटित करने का अनुरोध किया, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि इसका बुनकरों को आधुनिक तकनीक में प्रशिक्षण देने और उनकी आय के स्तर को बढ़ाने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, खासकर राज्य में पहले से ही स्थापित सात हथकरघा क्लस्टरों के साथ। बैठक में केंद्रीय उद्योग विभाग के संयुक्त सचिव बालाजी, केंद्रीय कपड़ा विभाग के अतिरिक्त सचिव रोहित कंसल, राज्य कपड़ा और हथकरघा विभाग के निदेशक अलुगु वार्शिनी, टीएसआईआईसी के सीईओ मधुसूदन, दिल्ली तेलंगाना भवन के ओएसडी संजय जाजू, रेजिडेंट कमिश्नर गौरव उप्पल और अन्य ने भी भाग लिया।

सीएम ने संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं दी

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने सभी प्रदेशवासियों को मकर संक्रांति की बधाई दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि घर में पुरानी कैद का अंधेरा दूर करने वाली नई रोशनी जगमग होगी। उन्होंने कहा कि सूर्य की नई यात्रा से नये परिवर्तन का सूत्रपात हो और पूरे प्रदेश में कल्याण के साथ-साथ विकास की रोशनी जगे। भोगी, जो आशीर्वाद लाती है संक्रांति, जो नई रोशनी लाती है कनुमा त्यौहार हर कोई खुशी से मनाना चाहता है। उन्होंने कहा कि लोगों को तेलंगाना में शुरू हुए सार्वजनिक शासन के तहत आजादी के लाभ के साथ खुशी से त्योहार मनाना चाहिए। सीएम ने आश्वासन दिया कि उनकी सरकार सभी लोगों के कल्याण और प्रगति के पथ के लिए प्रतिबद्ध होगी।

राजभवन में पारंपरिक तरीके से मनाई गई संक्रांति

राज्यपाल ने पोंगल पकवान तैयार किया

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। राज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन ने राजभवन परिवार के सदस्यों के साथ शनिवार को राजभवन में संक्रांति उत्सव मनाया। राज्यपाल ने स्वयं पारंपरिक पोंगल पकवान तैयार किया और राज्य और राष्ट्र के सभी लोगों के स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की। 'पोंगल' तैयार होने के बाद, राज्यपाल ने परंपरा के अनुसार भगवान सूर्य को पकवान चढ़ाया। पारंपरिक पोंगल व्यंजन, जिसका अर्थ है 'फैलना' या 'उबलना', प्रचुरता और समृद्धि का प्रतीक है और सभी को स्वस्थ रखने के लिए धन्यवाद के रूप में सूर्य को अर्पित किया जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि यह हमारी परंपरा है कि हम इस पोंगल त्योहार के दौरान अपनी प्रचुरता, स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करें, जो मूल रूप से प्रकृति से जुड़ा हुआ है।

डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन ने भी किसानों को उनकी कड़ी मेहनत से हुई बंपर फसल के लिए धन्यवाद दिया। समारोह के हिस्से के रूप में, राज्यपाल ने मीडिया कर्मियों को मिठाइयाँ भेंट करके त्योहार की शुभकामनाएँ दीं। राज्यपाल के सलाहकार और राजभवन के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह आयोजित

दीपक को यंग अचीवर के रूप में सम्मानित किया गया

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। चार व्यक्तिगत गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड हासिल करने की उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए, पेरेनियल अकादमी के दीपक को बोल्लाराम के राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह में यंग अचीवर के रूप में सम्मानित किया गया।

स्वामी विवेकानन्द की जयंती के अवसर पर 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है। इस कार्यक्रम में चार व्यक्तिगत गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड हासिल करने की उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि पर प्रकाश डाला गया, साथ ही पिछले 24 महीनों में बारहमासी अकादमी के माध्यम से 200 से अधिक पदक विजेताओं को प्रशिक्षण देने के प्रति उनके समर्पण पर भी प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम में छात्रों से बात करते हुए, दीपक ने अपनी प्रेरक यात्रा साझा की, जिसका उद्देश्य युवाओं के भीतर जुनून और दृढ़ संकल्प को प्रज्वलित करना था। अपने संबोधन में हैदराबाद के जिला कलेक्टर अनुदीप दुरीसेट्टी ने दीपक के प्रयासों की सराहना की।

सुरक्षा में सशस्त्र बलों की भूमिका महत्वपूर्ण : श्रीनिवास रेड्डी

सीपी ने सिटी सशस्त्र बल प्रभाग और प्रशिक्षण विंग का दौरा किया

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। हैदराबाद शहर के पुलिस आयुक्त कोत्ताकोटा श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि राजधानी शहर की सुरक्षा में हैदराबाद शहर के सशस्त्र बलों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आज सुबह सिटी सशस्त्र बल प्रभाग और प्रशिक्षण विंग का दौरा किया। सुबह में, विभिन्न विभागों के पुलिस बलों के साथ पेटलाबुर्ज के मैदान में एक औपचारिक परेड आयोजित की गई। हैदराबाद के पुलिस कमिश्नर ने परेड का निरीक्षण किया और उनकी सराहना की। वी. सत्यनारायण आईपीएस ज्वाइंट सीपी कार मुख्यालय, मुख्यालय के अधिकारियों के साथ, सीपीएल अंबरपेट, सीएसडब्ल्यू, एचजीओ, सीटीसी और माउंटेड पुलिस ने भाग लिया। कर्मचारियों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए आयुक्त ने कहा कि हैदराबाद शहर सशस्त्र बल प्रणाली, जिसे 1932 में अफगान शहर पुलिस सशस्त्र प्रणाली के रूप में शुरू किया गया था, आज शहर में एक शक्तिशाली पुलिस बल में तब्दील हो गई है। वीआईपी सुरक्षा, मुख्यमंत्री, राज्यपाल गार्ड, विधायक, सांसद, आईएएस, आईपीएस अधिकारियों की सुरक्षा प्रणाली ने अपने मजबूत प्रदर्शन के लिए पीएसओ, क्यूआरटी, सीआरएएफ, सीएसजी, डॉग स्क्वाड, बम स्क्वाड और (4) प्रशिक्षण केंद्र, एचजीओ की सराहना की। इसी प्रकार आयुक्त ने विभिन्न बलों की सराहना करते हुए कुछ सुझाव दिये। सीएसडब्ल्यू को वीआईपी को सुरक्षा में कोई समझौता किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन करने और महत्वपूर्ण उत्सव कार्यक्रमों के दौरान सुरक्षा जांच करने का निर्देश दिया गया है। कार/सीपीएल सौ फीसदी एस्कॉर्ट्स को मुकदमे के लिए अदालतों में कैदियों को ले जाने के लिए निर्देशित किया जाता है। महत्वपूर्ण एस्कॉर्ट ड्यूटी एस1, एस2, एस3 को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए कहा गया है। महिला पुलिसकर्मियों के कल्याण के मामले में उन्हें आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का निर्देश अधिकारियों को दिया गया है। होम गार्ड अधिकारियों, एसपीओएस को भी कल्याण संबंधी मुद्दों को तुरंत हल करने के लिए कहा गया। ड्राइवरों को अपने कर्तव्यों का पालन करते समय नई तकनीक का उपयोग करने की सलाह दी जाती है और इसी तरह वाहनों के मामले में उन्हें बिना किसी परेशानी के रखरखाव चार्ट का पालन करने के लिए कहा जाता है। कार्यक्रम में डीसीपी एडमिन बापू राव, डीसीपी सीएसडब्ल्यू एलेक्स, अतिरिक्त डी.सी.एस.पी एम. माणिक राज, लक्ष्मी नारायण, भास्कर, कृष्णा रेड्डी, विनोद कुमार,विजय कुमार, एम. वेंकट राव, एसीपी चौ. वाई. श्रीनिवास कुमार, विक्रम देव, वाई. मटियाह, टी नरेंद्र राव, बी. याकूब रेड्डी, के.वी.आर. सत्यनारायण, जी. श्रीनु, पी. भास्कर, उदय कृष्ण, प्रसन्ना लक्ष्मी, बी.मुरली ने भाग लिया।

जोगुलाम्बा गदवाल में बस में लगी आग, महिला की जलकर मौत

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। जोगुलम्बा गदवाल जिले में शनिवार तड़के एक निजी बस में आग लगने से एक महिला जिंदा जल गई और चार अन्य यात्री घायल हो गए। यह घटना हैदराबाद-बेंगलुरु राष्ट्रीय राजमार्ग पर एर्रावल्ली चैराहे के पास देर रात करीब 2.30 बजे हुई।

हैदराबाद से चित्तूर जा रही एक निजी ट्रैवल कंपनी की वोल्वो बस पलट गई और उसमें आग लग गई। बस में 40-50 यात्री सवार थे। जबकि लगभग सभी यात्री खिड़कियों के शीशे तोड़कर बाहर कूद गए, एक महिला आग की लपटों में फंस गई और जलकर मर गई। हादसे में चार यात्री भी घायल हो गए। उनमें से तीन को गडवाल के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि चैथे को हैदराबाद स्थानांतरित कर दिया गया।

सूचना मिलने पर दमकल की एक गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। बस पूरी तरह जलकर खाक हो गई. पुलिस को संदेह है कि ड्राइवर को गाड़ी चलाते समय नींद आ गई जिसके कारण यह दुर्घटना हुई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बीआरएस सरकार में मंत्री कठपुतली की तरह थे : मल्लू रवि

हैदराबाद, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मल्लू रवि ने आरोप लगाया कि पिछली बीआरएस सरकार में मंत्री कठपुतली की तरह थे और उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने या कोई निर्णय लेने की कोई स्वतंत्रता नहीं थी। पुरानी पेंशन योजना को बहाल करने की मांग को लेकर शनिवार को यहां सोमाजीगुड़ा स्थित प्रेस क्लब में एक गोलमेज बैठक आयोजित की गई। बैठक में भाग लेते हुए कांग्रेस नेता मल्लू रवि ने आलोचना करते हुए कहा कि कल्वाकुंतला के परिवार के सदस्यों पूर्व मंत्री केटी रामा राव, हरीश राव और एमएलसी कविता शामिल हैं। इन लोगों ने राज्य सरकार के खिलाफ झूठे आरोप लगाकर लोगों को गुमराह किया और आरोप लगाया कि बीआरएस सरकार अपने कार्यकाल के दौरान कई चुनावी वादों को लागू करने में विफल रही है। उन्होंने बीआरएस सरकार पर शुल्क प्रतिपूर्ति और छात्रवृत्ति बकाया का भुगतान करने में विफल रहने के कारण बेरोजगार युवाओं और छात्रों को धोखा देने का भी आरोप लगाया और आरोप लगाया कि वह बेरोजगार युवाओं को वजीफा प्रदान करने में विफल रही जैसा कि बीआरएस अध्यक्ष के चंद्रशेखर राव ने अपने चुनाव घोषणापत्र में वादा किया था। उन्होंने याद दिलाया कि अतीत में, बीआरएस पार्टी ने अपने चुनाव घोषणापत्र में 86 वादे किए थे, लेकिन जब वह सत्ता में थी तो वह एक भी लागू नहीं कर सकी। मल्लू रवि ने कहा कि बीआरएस नेताओं को कांग्रेस को 420 पार्टी कहने का कोई अधिकार नहीं है। कांग्रेस ने चुनाव के दौरान वादा किया था कि अगर पार्टी तेलंगाना में सत्ता में आती है, तो वह अंशदायी पेंशन योजना (सीपीएस) को बदल देगी और कर्मचारियों के साथ न्याय करेगी। बैठक में टीजेएस अध्यक्ष कोदंडराम, इंटरमीडिएट जेएसी अध्यक्ष मधुसूदन रेड्डी और विभिन्न यूनियनों के नेताओं ने भाग लिया।

श्रीवारी मंदिर में सुप्रभात सेवा जनवरी से शुरू होगी

तिरुमला, 13 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता। जैसे ही धनुर्मासम का पवित्र महीना 14 जनवरी को समाप्त होगा, 15 जनवरी से तिरुमाला के श्रीवारी मंदिर में सुप्रभात सेवा फिर से शुरू होगी। पिछले 17 दिसंबर को, धनुर्मासम सुबह 12.34 बजे शुरू हुआ, जिसमें सुप्रभातम को अंडाल श्री गोदा के साथ प्रतिस्थापित किया गया। .तिरुप्पवई पाठ. लेकिन जैसे ही 14 जनवरी को धनुर्मासम समाप्त होगा, 15 जनवरी से हमेशा की तरह श्रीवारी मंदिर में सुप्रभात सेवा फिर से शुरू हो जाएगी। इसी तरह, 16 जनवरी को श्रीवारी मंदिर में गोदापरिणयोत्सवम और दोपहर में पर्वतमंडपम में पर्वता उत्सवम आयोजित किया जाएगा।

संक्रांति भीड़ : एनएच 65 पर 10 किमी तक ट्रैफिक जाम

हैदराबाद, 13 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय राजमार्ग 65 पर चैट्टप्पल से 10 किलोमीटर से अधिक दूरी तक यातायात जाम लग गया क्योंकि हैदराबाद से लोग निजी वाहनों और बसों में संक्रांति त्योहार से पहले आंध्र प्रदेश में अपने मूल स्थानों के लिए रवाना हो गए। जाम में फंसे लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा और घंटों तक वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से ठप रही। कुछ वाहन, जो हैदराबाद से विजयवाड़ा की ओर जा रहे थे, उन्होंने जाम से निकलने के लिए धरमोजीगुडेम में एनएच 65 पर यू-टर्न लिया, लेकिन इस मोड़ के कारण एनएच 65 के दोनों ओर स्थिति बिगड़ गई।

दूसरी ओर, एनएच 65 पर पंथांगी और कोरलापहाड़ के टोल प्लाजा पर बम्पर से बम्पर ट्रैफिक देखा गया क्योंकि जीएमआर अधिकारियों ने ट्रैफिक जाम से बचने के लिए विशेष उपाय किए। टोल संग्रह बूथों के अलावा, टोल प्लाजा के कर्मचारी उन वाहनों से हैंडहेल्ड मशीनों के माध्यम से टोल एकत्र कर रहे थे जिनके पास फास्ट टैग समाधान नहीं था।

वाहनों की भीड़ को देखते हुए, कुल 14 टोल गेटों में से 10 को हैदराबाद की ओर से विजयवाड़ा की ओर जाने वाले वाहनों के लिए आवंटित किया गया था। पुलिस एनएच 65 पर चैट्टप्पल में यातायात जाम को दूर करने का प्रयास कर रही थी।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.